

शोध निर्देशक  
श्री चन्देश्वर लाल कर्ण  
सह प्राध्यापक

## ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन’

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संङ्काय अन्तर्गत

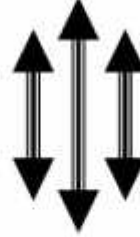
रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस जनकपुर

नेपाली शिक्षण विभागको स्नाकोत्तर तह

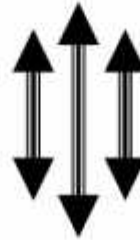
दोस्रो वर्ष दसौं पत्र (५४०-१) को

प्रयोजनको लागि

प्रस्तुत



शोध प्रबन्ध



शोधार्थी

रजनी कर्ण

एम.ए. दोस्रो वर्ष (नियमित)

सि.नं. १४००५१/२०७०

त्रि.वि. र.नं. ३१६९५-९४

रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस

नेपाली शिक्षण विभाग

जनकपुर

२०७३

## शोध निर्देशकको सिफारिसपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण विभाग, स्नातकोत्तर तह, दोस्रो वर्षका छात्रा र रजनी कर्णले दसौं पत्रको प्रयोजनका निमित्त ध्रुवचन्द्र गौतमको 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन शीर्षकको शोधप्रबन्ध मेरो निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो। यस शोधकार्यबाट म पूर्ण सन्तुष्ट छु र यसको मूल्यांकनका लागि नेपाली शिक्षण विभाग अन्तर्गतको अनुसन्धान समिति समक्ष सिफारिस गर्दछु।

मिति : .....

.....

(श्री चन्द्रेश्वर लाल कर्ण)

शोध निर्देशक

रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस

नेपाली शिक्षण विभाग

जनकपुर

# त्रिभुवन विश्वविद्यालय

रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस जनकपुरधाम

नेपाली शिक्षण विभाग

जनकपुर

मिति : .....

## शोध स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र संकाय अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी, क्याम्पस नेपाली शिक्षण विभागका छात्रा रजनी कर्णले स्नातकोत्तर तह, (एम.ए.) दोस्रो वर्षको दसौं पत्र (५४०-१) को प्रयोजनको लागि तयार पार्नु भएको ध्रुवचन्द्र गौतमको 'कट्टेल सरको चोट पटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन शीर्षकको शोधप्रबन्ध सोही प्रयोजनका लागि स्वीकृत गरिएको छ।

## मूल्यांकन समिति

| सि.नं. | नाम                       | पद                              | हस्ताक्षर |
|--------|---------------------------|---------------------------------|-----------|
| १      | श्री चन्द्रेश्वर लाल कर्ण | शोध निर्देशक तथा विभागीय प्रमुख |           |
| २      |                           |                                 |           |
| ३      |                           |                                 |           |
| ४      |                           |                                 |           |

वि.सं. २०७३ ।

ई.सं. । । २०१६

## कृतज्ञताज्ञापन

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध मैले स्नातकोत्तर तहको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि आदरणीय गुरु श्री चन्द्रेश्वर लाल कर्णको प्राज्ञिक निर्देशनमा तयार पारेको हुँ। यो शोधपत्र तयार गर्ने सन्दर्भमा आइपरेका विभिन्न समस्या र चुनौतिहरूसँग जुध्ने प्रेरणा दिदै सही मार्ग निर्देशन गराएर अधि बढ्न उत्प्रेरित गरी आफ्ना कतिपय व्यावहारिक कार्य व्यस्तताहरूलाई थाती राखी कुशल र समुचित दिग्दर्शन गराउनु भएकोमा उहाँप्रति म हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन एवं श्रद्धा भाव व्यक्त गर्दछु।

प्रस्तुत शोध विषयमा शोध कार्य गर्न अवसर जुटाउने रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग तथा विभागीय प्रमुखप्रति म हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु। यसरी नै शोधपत्र पार्ने क्रममा समाग्री दिई सहयोग गर्नु हुने शोधनायक एवं साहित्यकार ध्रुवचन्द्र गौतमप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु। शोधप्रबन्ध तयार गर्ने कार्यमा आफ्नो कार्य व्यस्ततालाई परवाह नगरी अमुल्य समय निकालेर समय समयमा प्रत्यक्ष यथोचित निर्देशन, सुझाव दिई हौसला दिई उत्प्रेरित गर्नु हुने यस क्याम्पसका नेपाली विभागका सम्पूर्ण आदरणीय गुरुहरूप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु।

यस अवसरमा मलाई सानैदेखि हालसम्म पठन-पाठनमा आर्थिक र व्यवहारिक समस्यासँग संघर्ष गर्दै आफ्नो अमुल्य पसीना खर्चेर मेरो अध्ययनलाई यस अवस्थासम्म ल्याई पुर्याउने मेरा परम पूज्य पिता श्री वैद्यनाथ लाल कर्ण, ममतामय माता कल्याणी देवी, त्यस्तै आदरणीय सासु शुभकला देवी प्रति म आफु आजिवन ऋणी रहेको कुरा उल्लेख गर्न चाहन्छु। विभिन्न घरायसी र कार्यालयिक कार्यमा बाधा आउँदा पनि मलाई सदैव प्रेरणा र सहयोग प्रदान गर्नु हुने श्रीमान् रमेश लाल कर्णप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु। यस शोधपत्रको टंकन छिटो छरितो र शुद्ध रूपमा सहयोग गर्ने श्री रमेश कम्प्युटर एजुकेशनका प्रो. रमेश लाल कर्णज्युलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु।

अन्त्यमा प्रस्तुत शोधपत्रको आवश्यक मूल्यांकनका लागि रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग, जनकपुर समक्ष पेश गर्दछु।

**शोधार्थी**

रजनी कर्ण

रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस

नेपाली शिक्षण विभाग

जनकपुर

शैक्षिक सत्र : .....

मिति : .....

# विषय सूची

## पहिलो परिच्छेद

### शोधको परिचय

| क्र.सं. | विवरण                              | पेज नं. |
|---------|------------------------------------|---------|
| १.१     | शोध शीर्षक                         | १       |
| १.२     | शोध प्रयोजन                        | १       |
| १.३     | विषय परिचय                         | १       |
| १.४     | शोध समस्या                         | २       |
| १.५     | शोधका उद्देश्यहरू                  | २       |
| १.६     | पूर्व कार्यको समीक्षा              | ३       |
| १.७     | शोधपत्रको औचित्य, महत्व र उपयोगिता | ५       |
| १.८     | शोधपत्रको क्षेत्र र सीमाङ्कन       | ५       |
| १.९     | शोधविधि र सामग्री सङ्कलन विधि      | ६       |
| १.१०    | शोधपत्रको रूपरेखा                  | ६       |

### दोस्रो परिच्छेद

### ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्ति

|       |   |    |
|-------|---|----|
| २.१   | पृष्ठभूमि                                       | ७  |
| २.२   | ध्रुवचन्द्र गौतमको सङ्क्षिप्त परिचय             | ७  |
| २.२.१ | जन्म  | ७  |
| २.२.२ | परिवार र बाल्यकाल                               | ८  |
| २.२.३ | शिक्षा-दीक्षा                                   | ८  |
| २.२.४ | पेशा  | ९  |
| २.३   | ध्रुवचन्द्र गौतमको व्यक्तित्व                   | ९  |
| २.३.१ | उपन्यासकार व्यक्तित्व                           | ९  |
| २.३.२ | कवि व्यक्तित्व                                  | ११ |
| २.३.३ | गीतकार तथा गायक व्यक्तित्व                      | १२ |
| २.३.४ | नाटककार व्यक्तित्व                              | १२ |
| २.३.५ | कथाकार व्यक्तित्व                               | १३ |
| २.३.६ | पत्रकार व्यक्तित्व                              | १३ |
| २.३.७ | पुरस्कार  | १४ |
| २.४   | ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यास लेखनको पृष्ठभूमि     | १५ |
| २.५   | ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्ति | १६ |
| २.५.१ | पहिलो मोड (२०२४-२०३६)                           | १६ |
| २.५.२ | दोस्रो मोड (२०३७-२०४७)                          | १९ |
| २.५.३ | तेस्रो मोड (२०४८-२०५३)                          | २५ |

|        |   |    |
|--------|---|----|
| २.५.४  | चौथो मोड (२०५४ देखि हालसम्म)              | २८ |
| २.६    | ध्रुवचन्द्र गौतमका औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू | ३५ |
| २.६.१  | विसङ्गतिवादी अस्तित्वादी चिन्तन           | ३५ |
| २.६.२  | आलोचनात्मक यथार्थवाद                      | ३५ |
| २.६.३  | प्रयोगवादी प्रवृत्ति                      | ३६ |
| २.६.४  | प्रकृतवादी प्रवृत्ति                      | ३६ |
| २.६.५  | स्वैरकल्पनात्मक प्रवृत्ति                 | ३७ |
| २.६.६  | भाषा तथा संरचनात्मक प्रवृत्ति             | ३७ |
| २.६.७  | भय, आतङ्क प्रस्तुत गर्ने प्रवृत्ति        | ३८ |
| २.६.८  | मिथकीय प्रयोग                             | ३८ |
| २.६.९  | चेतनप्रवाह शैलीको रोचक प्रयोग             | ३८ |
| २.६.१० | असीत व्यङ्ग्य                             | ३९ |
| २.७    | निष्कर्ष                                  | ४० |

## तेस्रो परिच्छेद

### उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय

|         |                                       |    |
|---------|---------------------------------------|----|
| ३.१     | उपन्यासको सङ्क्षिप्त परिचय            | ४१ |
| ३.२     | उपन्यासको परिभाषा                     | ४४ |
| ३.२.१   | पाश्चात्य विद्वानका दृष्टिमा उपन्यास  | ४४ |
| ३.२.२   | पूर्वीय विद्वानहरूका दृष्टिमा उपन्यास | ४५ |
| ३.२.३   | नेपाली साहित्यकारका दृष्टिमा उपन्यास  | ४५ |
| ३.३     | उपन्यास संरचनाका तत्वहरू              | ४७ |
| ३.३.१   | कथानक                                 | ४७ |
| ३.३.२   | चरित्रचित्रण                          | ४८ |
| ३.३.३   | संवाद                                 | ४९ |
| ३.३.४   | भाषाशैली                              | ४९ |
| ३.३.५   | वातावरण                               | ५१ |
| ३.३.६   | उद्देश्य                              | ५२ |
| ३.३.७   | दृष्टिविन्दु                          | ५२ |
| ३.३.७.१ | आन्तरिक दृष्टिविन्दु                  | ५२ |
| ३.३.७.२ | बाह्य दृष्टिविन्दु                    | ५३ |
| ३.४     | उपन्याससँग अन्य विधाको सम्बन्ध        | ५३ |
| ३.४.१   | उपन्यास र कथा                         | ५३ |
| ३.४.२   | उपन्यास र आत्मकथा                     | ५४ |
| ३.४.३   | उपन्यास र नाटक                        | ५४ |
| ३.४.४   | उपन्यास र महाकाव्य                    | ५५ |
| ३.४.५   | उपन्यास र निबन्ध                      | ५५ |
| ३.५     | निष्कर्ष                              | ५६ |

## चौथो परिच्छेद

### नेपाली उपन्यासको विकासमा 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासको स्थान

|          |   |    |
|----------|---|----|
| ४.१      | नेपाली उपन्यासको विकासक्रम  | ५७ |
| ३.१.१    | नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमिकाल प्राथमिक काल (वि.सं. १८२७ - १९४५)   | ५८ |
| ३.१.२    | माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६ - १९९०)                                 | ५९ |
| ४.१.२.१  | जासुसी तिलस्मी उपन्यास  | ६१ |
| ४.१.२.२  | धार्मिक, पौराणिक र नीतिपरक उपन्यास                                | ६१ |
| ४.१.२.३  | विकृति विरोधी उपन्यास   | ६२ |
| ४.१.३    | नेपाली उपन्यासको आधुनिककाल (वि.सं. १९९१ हालसम्म)                  | ६२ |
| ४.१.३.१  | आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा (वि.सं. १९९१ बाट सुरु)                | ६४ |
| ४.१.३.२  | स्वच्छन्दतावादी धारा (वि.सं. १९९३ बाट सुरु)                       | ६५ |
| ४.१.३.३  | सामाजिक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २००४ बाट सुरु)                    | ६५ |
| ४.१.३.४  | ऐतिकसिक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २००६ बाट सुरु)                    | ६६ |
| ४.१.३.५  | अतियथार्थवादी धारा (वि.सं. २००८ बाट सुरु)                         | ६७ |
| ४.१.३.६  | आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २०११ बाट सुरु)                 | ६७ |
| ४.१.३.७  | प्रकृतवादी धारा (वि.सं. २०१६ बाट सुरु)                            | ६८ |
| ४.१.३.८  | विसङ्गतिवादी धारा   | ६८ |
| ४.१.३.९  | अस्तित्ववादी धारा   | ६९ |
| ४.१.३.१० | समाजवादी यथार्थवादी धारा  | ६९ |
| ४.१.३.११ | प्रयोगवादी धारा   | ७० |
| ४.१.३.१२ | मिथकीय धारा   | ७० |
| ४.३.३    | ध्रुवचन्द्र गौतमद्वारा लिखित 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासको स्थान | ७० |
| ४.३.४    | निष्कर्ष  | ७५ |

## पाँचौं परिच्छेद

### औपन्यासिक तत्वका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण

|         |                                     |     |
|---------|-------------------------------------|-----|
| ५.१     | पृष्ठभूमि                           | ७६  |
| ५.२     | उपन्यासको नामाकरण                   | ७६  |
| ५.३     | उपन्यासको संरचना                    | ७७  |
| ५.४     | कथानक                               | ७९  |
| ५.४.१   | कथानक द्वन्द्व र यसको क्रिया        | १०३ |
| ५.४.२   | कथानक कौतुहलता                      | १०९ |
| ५.४.३   | कथानकका आधारमा 'कट्टेल सरको चोटपटक' | १११ |
| ५.५     | चरित्रचित्रण                        | ११४ |
| ५.५.१   | चरित्रहरूको वर्गीकरण                | ११४ |
| ५.५.१.१ | लिङ्गका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण | ११५ |

|         |   |     |
|---------|---|-----|
| ५.५.१.२ | कार्यका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण         | ११५ |
| ५.५.१.३ | प्रकृतिका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण       | ११६ |
| ५.५.१.४ | स्वाभावका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण       | ११६ |
| ५.५.१.५ | आबद्धताका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण       | ११७ |
| ५.५.२   | प्रमुख चरित्रहरूको चित्रण                   | ११७ |
| ५.५.२.१ | वासुदेव कट्टेल (कट्टेल सर)                  | ११७ |
| ५.५.२.२ | सावित्री कट्टेल (श्रीमती कट्टेली)           | ११८ |
| ५.५.२.३ | सत्याल                                      | ११९ |
| ५.५.२.४ | शर्मा                                       | ११९ |
| ५.५.२.५ | कुमार                                       | १२० |
| ५.५.२.६ | रन्जु                                       | १२१ |
| ५.५.३   | अन्य गौण चरित्रहरू                          | १२१ |
| ५.६     | संवाद                                       | १२४ |
| ५.७     | भाषाशैली                                    | १२६ |
| ५.८     | 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा पर्यावरण     | १२९ |
| ५.९     | जीवनदर्शन वा उद्देश्य                       | १३३ |
| ५.१०    | 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा दृष्टिविन्दु | १३४ |
| ५.११    | निष्कर्ष                                    | १३६ |

### छैठो परिच्छेद

ध्रुवचन्द्र गौतमका औपन्यासिक प्रवृत्तिका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण

|     |                                      |     |
|-----|--------------------------------------|-----|
| ६.१ | पृष्ठभूमि                            | १३७ |
| ६.२ | समसामायिक युगीन परिवेशको चित्रण      | १३७ |
| ६.३ | समाजिक यथार्थवादी जीवनदर्शन          | १३८ |
| ६.४ | विसङ्गतिवादी / अस्तित्वादी जीवनदर्शन | १४० |
| ६.५ | निष्कर्ष                             | १४२ |

### सातौँ परिच्छेद

उपसंहार र निष्कर्ष

|     |          |     |
|-----|----------|-----|
| ७.१ | उपसंहार  | १४४ |
| ७.२ | निष्कर्ष | १४७ |

सन्दर्भग्रन्थसूची

परिशिष्ट -०१



## संक्षेपीकृत शब्द तथा सङ्केत

|                |   |                                 |
|----------------|---|---------------------------------|
| संक्षिप्त रूप  | : | पूर्ण रूप                       |
| अ.प्र.         | : | अप्रकाशित                       |
| ई.सं.          | : | ईस्वी संवत्                     |
| ए.व.           | : | एकवचन                           |
| एम.ए.          | : | मास्टर्स अफ आर्ट                |
| क्र.सं.        | : | क्रम संख्या                     |
| गा.वि.स.       | : | गाउँ विकास समिति                |
| चौ.सं.         | : | चौथो संस्करण                    |
| छै.सं.         | : | छैठौँ संस्करण                   |
| डा.            | : | डाक्टर                          |
| ते.स.          | : | तेस्रो संस्करण                  |
| त्रि.वि.       | : | त्रिभुवन विश्वविद्यालय          |
| त्रै.          | : | त्रैमासिक                       |
| दो.सं.         | : | दोस्रो संस्करण                  |
| ने.रा.प्र.प्र. | : | नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रविष्ठान |
| ने.भा.प्र.प्र. | : | नेपाली भाषा प्रकाशनी समिति      |
| पृ.            | : | पृष्ठ                           |
| प्र.           | : | प्रकाशन                         |
| प्रा.डा.       | : | प्राध्यापक डाक्टर               |
| प्रा.लि.       | : | प्राइवेट लिमिटेड                |
| बी.ए.          | : | ब्याचलर अफ आर्ट्स               |
| वि.सं.         | : | विक्रम संवत्                    |
| सम्पा.         | : | सम्पादन/सम्पादक                 |
| साप्ता.        | : | साप्ताहिक                       |
| सा.प्र.        | : | साझा प्रकाशन                    |
| .....          | : | केही अंश छोडिएको                |

## चिन्ह सूची

|                |   |                 |
|----------------|---|-----------------|
| अल्प विराम     | : | - ( , )         |
| अर्द्ध विराम   | : | - ( ; )         |
| पूर्ण विराम    | : | - ( । )         |
| प्रश्न चिन्ह   | : | - ( ? )         |
| उद्धरण चिन्ह   | : | - ( ' ' , " " ) |
| निर्देशक चिन्ह | : | - ( - )         |
| योजक चिन्ह     | : | - ( - )         |
| निर्देशक चिन्ह | : | - ( :- )        |
| कोष्ठक चिन्ह   | : | - ( )           |
| विलोप चिन्ह    | : | - ( ' )         |
| विसर्ग चिन्ह   | : | - ( : )         |

# पहिलो परिच्छेद

## शोध परिचय

### १.१ शोध शीर्षक :-

प्रस्तुत शोधपत्रको शीर्षक 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन रहेको छ।

### १.२ शोध प्रयोजन :-

प्रस्तुत गरिने शोधकार्य त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र संकाय अन्तर्गत स्नाकोत्तर तह दोस्रो वर्ष दसौं पत्र (५४०-१) को प्रयोजनका लागि तयार गरिएको छ।

### १.३ विषय परिचय :-

प्रस्तुत शोधको विषय 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन हो। यस उपन्यासको लेखक ध्रुवचन्द्र गौतम हुन्। गौतमको जन्म वि.सं. २००० पुस २ गते भारतको रक्सौलमा भएको थियो। उनका बुबाको नाम गोविन्द प्रसाद गौतम तथा आमाको नाम दीपवती गौतम हो। यसै साल उनको परिवार वीरगंज आएका थिए। प्रवेशिका सम्मको शिक्षा वीरगंज स्थित त्रिजुद्ध माध्यमिक विद्यालयबाट पूरा गरी उनले

काठमाडौंको त्रिचन्द्र कालेजबाट स्नातक गरी नेपाली केन्द्रिय विभाग कीर्तिपुरबाट नेपाली विषयमा स्नाकोत्तर तहको शिक्षा पूरा गरेका हुन्।

विद्यालयमा पढ्दा उत्कृष्ट कविता पाठ गरेर राजा महेन्द्रबाट पुरस्कृत गौतम वि. स. २०१४ साल पछि कविता लेखन र गीत गायनबाट चर्चित बन्न पुगेका हुन्। वि. सं. २०२० मा 'तटस्थता असफलता' शीर्षकको कविता र 'एक यात्रा अनुभूति' शीर्षकको कथा लेखेर औपचारिक रूपमा साहित्यमा प्रवेश गरेका गौतम उपन्यास, कथा, कविता नाटक तथा निबन्धजस्ता विधाको सशक्त सर्जक हुन्। वि.सं. २०२४ वैशाखको रूपरेखामा 'अन्यपछि' उपन्यास प्रकाशित गरेर उपन्यास विधामा प्रवेश गरेका गौतम हालसम्म २६ वटा औपन्यासिक कृतिहरू प्रकाशित गरेका हुन्। 'कट्टेल सरको चोट-पटक' गौतमको उपन्यास यात्राको दोस्रो चरणको कृति हो। प्रस्तुत शोधमा यस उपन्यासको विधातात्विक एवं प्रवृत्तिगत आधारमा गरिएको छ।

#### १.४ शोध समस्या :-

'कट्टेल सरको चोट - पटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन गर्दा विभिन्न समस्याहरू देखापरेका छन्। ती समस्याहरूलाई प्रश्नात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ :-

- क) ध्रुवचन्द्र गौतमको साहित्यिक यात्रा के कसरी विकास हुँदै आएको छ र उनको साहित्यिक योगदान तथा नेपाली साहित्यमा उनको के कस्तो स्थान रहेको छ ?
- ख) ऐतिहासिक विकासक्रममा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको के कस्तो स्थान रहेको छ ?
- ग) विधातात्विक आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यास के कस्तो छ ?
- घ) प्रवृत्तिगत आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यास के कस्तो छ ?

#### १.५ शोधका उद्देश्यहरू :-

'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको कुतिगत अध्ययन गर्न मुख्य उद्देश्य रहेको यस शोधका मुख्य-मुख्य उद्देश्यहरू निम्नलिखित रहने छन्:-

- क) साहित्यकार ध्रुवचन्द्र गौतमको साहित्य यात्राको निरूपण गर्दै उनको योगदानको चर्चा गर्नु र नेपाली साहित्यमा उनको स्थान पहिल्याउनु रहेको छ साथै त्यसको मूल्यांकन गर्नु ,
- ख) ऐतिहासिक विकासक्रममा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको स्थान निर्धारण गर्नु ,
- ग) विधातात्विक आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको अध्ययन गर्नु ,
- घ) प्रवृत्तिगत आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको अध्ययन गर्नु ,

#### १.६ पूर्व कार्यको समीक्षा :-

ध्रुवचन्द्र गौतम नेपाली उपन्यास क्षेत्रमा देखापरेका विशिष्ट व्यक्ति हुन्। उनीद्वारा रचना गरिएको 'कट्टेल सरको चोट-पटक' आधुनिक उपन्यासको दोस्रो मोडको (२०३७) पहिलो कृति हो। यस कृतिका बारेमा विद्वानहरूको धारणा फरक-फरक छन्। यस कृति सम्बन्धी भएका पूर्वकार्यको विवरण कालक्रमिक रूपमा संक्षेपमा यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ।

क) डा. शर्मा तारानाथ :- (२०३९:२९३) 'नेपाली साहित्यको इतिहास' नामक पुस्तकमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासमा ध्रुवचन्द्र गौतमको भाषा प्रौढतातिर लम्कँदै गएको र शैली बढी रूचिकर र पढनीय हुँदै गएको स्पष्ट संकेत पाइन्छ। तर उपन्यासमा मन झवाम्मै तान्न सक्ने घटना वा रमाइलो बयान भने गौतमलाई कुन्नि किन हो उति मन पर्दैन। नैराश्य, त्रास र अनिश्चितताको भयावाह कुइरो भित्र पाठकले थालनीदखि पुछरसम्म गुम्सिनुपर्छ।" भनेका छन्।

ख) प्रधान कृष्णचन्द्र सिंह :- (२०४३:४००) 'नेपाली उपन्यास र उपन्यासकारहरू' पुस्तकमा कट्टेल सरको उपन्यास अन्त्यपछि र डापी जस्तो स्वैच्छिक कल्पना र किंवदन्तीमा आधारित नभइकन सामाजिक यथार्थतमा उभेको छ। तिनीहरू जस्तो साँच्ची भनु भन्ने कुनै अनाम अमूर्तादिको भय-आतंकको वातावरणले बेरेर सम्पूर्ण सामाजिक जीवन एउटा देश, राष्ट्रियता र मानवीयताको परिप्रेक्ष्यमा संत्रासयुक्त विदग्धकारी

आतंकपूर्ण र अपहात गर्ने खालको छैन। यसर्थ तिनीहरूको तुलनामा अभयप्राप्त 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यास व्यक्तिकेन्द्री छ र बौद्धिक समस्या स्वतन्त्रताप्रति हुने अनादरपूर्ण व्यवहारको विरोधमा यसको रचना भएको छ।" भनेका छन्।

ग) प्रधान कृष्णचन्द्र सिंह :- (२०४३:४००) ले तटस्थता र निस्सङ्गताको अस्तित्ववादी दर्शनअनुसार क्यौ नहुने विश्वास राखेर पनि यदि समाप्त हुन र शासित-शापित हुन बाध्य छौं भने क्यौ नगरीकन पराजय स्वीकार गर्नुभन्दा के कर्मरत भई आफ्नो भाग्यको निर्माता आफैं हुने अर्को पक्षको दायित्व बोधमा संघर्षशील हुनु बढी उपयोगी छैन र ? अस्तित्ववादी दर्शनमा यही मान्यता ध्रुवचन्द्रको यस उपन्यसामा रहेको छ।" भनी उल्लेख गरेका छन्।

घ) पौड्याल कृष्ण विलास :- (२०६४:२४०) ले 'नेपाली अख्यान र नाटक' भन्ने पुस्तकमा धनी र गरीब बीचको असमानता देखाइ निरर्थकताभित्र पनि अस्तित्व प्राप्तिमा लागि संघर्षरत जीवनलाई उनले देखाएका छन्। निम्न वर्गीय समस्याको प्रस्तुतीकरण गरी अन्याय अत्याचार र शोषणमा पिल्सिएको पात्रको विवश जिन्दगीको अभिव्यक्ति दिने गौतम उपन्यासमा अशिलताको प्रस्तुतीकरणबाट पात्रको मनोगत धारणाको उद्घाटन गर्नु उनको प्रवृत्ति हो।" भनेर उल्लेख गरेका छन्।

ङ) ढुङ्गेल भोजराज :- (२०६६:३१७) 'नेपाली कथा र उपन्यास' भन्ने कृतिमा मानव जीवन विसङ्गतिपूर्ण हुँदा हुँदै पनि त्यसभित्र आफ्नो अस्तित्व कायम गर्न खोज्नु मानवीय स्वाभाव हो। विसंगतिका बीचमा पनि अस्तित्वको खोजी नै अस्तित्ववादीको मूल मान्यता हो। 'कट्टेल सरको चोट-पटक' पनि उनको अस्तित्वादी उपन्यासको उदाहरण हो।" भनेका छन्।

च) डा. न्योपाने नेत्र प्रसाद र डा. शर्मा गैरे नारारायण प्रसाद :- (२०६८:२८४) :- 'नेपाली कथा र उपन्यास' भन्ने कृतिमा वर्तमान सामाजिक, धार्मिक तथा मानवीय मूल्य र मान्यता विखण्डित भएका छन्। नैतिकता हराएको छ, इमान लिलाम भएको छ

र मानिस निर्लज्ज भएर जसरी भएपनि धन-सम्पति कमाउने ऐस आराममा डुब्ने चरम स्वार्थी, भौतिकतावादी, व्यापारिक सभ्यताको विकास हुँदै गइरहेको छ। यस्तो परिस्थितिमा देखापरेका विगतिपूर्ण यथार्थ स्थितिको चित्रण गरेर हरेक किसिमका दानवीय प्रवृत्तिप्रति आलोचना गर्नु उपन्यासकार गौतमको विशेषता हो।” भनेर उल्लेख गरेका छन्।

**छ) गैरे ईश्वरीप्रसाद :-** (२०७१:४४६) ले उपन्यासकार गौतम समाजका चाकडी, चाप्लुसी, भ्रष्टाचार र अनैतिकता जस्ता पक्षको भण्डाफोर गर्छन्। सोझो, सरल र स्वाभिमानी मान्छेका लागि संसार विषाक्त भइसकेको यथार्थ रहस्य पत्ता लगाउँछन्। यसैका उत्कृष्ट नमुना ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यास लिन सकिन्छ।” भनेका छन्।

उपर्युक्त पूर्वकार्यको अध्ययनबाट स्पष्ट हुन्छ कि ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासको समग्र रूपमा गहन र सुक्ष्म अध्ययन हुन सकेको छैन। त्यही अभावको पूर्ति गर्नका लागि यो शोध गरिएको छ।

#### १.७ शोधपत्रको औचित्य, महत्व र उपयोगिता :-

उपन्यासकार ध्रुवचन्द्र गौतमको ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ एउटा अस्तित्ववादी उपन्यास हो। हालसम्म प्रस्तुत उपन्यासको कृतिगत अध्ययन हुन सकेको छैन। यस शोधपत्रमा ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासको कृतिगत अध्ययन गरिने छ। त्यही नै यस शोधपत्रको औचित्य र महत्व हो। त्यसैगरी यस उपन्यासका बारेमा जान्न चाहने शोधार्थी, शिक्षक, विद्यार्थी एवं सर्वसाधारण पाठकका लागि पनि यो उपयोगी रहेको छ। यो पनि यस शोधकार्यको औचित्य र महत्व रहेको छ।

#### १.८ शोधपत्रको क्षेत्र र सीमाङ्कन :-

‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ गौतमको छैटौँ औपन्यासिक कृति हो। ध्रुवचन्द्र गौतम बहुमुखी प्रतिभाका धनी व्यक्तित्व हुन्। उनको विभिन्न साहित्यिक कृति मध्ये ‘कट्टेल

सरको चोट-पटक' उपन्यासको विधातात्विक एवं प्रवृत्तिगत आधारमा अध्ययन गर्नु यस शोधको सीमा रहेको छ।

#### १.९ शोधविधि र सामग्री सङ्कलन विधि :-

प्रस्तुत शोधकार्यका लागि आवश्यक सामग्री प्राथमिक तथा द्वितीय स्रोतबाट सङ्कलन गरिने छ। यसमा सामग्री सङ्कलनका लागि पुस्तकालयीय अध्ययन विधि अवलम्बन गरिएको छ। साथै सम्बद्ध क्षेत्रका विद्वान, प्रध्यापक, समालोचक र संघ-संस्थाबाट पनि आवश्यक सुझाव र सल्लाह लिइएको छ।

यो शोधकार्य 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासमा केन्द्रित रहेको हुँदा समीक्षा शास्त्रले देखाएका औपन्यासिक उपकरणलाई मुख्य आधार बनाई अध्ययन गरिएको छ।

#### १.१० शोधपत्रको रूपरेखा :-

शोधपत्रलाई व्यवस्थित रूप दिनका लागि निम्नलिखि सात परिच्छेदमा विभाजन गरी 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन गरिएको छ।

#### शोधपत्रको रूपरेखा यस प्रकारको छ :-

|                 |    |  |
|-----------------|----|--|
| पहिलो परिच्छेद  | :  | शोधपत्रको परिचय  |
| दोस्रो परिच्छेद | :  | ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्ति  |
| तिस्रो परिच्छेद | :  | उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय  |
| चौथो परिच्छेद   | :  | नेपाली उपन्यासको विकासक्रममा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको स्थान                       |
| पाँचौ परिच्छेद  | :  | औपन्यासिक तत्वका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण                         |
| छैटो परिच्छेद   | :  | ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक प्रवृत्तिका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण |
| सातौँ परिच्छेद  | :- | उपसंहार र निष्कर्ष प्रमुख सन्दर्भ विवरण  |



## दोस्रो परिच्छेद

### ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्ति

#### २.१ पृष्ठभूमि

ध्रुवचन्द्र गौतम बहुमुखी प्रतिभाका धनी व्यक्ति हुन् । उनले विभिन्न विधामा कलम चलाएर नेपाली साहित्यमा योगदान दिएका छन् । उनले नेपाली उपन्यास क्षेत्रमा स्मरणीय गुण लगाएका छन् । यस परिच्छेदमा ध्रुवचन्द्र गौतमको संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत गर्दै उसको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्तिको अध्ययन गरिएको छ ।

#### २.२ ध्रुवचन्द्र गौतमको संक्षिप्त परिचय

##### २.२.१ जन्म

ध्रुवचन्द्र गौतमको जन्म वि.सं. २००० पुस २ गते बिहीबार बेलुका पिता गोविन्दचन्द्र गौतम र माता दीपवती गौतमका काहिँला छोराका रूपमा भएको हो । भारतको रक्सौलमा जन्मेका गौतमको न्वारानको नाम चेतचन्द्र भए पनि सानैमा बोलाउने नामका रूपमा ध्रुवचन्द्र राखियो र अहिले यिनी यसै नामबाट सर्वत्र परिचित हुन पुगेका छन् । सात वर्षको कलिलो उमेरमा आफ्नी जन्म दिने आमाको निधन भएपश्चात् गौतमको बाल्यकालीन केही समयवाधि सामान्य ढङ्गमा गुज्रिएको देखिन्छ । (पौडेल, २०६१:८)

## २.२.२ परिवार र बाल्यकाल

बाल्यकालमा आमाको मृत्यु पीडा सहन बाध्य भएका गौतमले मातृवात्सल्यको अभावको अनुभव बटुले । सम्भवतः त्यही पीडाबोधले यिनको हृदयमा साहित्यिक धारणाको बीजारोपण भएको हुन सक्छ । विद्यालय जीवन घरकै सिधोपिठो खाएरै पूरा गरेका गौतमले बाल्यकालदेखि नै विद्यालयमा हुने हरेक कार्यक्रममा भाग लिने गर्थे । उनमा सानैदेखि साहित्यप्रति अनुराग थियो । आफै कविता लेख्ने, वाचन गर्ने, नाटक लेख्ने, अभिनय गर्ने र विविध साहित्यिक समारोहमा आफ्नो उपस्थिति जनाउने गौतमको विद्यालयकालिन स्वभाव थियो । विभिन्न पेशा व्यवसायसँग सम्बद्ध भई आफ्नो जीवनयात्रालाई अगाडि बढाएका गौतमले दुःखकष्टका साथ आफ्नो अध्ययनलाई अविच्छिन्न अगाडि बढाएका हुन् । उनको कविता/गीतलेखनबाट प्रभावित भएर स्वर्गीय श्री ५ महेन्द्रले छात्रवृत्ति प्रदान गरेको र सो छात्रवृत्तिबाट उनलाई अध्ययनका लागि प्रशस्त ऊर्जा प्राप्त भएको देखिन्छ ।

## २.२.३ शिक्षा-दीक्षा

गौतमको प्रारम्भिक शिक्षा वीरगञ्जकै केशवप्रसादको स्कुलबाट भएको हो । त्यसपछि उनले केही समयसम्म दशरथ मास्टरको स्कुलमा अध्ययन गरी वीरगञ्जकै त्रिजुद्ध हाइस्कुलबाट वि.सं. २०१५ सालमा एस.एल.सी उत्तीर्ण गरि । २०१७ सालमा ठाकुरराम क्याम्पसबाट प्रवीणता प्रमाणपत्र तह, २०२० सालमा त्रिचन्द्र कलेजबाट स्नातक तह, र २०२३ सालमा त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुरबाट नेपाली विषयमा स्नातकोत्तर तह उत्तीर्ण गरेका गौतमले वि.सं. २०३५ मा अडिस्क्रिप्टिभ स्टडि अफ तराई नेपाली विषयमा भारतको पुना विश्वविद्यालयबाट विद्यावारिधि उपाधिसम्म हासिल गरेपछि औपचारिक अध्ययनको भारी विसाएका देखिन्छन् । (पौडेल, २०६१:८) औपचारिक अध्ययन सँगसँगै उनको पूर्वीय तथा पाश्चात्य साहित्य एवं दर्शनको गहन अध्ययन गरी आफ्नो बौद्धिक धरातल फैलाउने प्रयास गरेको देखिन्छ ।

## २.२.४ पेशा

आर्थिक अभावलाई टार्दै जीवनयापन गर्ने क्रममा गौतम २०१६ सालमै संसदको क्यान्टिनमा जगिरे भएका देखिन्छन् । उनको पेशागत जीवनको प्रारम्भ यसै जागिरबाट सुरु भई विभिन्न संघसस्था, व्यवसाय, साहित्यिक प्रतिष्ठान, शैक्षिक संस्था आदि थुप्रै क्षेत्रसँग संलग्नता रहेको देखिन्छ । यसै क्रममा उनले स्वदेश तथा विदेशका विभिन्न ठाउँको भ्रमण गरेका छन् । विभिन्न सम र विषय परिस्थिति माझबाट गौतमले अन्ततः एउटा साहित्य साधकको रूपमा आफ्नो लेखनीको निकै लामो समयावधि पार गरेर पृथक् स्थान कायम गरेका छन् ।

## २.३ ध्रुवचन्द्र गौतमको व्यक्तित्व

कुनै पनि व्यक्ति भित्रको दैहिक क्षमता एउटा मात्र भए पनि स्वयंभित्र अनेक व्यक्तित्वको समीकृत रूप विद्यमान हुन्छ । ध्रुवचन्द्र त्यस्तै एउटा समीकृत व्यक्तित्वको नाम हो । यहाँ उनका विविध व्यक्तित्वको संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत गरिन्छ ।

### २.३.१ उपन्यासकार व्यक्तित्व

ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यासकार व्यक्तित्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण देखापर्छ । अन्य विधाभन्दा उपन्यास विधामा उनको प्रतिभा बढी फस्टाएको देखिन्छ । कविता गौतमको प्रारम्भिक विधा हो, कथा र नाटक उत्कर्ष हो भने उपन्यासचाहिँ चरमोत्कर्ष विधा हो । नेपाली उपन्यासका फाँटमा वि.सं २०२४ सालमा 'अन्त्यपछि' उपन्यास लिएर देखा परेका गौतम अद्यावधि उसै विधामा समर्पित देखिन्छन् । उपन्यासकार गौतमका हालसम्म निम्नलिखित औपन्यासिक कृति प्रकाशित देखिन्छन् ।

१. अन्त्यपछि (२०२४)
२. बालुवामाथि (२०२८)
३. डापी (२०३३)
४. आकाश विभाजित छ (सहलेखन-२०३५)
५. कट्टेल सरको चोटपटक (२०३७)

६. अलिखित (२०४०)
७. देहमक्त (सहलेखन-२०४०)
८. निमित्त नायक (२०४३)
९. अवतार विघटन (सहलेखन-२०४४)
१०. स्व. हरीदेवीको खोज (२०४५)
११. 'एक सहरमा एक कोठा' (२०४६)
१२. उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य (२०४८)
१३. ज्यागा (सहलेखन-२०५०)
१४. दुविधा (२०५२)
१५. अग्निदत्त + अग्निदत्त (२०५३)
१६. फूलको आतङ्क (२०५५)
१७. बाढी (२०५६)
१८. सहस्राब्दीको अन्तिम प्रेमकथा (२०५७)
१९. मौन (२०५८)
२०. तथाकथित (२०५९)
२१. भीमसेन ४ को खाजी (२०६१)
२२. घुर्मी (२०६२)
२३. जेलिएको (सहलेखन-२०६२)
२४. एक असफल आख्यानको आरम्भ (२०६५)
२५. अप्रिय (२०६७)
२६. सातौं ऋतु (२०६८)

गौतम उपन्यास लेखनको गतिलाई हेर्दा २०२४ सालदेखि प्रारम्भ भएको उपन्यासयात्रा २०३८ सम्म अविच्छिन्न देखिन्छ । उनले भण्डै, दुई दर्जन भन्दा बढी औपन्यासिक कृति दिएर आफूलाई सफल उपन्यासकारका रूपमा स्थापित गर्न सफल भएका छन् ।

### २.३.२ कवि व्यक्तित्व

ध्रुवचन्द्र गौतमको साहित्यिक यात्राको उठान कविताबाट भएको देखिन्छ । 'सरस्वती तिम्रो भक्ति महान्' भन्ने शीर्षकको कविता लेखनका दृष्टिले उनको पहिलो काव्यिक रचना मानिन्छ । हिन्दी भाषामा उनले परिचय कि विरक्ति भन्ने कविता भारतको लखनउबाट प्रकाशित हुने उत्कर्ष नामक पत्रिकामा २०१९ सालमा छपाएको देखिन्छ । (पौडेल, २०६० : १२) प्रारम्भिक प्रयासका रूपमा उल्लिखित कविताहरु देखिए तापनि गौतमको औपचारिक कवितायात्रा भने वि.सं. २०२० सालमा रुपरेखा पत्रिका (वर्ष ३ अङ्क ३) मा प्रकाशित तटस्थता असफलता शीर्षकको कविताबाट भएको देखिन्छ । कविता कोरेर सिर्जनाका क्षेत्रमा लागेका गौतम २०१६ मै कविता गोष्ठीमा प्रथम पुरस्कार प्राप्त गरेपछि कविता लेखनमा उनले अझ दरिलो ऊर्जा प्राप्त गरेको अनुभव गर्दछन् । २०१८ सालतिर दैनिक एउटाका दरले लगातार एक वर्षसम्म कविता लेखेको बुझिन्छ । यी कविताहरुमध्येबाट हयाङ्गारमा झुण्डिएको आकाश कविता सङ्ग्रह तयार पारी प्रकाशनार्थ मदन पुरस्कार गुठीमा २०१९ सालतिरै बुझाएको तर अधावधि त्यो कृति अप्रकाशित नै रहेको देखिन्छ । (बराल र एटम, २०६६ : २६४) गौतमको कविता लेखनको उर्वर अवधि वि.सं. २०१५ देखि २०२० सालसम्मलाई लिन सकिन्छ । वि.सं. २०२० पछिका वर्षमा भने उनका कविता अपवादका रूपमा मात्र देखिन थाले । (सुवेदी, २०५४ : ३) पुस्तककार कृतिका रूपमा उनको कविताग्रन्थ प्राकाशित नभए पनि विभिन्न पत्रपत्रिका तथा समालोचनाहरुमा यिनका फुटकर कविताहरु छापिएका भेटिन्छन् । बाढी नामक उनको उपन्यासमा पनि केही कविताहरु सङ्ग्रहित छन् । तटस्थता असफलता, अन्त्यहीन, २०२१ सालको 'रुपरेखा' (वर्ष ५, अङ्क १) मा, रानीपोखरीको किनारमा अवशेष नगर एक परिचय वर्ष १० अङ्क २ मा, दिन टुक्राहरुमा रत्नश्री वर्ष १० अङ्क ६ मा नववर्ष आदि कविताहरु प्रकाशित देखिन्छन् । जीवनको निस्सारता, विसङ्गति, विकृति आदिलाई उनले आफ्ना कविताको मूल स्वर बनाएको पाइन्छ । उनका कवितामा आर्थिक अभाव त्यसबाट दमित मानवीय इच्छा र आकाङ्क्षा, सहरिया विकृति र विसङ्गति, बेरोजगारी, यान्त्रिक र तनावग्रस्त बन्न पुगेको

मानवीय अस्मिताको खोजी, वैचारिक र मानसिक विद्रोहजस्ता युगीन विषयवस्तुलाई भावमय र मर्मस्पर्शी तुल्याएर प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ । (पौडेल, २०६० : १२) यसप्रकार गौतम साहित्यमा कविका रूपमा उदाए पनि पछिका वर्षमा अन्य विधातर्फ आकृष्ट भएका देखिन्छन् ।

### २.३.३ गीतकार तथा गायक व्यक्तित्व

ध्रुवचन्द्र गौतम नेपाली साहित्य र गायन क्षेत्रमा पनि देखा पर्दछन् । कविताका साथसाथै गीत लेखेर, गीत गाएर एक गीतकार र गायकका रूपमा परिपचत गौतमका लघु आयामका प्रगीतात्मक संरचनायुक्त गीतहरु भेटिन्छन् । मीरा राणा, ज्ञानु राणा जस्ता गायिकासँग युगल गीत गाई रेडियो नेपालबाट चारवटा गीत समेत रेकर्ड गराइसकेका र तीन वटा एल्बम निकाल्न पुगे गीतको रचना गरेका गौतम गायक र गीतकारका रूपमा परिचित देखिन्छन् । (पौडेल, २०६० : २३७) उनका केही गीतहरु बाढी नामक उपन्यासमा पनि सङ्ग्रहित छन् । युगीन परिवेश, विकृति, अभाव, सन्त्रास, मानवीय इच्छा/आकाङ्क्षा प्रेम आदिलाई मुक्त लयमा प्रस्तुत गर्ने कौशल कविता तथा गीतकार गौतममा भेटिन्छ । विचलनयुक्त भाषा, शैलीय विचारका साथै प्रथम पुरुष र तृतीय पुरुष दृष्टिबिन्दुमा रचित उनका फुटकर कविता र गीत प्रगीतात्मक संरचनाका राम्रा उदाहरण बन्न पुगेका छन् । (पौडेल, २०६० : १४) गौतमका गीतहरुमा पाइने विशेषता भनेको प्रेमभावको अभिव्यञ्जना, प्रकृतिको मानवीकरण साथै अनुभूतिजन्य सूक्ष्म विषयको गेयात्मक प्रस्फुटन हो ।

### २.३.४. नाटककार व्यक्तित्व

नेपाली नाट्य क्षेत्रमा पनि ध्रुवचन्द्र गौतम परिचित छन् । २०१८ सालमा 'पिकनिक' नाटक लेखन र मञ्चनबाट नाट्य क्षेत्रमा प्रवेश गरेका गौतमको पहिलो प्रकाशित नाटक त्यो एउटा कुरा (२०३०) हो । उनीद्वारा रचना गरिएका नाटकमा त्यो एउटा कुरा (२०३०), भस्मासुरको नलीहाड (२०३७), समानान्तर (२०३९), द्वन्द्व (२०४०) आदि हुन । उनका श्री कृष्णलीला गीतिनाटक र दुर्गा अवतार नृत्यनाटिका (२०२० तिर) रचना भएको मानिए पनि क्रमशः २०४१ र २०४२ सालमा प्रकाशित उनका नाटकहरुमा नाटक कसरी थाल्ने हो (

२०५२) र कीर्तिमान (२०५३) रहेका छन् भने श्री कृष्णलीला र दुर्गा अवतार बाहेक अन्य नाटकहरू एकत्रित गरी भस्मासुरको नलीहाड र अरु नाटकहरू (२०५३) मा प्रकाशित भएका छन् । (उपाध्याय, २०६० : १६८) गौतमका नाटकले नेपाली समाजमा आएका विसङ्गत धारणा, राजनीतिक र प्रशासनिक विकृतिलाई जिउँदो रूपमा उतारेको पाइन्छ । (सुवेदी, २०५८ : ७)

### २.३.५ कथाकार व्यक्तित्व

ध्रुवचन्द्र गौतम कथाका क्षेत्रमा पनि उत्तिकै प्रख्यात छन् । रुपरेखा पत्रिकामा प्रकाशित एक यात्रानुभूति (२०२०) उनको पहिलो प्रकाशित कथा हो । उनीद्वारा रचना गरिएका कथासङ्ग्रहमा आँध्यारो द्वीपमा (२०३५), गौतमका केही प्रतिनिधि कथाहरू (२०४४), संरक्षक (२०४८), ध्रुवचन्द्र गौतमका एकाउन्न कथा (२०५८), 'साठी वर्षमा हृदयघात तथा कथा दृष्टिकाणे' (२०६०), रहेका छन् । उनका कथाहरूमा यौनमनोविज्ञानका अतिरिक्त विसङ्गति र अस्तित्वचेत घोलिएको पाइन्छ । (सुवेदी, २०५४:४)

### २.३.६ पत्रकार व्यक्तित्व

ध्रुवचन्द्र गौतम नेपाली पत्रकारिताको क्षेत्रमा पनि त्यत्तिकै परिचित नाम हो । विभिन्न पत्रपत्रिकामा लेखहरू छपाउनु एउटा कुरा हो भने पत्रिकाको सम्पूर्ण जिम्मेवारी बहन गरी एक इमान्दार पत्रकार बन्नु बेग्लै तर जटिल कुरा हो । गौतमले साहित्यिक र गैरसाहित्यिक, छापा तथा विद्युतीय पत्रकारिताको रमेत अनुभव संगाली इमान्दारितापूर्वक सफल भूमिका निर्वाह गरेको पनि देखिन्छ । पञ्चायती राजनीतिमा देखिएका विकृति र असन्तुष्टिका भावना व्यक्त गर्ने गौतम साहित्य, संस्कृति, राजनीति र आर्थिक क्षेत्रमा देखिएका विसङ्गतिलाई प्रस्तुत गर्ने क्रममा लेखनमा सक्कली र नक्कली नाममा सामाजिक लेख लिएर देखिएका छन् । (सुवेदी, २०५४ : ४८) वि.सं. २०३८ मा चौराली पत्रिकाका सम्पादक मण्डलका सदस्य, २०३९ सालमा 'कलिलो अखबार' को प्रधान सम्पादक, सोही वर्ष नै गरिमा का संस्थापक सम्पादक र २०४५ मा अध्यक्ष भएका देखिन्छन् । त्यसैगरी प्रज्ञा (२०५१) समकालीन साहित्य (२०५१), कविता (२०५१) र 'सयपत्री' (२०५२) जस्ता पत्रिकाको सम्पादक

मण्डलको सदस्य रही पत्रकारिता क्षेत्रमा सेवा गरेको देखिन्छ । त्यस्तै 'रुपरेखा, साप्ताहिक मञ्च' 'साप्ताहिक जनज्योति' 'साप्ताहिक विमर्श', 'देशान्तर' आदि पत्रिकामा 'पृथ्वी' उपनाम र ध्रुवचन्द्र गौतमकै नामबाट ओजपूर्ण लेखहरू लेखेका गौतम नेपाली पत्रकारिता जगत्का एक क्रियाशील स्रष्टाका रूपमा चिनिन्छन् । (सुवेदी, २०५४ : ८) विद्युतीय सञ्चारका माध्यम रेडियो नेपाल, नेपाल टेलिभिजन जस्ता सञ्चार संस्थामा उनी बढी आवद्ध रहेको पाइन्छ । यसरी पत्रकारिताको क्षेत्रमा पूर्णतः निरन्तरता दिन नसके पनि गौतमले पुऱ्याएको योगदानलाई नकार्न मिल्दैन ।

### २.३.७ पुरस्कार

नेपाली साहित्यका विभिन्न फाँटमा कुशलतापूर्वक कलम चलाउने गौतम आफ्नो साहित्यक यात्राका क्रममा विविध पुरस्कार । सम्मानद्वारा पुरस्कृत र सम्मानित भएका छन् । राम्रो गीत गाएबापत राजा महेन्द्रबाट भा.रु. १०० (२०१८), राजा महेन्द्रद्वारा नै छात्रवृत्ति प्रदान (उच्चशिक्षा अध्ययनका लागि २०१९), 'महेन्द्र विद्याभूषण 'क' श्रेणी' (२०३७), मदन पुरस्कार (२०४०), नोबेल पुरस्कारका लागि पेन नेपालबाट संस्थागत रूपमा प्रथम मनोनयन (२०४५), नारायणी वाङ्मय पुरस्कार (२०४५), गरिमा पुरस्कार (२०५९), मुधपर्क सम्मान (२०५९) साझा पुरस्कार (२०५९), नारी साहित्य प्रष्ठानद्वारा सम्मान (२०६०), आख्यानपुरुष उपाधि (२०६०), भूमिपुत्र सम्मान (२०६०), द्वारा उनी सम्मानित र पुरस्कृत छन् । (लुईटेल, २०६० : ११)

यसरी २०२० सालदेखि नेपाली साहित्यका विभिन्न फाँटमा चम्किएका गौतमको लेखनप्रक्रिया निरन्तर रहेको छ । उपन्यास र कथा विधामा सक्रिय रहेका गौतम वउपन्यास विधामा अद्वितीय नै रहेका छन् । सङ्ख्यात्मक र गुणात्मक दुवै दृष्टिले उनका उपन्यास सफल रहेका छन् । हालसम्म पनि लेखनकार्यमै संलग्न गौतमले अझ स्तरीय कृति जन्माउलान् भन्ने आशा गर्न सकिन्छ ।



## २.४ ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यास लेखनको पृष्ठभूमि :

ध्रुवचन्द्र गौतमले उपन्यासका क्षेत्रमा आफ्नो कलम विशिष्ट रूपमा चलाएर सफलता हासिल गरेका छन् । अस्तित्ववादी र विसङ्गतिवादी चिन्तनका परिप्रेक्ष्यबाट नै उपन्यासलेखन थालनी गरेका गौतमका प्रत्येक कृतिहरू क्रमशः एक पछि अर्काले नयाँनयाँ प्रवृत्ति र सन्देश बोकेर आएका देखिन्छन् । गौतमले राजा महेन्द्रबाट केही छात्रवृत्ति पाएपछि साहित्यप्रति यिनको अनुराग बढेको बुझिन्छ । यिनी सानैमा स्रष्टा व्यक्तिका रूपमा अगाडि हिंडेको पाइन्छ । उनी सात वर्षकै उमेरमा मातृ स्नेहबाट बञ्चित भए । आनन्दका निमित्त केही लेखन गर्ने र सुनाउने रहर पनि यिनको थियो । पञ्चायती राजनीतिमा देखिएका विकृति र असन्तुष्टिका भावना व्यक्त गर्ने गौतम साहित्य, संस्कृति, राजनीति र आर्थिक क्षेत्रमा देखिएका विसङ्गतिलाई प्रस्तुत गर्दछन् । उनी लेखन कार्यमा सककली र नक्कली नाममा समसामयिक लेख लिएर देखिएका छन् । (सुवेदी, २०५४ : ८)

गौतमको आख्यान लेखनलाई प्रभावित गर्ने प्रमुख कारक तत्व उनमा अन्तर्निहित प्रखर सिर्जनात्मक बौद्धिक सञ्चेतना हो । यसले विधागत नवीन विधिको खोज र विकास गरेको छ । गौतमको उपन्यासलेखन अधि बढ्नुमा मेलिक सोच र विशिष्ट प्रयोगप्रति उत्प्रेरित हुनु हो । प्रजातन्त्रको पुनः प्राप्तिपछि समाजका विसङ्गति तथा भ्रष्ट आचरणसम्बन्धी धरातलीय वास्तविकतालाई उजागर गर्न उपन्यासकार उन्मुख देखिन्छन् । गौतम फराकिलो मौलिकताका धनी हुन् । गौतम लेखनमा अग्रसर हुनुमा आर्थिक अभाव, घरायसी साहित्यिक वातावरण, स्वदेशी एवम् विदेशी अग्रज लेखकका रचनाहरूको अध्ययन, मनन हो । राजा महेन्द्रको **लेखिरहनू लेख्न नछोड्नु** भन्ने कथनले पनि उल्लेख्य मात्रामा लेखन कार्यमा सहयोग पुऱ्याएको छ । (गौतम, २०६० : १०) र खासमा यिनीभित्र लुकेर रहेको विशिष्ट सिर्जनशील प्रतिभा नै यिनका लेखनको सर्वप्रमुख कारक रहेको छ । अन्य परिस्थितिहरूले त्यसलाई प्रकटीकरण गर्न उत्प्रेरित गरेको देखिन्छ । (आख्यानपुरूष, २०६० : १०) गौतमले हात हालेजति सबै विधामा कुनै न कुनै प्रकारको प्रयोग पाइने हुँदा नियको

लेखनको सबैभन्दा महत्वपूर्ण केन्द्रीय अभिलक्षण प्रयोगधर्मिता नै रहेको छ । यसरी गौतमले कठिन तथा सहज दुवै स्थितिमा आफ्नो लामो औपन्यासिक यात्रा गरेको देखिन्छ ।

## २.५ ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा र प्रवृत्ति

उपन्यासका क्षेत्रमा आफ्नो विशिष्ट पहिचान कायम राख्न सक्ने उपन्यासकार गौतमको औपन्यासिक यात्रा अद्यावधि चालु छ । अस्तित्वादी र विसङ्गतिवादी चिन्तनका परिप्रेक्ष्यबाट नै उपन्यास लेखन थालनी गरेका गौतमका प्रत्येक कृतिहरू क्रमशः एक पछि अर्कोले नयाँनयाँ प्रवृत्ति र सन्देश बोकेर आएका देखिन्छन् । यिनै औपन्यासिक कृतिका आधारमा गौतमको औपन्यासिक यात्रालाई निम्नानुसार विभाजन गरिएको छ :

१. पहिलो मोड वि.सं. २०२४ देखि २०३६ सम्म
२. दोस्रो मोड वि.सं. २०३७ देखि २०४४ सम्म
३. तेस्रो मोड वि.सं. २०४५ देखि २०५३ सम्म
४. चौथो मोड वि.सं. २०५४ देखि हालसम्म

### २.५.१ पहिलो मोड (२०२४-२०३६)

ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्रा वि.सं. २०२४ सालमा रुपरेखामा प्रकाशित अन्त्यपछि उपन्यासबाट प्रारम्भ भएको देखिन्छ । गौतमले वीरगंजमै छँदा उपन्यास लेख्न थालेको तर त्यतिबेला लेखेका दुईवटा उपन्यास अपूर्ण रहेको गौतमबाट प्राप्त जानकारीका आधारमा थाहा हुन्छ । तीमध्ये एउटाको शीर्षक **चार टुक्रा मुटु (?)** रहेको जानकारी गौतमबाटै प्राप्त भएको छ । यस मोडमा गौतमले तीनवटा उपन्यास लेखेको देखिन्छ । समकालीन उपन्यासहरूमा नौलो सम्भावना सँगालेर ध्रुवचन्द्र गौतम देखा पर्दछन् । विक्रमको यस तेस्रो दशक यताका समकालीन उपन्यासकारहरूमा पूर्ण परिपाटी नपछ्याएर सर्वतोभविन अर्को दिशा अँगाल्ने श्रेष्ठता ध्रुवचन्द्र गौतममा परिलक्षित हुन्छ । (प्रधान, २०६१ : ४०२) नेपाली उपन्यास परम्परामा इन्द्रबहादुर राई र पारिजातले प्रारम्भ गरेको विसङ्गतिवादी अस्तित्वादी प्रवृत्तिलाई ध्रुवचन्द्र गौतमले अधि बढाउने काम गरेका छन् । पहिलो मोडमा गौतमका अन्त्यपछि (२०२४), बालुवामाथि (२०२८) र डापी (२०३३)

उपन्यासहरु पर्दछन् । यी उपन्यासहरुमा मानिसको जीवनका व्यर्थता, अर्थहीनता र विवशताको चित्रण गरिएको पाइन्छ । अन्याय, अत्याचार, अमानवीयता, शोषण, क्रूरता र अप्रजातान्त्रिकता समेतको प्रतिबिम्बित रूप यस मोडका उपन्यासमा देखिन्छ । (पौडेल, २०६० : ४०३) अस्तित्वादी र विसङ्गतिवादी प्रवृत्ति गौतमको स्थायी औपन्यासिक प्रवृत्ति हो । हरेक उपन्यासमा गौतमको अस्तित्वादी विसङ्गतिवादी चेत कुनै न कुनै रूपमा प्रकट भएकै हुन्छ । अस्तित्वविहीन मनुष्यको स्थितिलाई उनीहरुकै सामाजिक आर्थिक वैयक्तिक पृष्ठभूमिमा राखेर मानवीय सङ्कटको रूप दिने प्रयत्न यी उपन्यासमा गरिएको छ । (पौडेल, २०६० : ४०४)

अन्त्यपछि अस्तित्वको मूल्यमा केन्द्रित उपन्यास हो । दोस्रा विश्व युद्धपछिको मानव मस्तिष्कमा देखा परेका मूल्य अस्तित्वादी चिन्तनमा समेटेर प्रस्तुत उपन्यास तयार भएको देखिन्छ । समाजमा व्याप्त अभाव, अस्थिरता, असुरक्षा, अविश्वास, अक्षमता आदिका उत्पीडनबाट शोषण, दमन, अन्याय, अराजकता असद्वृत्ति र दुराचार आदिका आक्रमणबाट विक्षुब्ध बनेका मानव मनोविम्बको उद्घाटन हो अन्त्यपछि । उपन्यास एउटा कल्पित ठठपरिवेश, विस्थापन र निर्वासन अनि आसन्न अवसान भोगेको समाज एवं संज्ञाहीन पात्रहरु चयन गरी सामाजिक यथार्थभित्रको बेथितिको पर्दाफास गर्ने एक सर्वोत्कृष्ट दर्पणका रूपमा रहेको छ । औपन्यासिक संरचनाको हिसाबले पनि यो नितान्त नवीन देखापर्दछ । यसको संरचनामा कुनै प्रकारको परम्परगत अध्ययन वा परिच्छेद विभाजन छैन र कथावस्तुमा पनि कुनै सिलसिलाबद्ध शृङ्खला भेटिँदैन । वर्तमान युग, समय, समाज र मान्छेको व्यथालाई पर्गेलने त्रासदीको यथार्थ रूप यसमा सशक्त रूपबाट आएको छ । (पौडेल, २०६० : ३१) नवीन जीवनदृष्टि र प्रयोगशीलताले गर्दा यस उपन्यासले नेपाली उपन्यास परम्परामा एउटा अध्यायको थालनी गरेको छ । गौतमको विसङ्गति वैयक्तिक भन्दा पनि सामाजिक भएर प्रकटिएको देखिन्छ । त्यसैले यस उपन्यासले प्रस्तुत गरेको विसङ्गत स.सार यही समाज वरिपरिको विसङ्गति हो भन्ने कुरामा पटककै मिथ्या छैन । (गौतम, २०६२ : घ)

अन्त्यपछिको चारवर्ष पछि गौतम बालुवामाथि (२०२८) लिएर देखा पर्दछन् । अन्त्यपछि र बालुवामाथि प्रवृत्तिगत दृष्टिले धेरै निकट देखापर्दछन् । जीवनको निस्सारता वरिपरिको समयमा देखियो । मान्छेहरु पनि त्यस्तै ओढेर हिँडेकोलेहोला, विसङ्गत संसारको एउटा विशाल पिँजडामा अल्झेका देखिन्छन् । यहाँ ध्रुवचन्द्र गौतम निरीह दुनियाँ हेरेर शब्दको थुप्रो पहाड बनाउन पुग्छन् र त्यसमाथि आफ्नो कथा अविष्कार गरी दृष्टिप्रक्षेप गर्दछन्, जसलाई उनी संज्ञा दिएर नाउँ, न्वारान गर्न पुग्छन् बालुवामाथि (गौतम, २०६२ : ३) । पुस्तककार दृष्टिले अपेक्षाकृत ठूलो देखिने यस कृतिलाई पनि अस्तित्वादको दार्शनिक धरातलमै राख्न सकिन्छ । जीवनको अर्थहीनता र निस्सारतालाई केन्द्रविन्दु बनाएर वर्तमान जीवनकै जटिलतालाई यस उपन्यासले केलाउने प्रयास गरेको छ ।

जीवन निरर्थक भए पनि अप्राप्तिलाई प्राप्ति ठान्दै बाँच्नुपर्ने कुरालाई उपन्यासले आत्मसात गरेको छ । (पौडेल, २०६० : ३४) बालुवामाथिको भावगत सम्पूर्णताभित्र परिलक्षित हुने एउटा सत्य अर्थहीनता नै हो । (प्रधान, २०६१ : ४२२) मान्छे आफ्नै क्रियाशीलताबाट सिर्जित रमाइलो रममभ्रमभित्रै न्यास्रो र सन्नाटाबोध गर्न पुग्दछ । यही संसारमा मानिसले उदासीपन र असार्थक जीवन अनुभूति समेट्दा पनि कसैले कसैलाई परिवर्तन गर्न सक्दैन भन्ने निस्सारतको चित्रण यस उपन्यासमा गरिएको पाइन्छ । बालुवामाथि पानी हालेर खोजेजस्तो जीवन पनि कतैबाट हेरे पनि अर्थ भट्टाउन नसकिने यथार्थ यस उपन्यासको मूल प्राप्ति हो ।

यसै मोडमा देखापरेको उनको तेस्रो कृति डापी (२०३३) हो । शीर्षक पनि उल्टो अर्थ दिने एउटा काल्पनिक टोलको नामाकरण गरेर उपन्यासकारले चरम सामाजिक विसङ्गतिको उदाहारण प्रस्तुत गरेका छन् । यस उपन्यासमा स्वैरकल्पनात्मक प्रवृत्ति टड्कारो रूपमा उजागर भएको देखिन्छ ।

यस उपन्यासमा एउटा अनामिक टोलमा अपरिचित भय र अपरिमित पर्यावरण बोलेर आतङ्क घिस्याएर फिँजाइदिने अर्थात् त्रासका शिविरहरु रचिदिने अविनाश स्रोतहरुको प्रस्तुतिबाट उभ्याउने प्रयास भएको छ । (सुवेदी, २०५३ : २५३) अयथार्थबाट यथार्थको

प्रस्तुति नै स्वैरकल्पना हो । गौतमको उपन्याससिर्जना परम्परामा स्वैरकल्पना प्रयोगका दृष्टिले नयाँ मोड आरम्भ गर्ने र अस्तित्वको प्रबलतालाई चरमोत्कर्ष प्रदान गर्ने उपन्यासका रूपमा यस उपन्यासलाई लिन सकिन्छ । यो अर्थहीन संसारमा केही गर्ने एउटा नवीन सोच र प्रवृत्तिको उपन्यास **डापी** हो । संसारको मानवीय पीडाको प्रतीक हो । **डापी** एउटा मान्छे र टोलमात्र नभएर एउटा त्यस्तो देश वा गाउँ हो जहाँ मान्छेले आफ्नो स्वतन्त्रता र अस्तित्व गुमाएर सन्त्रस्त जीवन जिउन बाध्य छन् । यसमा सहराहीन एवं अनाथ पारिएर दुःख भोग्नका लागि जन्मेको मान्छेको अवस्थालाई औँल्याएर नियतवादी विचार पनि व्यक्त गरिएको पाइन्छ । मानिस एक आकस्मिक प्राणी भएकोले उसका क्रियाकलापहरु पनि आकाशे खेती भैं आकस्मिक भएकाले उसका काम, कर्तव्य र आचरणको पनि कुनै टुङ्गो छैन भने विसङ्गतिमूलक अस्तित्वाद 'डापी' मा परिलक्षित देखिन्छ । समाजका विभिन्न क्षेत्रमा व्याप्त विसङ्गति र विकृतिहरुलाई खोतलेर सबैका सामु उदाङ्गो पारी प्रस्तुत गर्ने मुख्य उद्देश्य भएको आधुनिक साहित्यिक अस्त्र श्यामव्यङ्ग्यको प्रयोगको सुरुवात **डापी** उपन्यासबाटै भएको देखिन्छ । (लुईटेल, २०५७ : ८७)

यसरी गौतमको औपन्यासिक यात्राको पहिलो मोड सामाजिक विकृति र विसङ्गतिको उद्घाटन, मान्छेको निस्सार जीवन र अर्थहीनता एवं निराशाको प्रस्तुति, स्वैरकल्पना र श्याम व्यङ्ग्यको माध्यमबाट शाश्वत पक्षमाथिको सिंहावलोकनमा केन्द्रित देखिन्छ । समाजका सामाजिक, आर्थिक, नैतिक विकृतिहरुलाई यस मोडका उपन्यासहरुले प्रतीकात्मक रूपमा व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

### २.५.२ दोस्रो मोड (२०३७-२०४७)

उपन्यासकार ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक यात्राको दोस्रो मोड कट्टेल सरको **चोटपटक** (२०३७) बाट प्रारम्भ हुन्छ । गौतमका पूर्ववर्ती उपन्यासहरु स्वेच्छिक कल्पना र किंवदन्तीमा आधारित रहेको पाइन्छ भने कट्टेल सरको **चोटपटक** सामाजिक यथार्थमा उभिन खोजेको छ । भयग्रस्त एवं त्रसित र सन्त्रासयुक्त परिवेशका अतिरिक्त यस उपन्यासले नयाँ प्रवृत्तिका रूपमा व्यक्तिकेन्द्रित बौद्धिक समस्या र स्वतन्त्रताप्रति हुने अनादरपूर्ण व्यवहारको

विरोधलाई अँगालेको देखिन्छ । एक यथार्थवादी, वस्तुपरक, समसामयिक शैक्षिक समाजतिर सम्बन्ध राखेर यसको केन्द्रीयतामा आधारित जीवनको चित्रण यहाँ छ । (प्रधान, २०६१ : ४१४) एउटा सामान्य मान्छेको असामान्य जीवन भोगाइको चित्र यस उपन्यासमा प्रस्तुत गरिएको छ । शैक्षिक अराजकता, पीडा, देश, काल, परिस्थिति र देशको कुव्यवस्थाको उत्तम चित्रण यस उपन्यासमा गरिएको छ (गौतम, २०६२ : ८) जीवनको आर्तमय सङ्घर्षलाई एउटा सामान्य शिक्षकको असामान्य व्यथाबाट प्रस्तुत गरिएको यो उपन्यासले गौतमको उपन्यासयात्रामा नौलो मोड ल्याउने काम गरेको छ । यस उपन्यासले गौतमलाई अन्तर्मनको गुफाबाट बाहिर ल्याउने प्रयास गरेको छ । परम्पराको रूप लिन पुगेका शास्त्रीय सूत्रहरू, जीवनको छनौटपूर्ण पक्षका प्रतिपादनहरू, चरित्र र घटनाका चर्का तारतम्यहरूलाई विश्लेषण गरी औपन्यासिक तत्व मानिएको परिप्रेक्ष्यमा यस उपन्यासले नवीन शिल्पशैली एवं प्रयोगवादी चेतनाका माध्यमबाट एक पृथक पहिचान स्थापित गरेको देखिन्छ ।

यसै मोडमा गौतमको अर्को औपन्यासिक कृतिका रूपमा **अलिखित** (२०४०) प्रकाशित भएको देखिन्छ । यो उपन्यास सोही वर्षको मदन पुरस्कार समेत प्राप्त गर्न सफल भएको छ । यस उपन्यासमा आइपुग्दा गौतम सामाजिक यथार्थवादबाट प्रकृतवादतर्फ पनि आकृष्ट भइरहेका देखिन्छन् । साथै यस उपन्यासबाट उपन्यासकार प्रत्युपन्यास र अधिउपन्यासको प्रवृत्तितर्फ पनि उन्मुख भइरहेको पाइन्छ । (पौडेल, २०६० : ६३) जीवनलाई हेर्ने त्रिअमयमिक दृष्टिकोण लम्बाइ, चौडाई र गहिराइतिर खनेर मान्छेको कङ्काल सिङ्गै निकाल्ने प्रयत्न पनि यस उपन्यासमा गरिएको छ । (पौडेल, २०६० : ६३) उपन्यासमा समकालीन चेतनाको इमानदार वर्णन छ, जहाँ व्यङ्ग्य, विसङ्गति र सामाजिक अस्तित्ववादी मानवीय प्रश्न पनि तेर्स्याउन खोजिएको छ । काठमाडौंरूपी पिरामिडको चुलीबाट देखिएको एउटा नेपाली गाउँ बरेवाका सन्दर्भमा राजधानी र परको ठाउँको आर्थिक स्थिति, विकास र मानसिक धरातलको अन्तर देखाएर अलिखितका रूपमा व्यङ्ग्यचित्र बनाइएको छ । (पौडेल, २०६० : ६३) पात्रको बहुलतालाई स्वैरकाल्पनिक ढङ्गमा प्रस्तुत गर्नु र यथाथएकै संसारलाई वास्तविकताको कल्पनाजलप लगाई रोचकताबाट सम्प्रेषण गर्ने

प्रयस पनि अलिखितमा गरिएको छ । (गौतम, २०६० : ६) अलिखितले आञ्चलिकतालाई पनि त्यतिकै पछ्याएको छ । सम्पूर्णता नै एउटा लघुकार्य विम्बभित्र अटाएको हुनाले यसभित्र नेपालै अटाएजस्तै पनि लाग्दछ तर कहाँ हो कहाँको एउटा ठ्यक्कै मिलेजस्तो गाउँ तर त्यो नेपाली नक्सामा पर्न छुटेको छ, त्यहाँका मान्छे, जनसङ्ख्याको गणनामा छुटेको छन् । यस्तो हेर्दा त्यो बिरहिनपुर बरेवा नेपालकै तराईको एउटा भागमा पर्छ जस्तो भान हुन्छ । यो आञ्चलिकताको उदाहरण हो । कुनै लिखित नभएका पाशविकता, अकर्मण्यता र विसङ्गतिका विभिन्न पडाहरु तथा तिनले समाजमा ल्याएका जटिल स्थितिहरु सूक्ष्म स्तरमा लिखित दस्तावेज भएर प्रस्तुत उपन्यासमा देखापरेका छन् ।

यसरी प्रस्तुत उपन्यास उपन्यासकारका प्रकृतवादी चेत, स्वैरकल्पना, सामाजिक विसङ्गति, आञ्चलिकता एवं समसामयिक विद्रुपताको चित्राङ्कन जस्ता प्रवृत्ति देखिन्छन् । यस उपन्यासले नेपाली उपन्यास परम्परामा एउटा नवीन सोच र नयाँ अध्यायको थालनी गरेको छ ।

ध्रुवचन्द्र गौतमको **निमित्त नायक** (२०४३) विसङ्गतिवादी उपन्यासको शृङ्खलामा देखापरेको अर्को औपन्यासिक कृति हो । सहरिया जीवनभित्र यस्तो मानवकृति फालिइरहेको छ, जो कसैको निमित्त बनेर आफ्नो अस्तित्व धराशायी भएको दर्दनाक स्थितिलाई टुलुटुलु हेर्न बाध्य छ । यही यथार्थभित्रको विसङ्गति प्रस्तुत उपन्यासमा देखाइएको छ । पञ्चायती व्यवस्थाले जर्जर पारेको मुलुकको प्रतिनिधित्व गर्ने एउटा पुरानो डेरामा बाँधिएको घर र तत्कालीन शासकका प्रतिनिधिहरु यस उपन्यासका पात्रका रूपमा उभ्याएर गौतमले राजनीतिक विकृतिमाथि व्यङ्ग्य पनि प्रहार गरेका छन् । तत्कालीन व्यवस्थाभित्र जस्तो परिस्थिति, वातावरण परिवेश सिर्जना भएको छ त्यसभित्र मानिसहरु कसरी बाँचिरहेका छन् वा हामी नेपाली बाँचिरहेका छौं भन्ने तथ्यलाई प्रस्तुत उपन्यासले रिट्टो नबिराई अभिव्यक्ति दिएको छ । (पौडेल, २०६० : ६७) वर्तमान युगको मान्छे यन्त्रवत् हुँदै गइरहेको तथा मानवमा दया, माया तथा सम्बन्धहरुको क्षय हुँदै गइरहेको र स्वार्थका निमित्त कहीं कसैले नातासमेत टुटाउँदै गइरहेको युगीन पीडालाई उपन्यासले छर्लङ्ग्याएको छ । एक्काइसौं

शाताब्दीको मान्छेले पुजारीको आवरणबाट मूर्त मूल्य अन्वेषण गर्नु, समाजसेवाको आवरणबाट नारी अस्मिता लुट्नु, राजनेताको आवरण ओढेर देशको मर्यादामाथि नै बलात्कार गर्नु, प्रबुद्ध विद्वानको आवरणबाट देशको अनागत समयको जड उद्देश्य गर्नु जस्ता विसङ्गतिलाई प्रस्तुत उपन्यासले उदाङ्ग पारेको देखिन्छ । सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक पक्ष प्रस्तुत उपन्यासले उदाङ्ग पारेको देखिन्छ । (सुवेदी, २०५४ : ६९) सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक एवं नैतिक विसङ्गतिका चरम उदाहरणहरु देखिए पनि उपन्यासको नायक 'विनय' विसङ्गति बोधको स्थितिसम्म पुगिसकेको देखिलैन किनभने उसका सारा नातेदारहरु धन कमाएर गौरवशाली जीवनको अनुभूति गर्न थालिसक्दा ऊ घरलाई दोस्रो जेल सम्भरेर जानु यसको उदाहरण हो । भुठैभुठको जगले निर्माण भएको निमित्त नायकको जीवन विसङ्गतियुक्त त्रासद, पीडायुक्त, मुल्यहीन, कुण्ठित, आदर्शरहित, नैतिकताविहीन, बौद्धिकताशून्य, क्षुद्रहीन प्रवृत्तियुक्त देखिन्छ । कहीं पनि पारिवारिक वात्सल्य मानवीय सम्बन्ध र परोपकार देखिँदैन । निमित्त नायकसम्म आइवुग्दा उपन्यासका गौतम सार्वले भैं स्वतन्त्रतालाई वा अस्तित्वलाई प्राथमिकता दिएर नेपाली जनजीवनको दृश्यभन्दा पनि जीवन व्यक्तिगत, सामाजिक, जातीय, राष्ट्रिय विसङ्गतिलाई देखाउनु कामु भैं सक्रिय देखिन्छन् । (पौडेल, २०६० : ७२) मान्छेका नैतिकता, आदर्शमूल्य, महत्व सबैलाई विसङ्गति र विकृतिले खोक्रो पारिसकेको सन्दर्भलाई एकएक गरी केलाइएको प्रस्तुत उपन्यासलाई नेपाली उपन्यास परम्परामा नवीनतम प्राप्ति मान्न सकिन्छ । गौतमका प्रत्येक कृति पृथक पहिचान बोकेर आएका देखिन्छन् । कुनै न कुनै रूपमा आफ्ना उपन्यासमा नवीनताको स्थापना गर्नु पनि गौतमको प्रवृत्ति हो ।

स्वर्गीय हीरादेवीको खोज (२०४५) गौतमको अर्को औपन्यासिक कृति हो । यस उपन्यासबाट गौतमले विषयवस्तु चयनमा अर्को नवीनता थपेका छन् । त्यो अभिजात्य वर्गको चयन हो । पूर्ववती उपन्यास पूरै आर्थिक रूपमा जर्जर निम्नस्तरीय जीवनशैलीमा चयन गरिएको पाइन्छ भने यस उपन्यासमा एउटा अभिजात्य वर्गको चित्रण भेटिन्छ । सामाजिक विसङ्गतिको चयन त गौतमको स्थायी औपन्यासिक प्रवृत्ति नै हो, जुन प्रवृत्तिबाट



यो उपन्यास पनि अछूतो रहन सकेको छैन । हीरादेवी भन्ने एक मृत आत्माका खोजी भइरहेको प्रसङ्ग यस उपन्यासमा प्रस्तुत गरिएको छ । मान्छेको आफ्नो अस्तित्वको लडाइँमा समाजमा रस्कँदै गइरहेको अभिजात्य वर्गको संस्कार र तिजीहरूको जीवन पद्धतिलाई प्रस्तुत गर्दै यस उपन्यासमा मानवीय अस्तित्वको खोजी गरिएको छ । नारीको अस्मितामाथि मनपरी खेलवाड गर्ने र उत्तरदायित्व दिन नचाहने पुरातन सामन्ती संस्कारको पर्दाफास यस उपन्यासमा गरिएको छ ।

यस उपन्यासमा पनि उही सङ्कटग्रस्त जीवन, उही व्यङ्ग्य, पीडा, घात/प्रतिघात नारी अस्मितामाथिको खेलवाड नै विषयगत परिधि बनेका छन् । भव्य महलको चौतारीबीच मिल्काइएको कुमार आफ्नी आमाको पहिचान गर्न तमिसिएको छ । त्यस घरमा अनिच्छित गर्भबाट जन्मेका थुप्रै अनाथहरूमध्ये कुमार पनि एक हो र उसले नै आफ्नी आमाको खोजी गरिरहेको छ । अरु पनि आफ्नी आका खोज्नेपने परिस्थितिको सिकार बनेको यथार्थता उस उपन्यासमा भेटिन्छ । त्यसैगरी सीमित शक्तिशाली व्यक्तिहरूमा जिम्मेवारी विहीन, अनैतिक एवं रहस्यपूर्ण क्रियाकलापबाट सिङ्गो देशलाई नै अनाथालय, पागलखाना, परिचयविहिन सन्दर्भ बनाइँदै रहेको समसामयिक विषयबाट गौतमले प्रस्तुत उपन्यास सिर्जना गरेको देखिन्छ । (पौडेल, २०६० : ७३) प्रत्येकजसो विहान नवजात शिशु फ्याँकिदै गन्धयुक्त नाली एवं सट्टे मानिसलाई पागल घोषित गरेर बलजफती कैद गर्ने घरको भय, त्रास तथा क्रूरताका बीचमा बाँचिरहेको कुमारले भोगेको पीडा र स्वतन्त्रताका लागि सङ्घर्षरत उसको अहमलाई चित्रित गरेको छ । (पौडेल, २०६० : ७६) यस उपन्यासमा पनि उपन्यासकार यथार्थको धरातलमा टेकेर यथार्थको चित्रण गर्ने स्वैरकल्पना शैलीमा अछूतो रहन सकेका छैनन् । कठिन तर विकल्पका बीच स्वतन्त्रताको चुनाव, जड्वत मानवीय नाता सम्बन्ध, आतङ्कित मनस्थिति, यान्त्रिकतामा फस्दो युगीन परिवेश आदिका दृष्टिबाट स्वर्गीय हीरादेवीको खोज उपन्यास समकालीन उगबोध गराउने एउटा छुट्टै विशेषत बोकैको उपन्यास हो ।

दोस्रो मोडको बिट मार्ने कृतिका रुपमा गौतमको 'एक सहरमा एक कोठा' (२०४६) लाई लिन सकिन्छ । विसङ्गतिवादी, अस्तित्ववादी एवं प्रयोगवादी आख्यानकारको आठौँ कृतिका रुपमा आइपुग्दा चिन्तन र शैली तथा शिल्पमा प्रौढता एवं उच्चताको शिखर टेकिसकेको आभास हुन्छ । मध्यमवर्गीय समाजले भोग्नुपरेका तीता र अप्ठ्यारा यथार्थहरु नै यस उपन्यासको विषयवस्तु बनेको देखिन्छ । मानवीय संवेदनाले ओतप्रोत भएको र तत्कालीन समयको विसङ्गतिलाई पराकाष्ठामा पुऱ्याएर चित्रण गर्ने 'कट्टेल सरको चोटपटक' २०४६ सालको चित्रित बिम्ब हो । (गौतम, २०६०, भ्रु)

राजधानीमा सामान्य मान्छे, सामान्य कर्मचारी र सामान्य गार्हस्थ जीवनभोक्ता बनेर रहँदा कस्तो त्रासदीको सामना गर्नुपर्छ, त्यसको ज्वलन्त चित्रण यो कृति हो । (गौतम, २०६० : भ्रु) प्रस्तुत उपन्यासले नेपाली समाजकै यथास्थितिमाथि दृष्टि गरेको छ । गाँस, बास र कपासको निम्ति आफ्नो सम्पूर्ण जीवन मै उत्सर्ग गर्नुपर्ने समकालीन युवापुस्ताको बाध्यतालाई प्रस्तुत उपन्यासले केलाएको देखिन्छ । सिधा र सरल मार्ग लिएर जीवन निर्वाह गर्ने म पात्रले जेल र अस्पतालको सिकार बन्नुपर्ने तर अनैतिक, भ्रष्ट र छेपारे प्रवृत्तिका कर्णप्रसादहरुले नै आकर्षक जीवन निर्वाह गर्ने परिस्थितिले नियतिपूर्ण असमानतालाई उजागर गरेको देखिन्छ । त्यस्तै सावित्रीजस्ता सरल नारीहरु भ्रष्टहरुको नैतिक भ्रष्टचारीको माध्यमबाट आत्महत्याको सिकार बन्नुपरेको दर्दनाक स्थिति पनि प्रस्तुत उपन्यासमा औल्याइएको छ । सिङ्गो सहर नै एउटा कोठा जस्तो भएको र त्यही कोठे जीवनमै रोजीरोटीको लागि टाउको लुकाउनुपर्ने युवापुस्ताको यथार्थपूर्ण चित्रणयस उपन्यासमा गरिएको छ । सहर साँघुरिएजस्तै मानिसका भावना र सोचमा पनि साँघुरोपना देखिएको छ । राजनीतिक अकर्मण्यता र राज्यको अनुत्तरदायी प्रवृत्तिले निर्दोष र निरपराध मान्छेहरुलाई कहिले सुरक्षाका नाममा अस्पतालमा बलजफ्ती राख्नुजस्ता अमानवीय कुकृत्यहरु उपन्यासले औल्याएका देखिन्छ । स्वतन्त्रतापूर्वक बाँच्न पाउने आममान्छेको अधिकारलाई सत्ताको मुख्याइले कसरी तहसनहस परिदिन्छ, भन्ने कुरा 'म' पात्रको गिरफ्तारी देखाइदिएको छ । (पौडेल, २०६० : ८०) । म पात्र त्यस युगको प्रतिनिधित्व गर्ने एउटा बौद्धिक पात्र हो र

उसको भोगाइबाट वर्तमानमा जहाँ पनि इमानदारिता, सरलता, बौद्धिकता जस्ता कुराहरुलाई कि गिरफतार कि रोगी तुल्याएर अस्पताल पुऱ्याइनछ भन्ने यर्थाथलाई उपन्यासले देखाउन खोजेको छ । उपन्यास स्वैरुकल्पनाका माध्यमबाट समाजको विकृतिलाई नङ्ग्याउने काममा सक्षम भएको छ । (सुवेदी : ९०)

यसरी 'एक सहरमा एक कोठा' उपन्यासले सहरी सभ्यता र मान्छेका विवशताबीचको द्वन्द्वलाई समेत औल्याउँदै मान्छे हरेक क्षण कसै न कसैको गोटी बनेर निरीह अवस्थामा जीवनरथ बढाइरहेको तथ्यमाथि जोड दिएको छ ।

ध्रुवचन्द्र गौतमको दोस्रो मोड एक साधारण शिक्षकको व्यथा कट्टेल सरको चोटपटकबाट प्रारम्भ भएर त्यसै धरातलको काम गर्ने तल्लो तहकै कर्मचारीको व्यथायुक्त 'एक सहरमा एक कोठा' उपन्याससम्म लम्बिएको देखिन्छ । यस मोडमा गौतमको अस्तित्ववादी-विसङ्गतिवादी चेत अझ बढी उजागर भएको छ । स्वैरकाल्पनिक, आलोचनात्मक अयथार्थवादी, प्रकृतवादी, प्रयोगवादी जस्ता प्रवृत्ति यस मोडमा देखिएका छन् । सङ्ख्यात्मक र गुणत्मक हिसाबले पनि गौतमको यो मोड अत्यधिक सफल देखिन्छ । यस मोडमा गौतमले आफूलाई एउटा सफल उपन्यासकारका रूपमा स्थापित गर्न सक्षम भएका छन् ।

### २.५.३ तेस्रो मोड (२०४८-२०५३)

नेपाली औपन्यासिक परम्परामा ध्रुवचन्द्र गौतम अत्यन्त नवीन वस्तुविधान, भावविधान एवं शिल्पविधानमा आधारित उपन्यासका साथ उपस्थित भएका देखिन्छन् । ध्रुवचन्द्र गौतमको तेस्रो मोडका उपन्यासहरु उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य (२०४८), दुविधा (२०५२) र अग्निदत्त+अग्निदत्त (२०५३) हुन् । वास्तवमा अग्रगमनतिर उन्मुख हुने पहिलो आधार प्रजातन्त्र नै हो यसको पुर्न प्राप्ति पछि वैचारिकता प्रबल रहेको पृष्ठभूमिमा आयातीत र विखण्डित आदर्शहरुप्रति चिन्ता र घनीभूत बिडम्बनातिर आकर्षित समाजको विसङ्गति तथा भ्रष्ट आचरणसम्बन्धी धरातलीय वास्तविकताप्रति उपन्यासकार गौतम मुखरित भएका देखिन्छन् (पौडेल, २०६० : ६) । गौतमको उपन्यास लेखनको तेस्रो परिवर्तन

गौतमको अर्को उपन्यास दुविधा (२०५२) हो । दुविधा राजनीतिक पृष्ठभूमिमा नभई सामाजिक परिवेशमा सिर्जित एउटा नवीन कृति हो । एउटै वंशका चार पुस्ताको यथार्थ जीवन भोगाईलाई दुविधाले स्पष्ट पारेको छ । प्रस्तुत उपन्यासमा प्रयोग भएको सबैभन्दा सशक्त पक्ष श्यामव्यङ्ग्य र स्वैरकल्पना हो । यसो हेर्दा सबै जना नायक जस्तो लाग्ने तर अर्को तर्फबाट हेर्दा नायक नभएजस्तो लाग्ने गरी बहुनायकयुक्त उपन्यास लेखी नयाँ शिल्पविधानको प्रस्तुतीकरण गरिएको छ ।

यी सबै खाले पात्रहरुका लमाध्यमबाट उपन्यासकारले यथार्थ मानव जीवनका सत्, असत्, सङ्गत, विसङ्गत, दुःख, सुख, अनुकूल, प्रतिकूल जस्ता बहुआयमिक परिस्थितिलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । (पौडेल, २०६० : ६१) यस उपन्यासमा समकालीन त्रासदीका चित्रणमा यथार्थताको भूमिका निर्वाह गरिएको छ । कल्पनाजस्तो लाग्ने कथा र कथाजस्तो लाग्ने जीवनको प्रत्यारोप यो कृति हो । कल्पना र जीवनको यथार्थ सङ्गम यो कृति हो । (पौडेल, २०६० : ६) यस उपन्यासमा एउटै वंशका चार पुस्ताको कथा देखाइएको छ । तर प्रतीकात्मक रूपमा यसलाई सिङ्गो मानव जीवनकै भूत, भविष्य र वर्तमानको कथा मान्न सकिन्छ । एक्काईसौं शताब्दीमा प्रौढ र बृद्धजनहरुले निरर्थक वस्तुसह भई दुरावस्था भोग्नु पर्ने भयावह चित्रण यसमा गरिएको छ । (पौडेल, २०६० : ८८)

तेस्रो मोडको अन्तिम कृति अग्निदत्त+अग्निदत्त (२०५३) हो । यसमा समसामयिक राजनीतिक विकृतिमाथि व्यङ्ग्य प्रहार गर्न मिथकको सहायता लिइएको छ । यो उपन्यास नेपाली उपन्यास परम्परामा अर्को एउटा नवीन प्रवृत्ति र प्रयोगको उदाहरण हो । पहिलो नेपाली उपन्यास **वीरचरित्र** (१९६०) को नायक अग्निदत्तलाई उभ्याएर समसामयिक नेपालीको जीवन्त चित्रण गर्ने काम उपन्यासकारले गरेका छन् र वीरचरित्रको नायक र **अग्निदत्त+अग्निदत्त**को नायक नामले एउटै देखिए पनि परिस्थिति, व्यवहार र आचरणले उनीहरुको बीचमा देखिएको असमानता यस उपन्यासमा प्रष्ट्याउन खोजिएको छ । श्यामव्यङ्ग्य र स्वैरकल्पनाको प्रयोग यस कृतिमा पनि पूर्ण रूपमा गरिएको छ । साथै यो उत्तरआधुनिक प्रवृत्तिलाई अँगालेको प्रयोग यस कृतिमा पनि पूर्ण रूपमा गरिएको छ । साथै

यो उत्तरआधुनिक प्रवृत्तिलाई अंगालेको विनिर्माणवादी कृति हो । यो नितान्त नौलो प्रयोग हो । वास्तावमा नेपाली उपन्यासको क्षेत्रमा यो प्रथम प्रयोग हो । प्रस्तुत उपन्यासमा समसायिक नेपाली जीवनका विविध विकृति र विसङ्गतिहरूको चिरफार त गरिएको छ, नै तर यसका पात्रहरूमा अस्तित्ववादी चेत पनि त्यतिकै प्रबल देखिन्छ । यहाँ एउटा यस्तो काल्पनिक तुरुप राज्यको कल्पना गरिएको छ, जहाँ न्याय, प्रशासन, नीति, तौरतरिका, माया, नातागोता, निष्पक्षता, मानवीयता र संवेदनशीलता जस्ता कुराहरू ठट्टाजस्तो लाग्दछन् । वीर चरित्रको शुरु र पराक्रमी पात्र अग्निदत्त यस उपन्यासमा आइपुग्दा एउटा निरीह र लोतीखरे देखा पर्दछ । यो युगले उसलाई त्यस्तो बन्न बाध्य पारेको हो । यस उपन्यासमा वर्तमान जर्जर नेपालको दुर्दशाको प्रस्तुतिका साथै नागरिकहरूका विवशताको चित्रण स्वभाविक रूपमा गरिएको छ । त्यस्तै राष्ट्र भीखामङ्गा हुँदै गइरहेको, जनताको निरीहपन र बौद्धिकवर्ग दिनानुदिन जर्जर बन्दै गइरहेको परिस्थितिको पनि यसमा चित्रण गरिएको पाइन्छ ।

अग्निदत्त+अग्निदत्त मा अस्तित्ववादी चिन्तनकै अवशेषत उत्ताआधुनिक कालसम्मै छाएको छ । तर पश्चिमी अस्तित्ववाद नभएर नेपालीकृत अस्तित्वादको छाया अग्निदत्तमा टल्कन्छ । (लुइँटेल, २०६० : ९६) ध्रुवचन्द्र गौतमले आफ्नो उपन्यासयात्राको तेस्रो मोडमा तीनवटा छुट्टाछुट्टै प्रयोगका कृतिहरू सिर्जना गरेका छन् । यी तिनै कृतिमा देखिने अस्तित्वादी, विसङ्गतिवादी प्रवृत्तिका अतिरिक्त यस मोडमा आएर स्वैरकल्पना, श्यामव्यङ्ग्य, मिथक र विनिर्माणको सफल प्रयोक्ता बनेका छन् । संरचनाहीन, नायकहीन, नायकहीन उपन्यास र नेपालीपनको विसङ्गतिवादी चिन्तन र नग्न यथार्थको प्रस्तुतिमा पनि गौतम त्यति नै सचेत देखिन्छन् ।

#### २.५.४ चौथो मोड (२०५४ देखि हालसम्म)

उपन्यास लेखनको यस मोडमा ध्रुवचन्द्र गौतम पूर्ववर्ती उपन्यासको तुलनामा नितान्त नवीन शैलीका औपन्यासिक कृति लिएर देखा पर्दछन् । उपन्यासका परम्परागत स्वरूपभन्दा भिन्न प्रयोगका नौ वटा उपन्यासहरूमा फूलको आतङ्क (२०५५), सहस्राब्दीको अन्तिम प्रेमकथा (२०५७), मौन (२०५८), बाढी (२०५६), भीमसेन-४ को खोजी (२०६१),

तथाकथित (२०५९), घुर्मी (२०६२), अप्रिय (२०६७), सातौं ऋतु (२०६८) हुन् । यी औपन्यासिक कृतिहरूमा परम्पराभन्दा भिन्न प्रयोग देखिन्छ । उपन्यास परम्परामा कहीं कतै उल्लेख नभएको नयाँ विधाका रूपमा सूत्र उपन्यास र आफ्नै जीवनलाई औपन्यासिक बान्की दिएर अनुभवन्यास भन्ने नाम दिई गौतमले विधा विनिर्माणको परम्परासमेत स्थापना गर्न खोजेका छन् ।

यस मोडको प्रथम उपन्यास **फूलको आतङ्क** (२०५५) हो । यसै उपन्यासको माध्यमबाट उपन्यासकारले सूत्र उपन्यासको थालनी गरेका छन् । यो सूत्र उपन्यासलेखन पनि उपन्यासकारको प्रयोगवादी प्रयास हो । यो हालसम्म कतै पनि उल्लेख नभएको नयाँ प्रयोग हो । उपन्यासकार स्वयंले नै यसलाई सूत्र उपन्यासको नाम दिएर नेपाली उपन्यासपरम्परामा नौलो विधा निर्माण गरेका हुन् । सूत्र उपन्यास साहित्यको सर्वथा नवीन विधा र रचना प्रकार हो । यस खालको यो नै प्रथम रचना भएकाले सूत्र उपन्यासको परिभाषा, परिचय, पहिचान, नियम व्यवस्था संरचना पनि यो कृति नै हो । यो कृति नै सूत्र उपन्यासको शास्त्र पनि हो र यो कृति नै सूत्र उपन्यासको दृष्टान्त वा उदाहरण पनि हो । अहिलेसम्मलाई सूत्र उपन्यासको अर्थ र इति यो कृति नै हो । (गौतम, २०५५ : ३) **फूलको आतङ्क**मा उपन्यासकारले आख्यान साहित्यको नवीन रूपको अन्वेषण प्रचलित परम्परालाई भत्काएर गरेका हुन् । सूत्र उपन्यास भत्काइपछिको विनिर्मित भएकाले यो प्रचलित उपन्यासको परम्परित ढाप र ढाँचाबाट मुक्त र पृथक हुन्छ । त्यसैले यो परम्परित साहित्यिक दृष्टि वा धारणाका आधारमा व्याख्येय हुँदैन । यसको स्वरूप, संरचना र सौन्दर्य प्रचलित उपन्यासभन्दा नितान्त भिन्न भएकोले यस मोडमा आइपुग्दा गौतमले भिन्नै प्रवृत्तिको थालनी गरेको प्रतीत हुन्छ ।

**फूलको आतङ्क**मा मान्छे भयावह रूपमा अप्राकृतिक अथवा प्रकृतिविहिन बन्दै गएको परिस्थिति छ । मान्छे आफ्नो चरम निर्धनताले गर्दा भौतिकताद्वारा सुरक्षित हुन चाहन्छ । यसले गर्दा वास्तविकता निर्धनजस्तै सम्पन्नको मानसिकतामा पनि त्यही असुरक्षाले असर पारेको छ । यो वसामूहिक अवचेतनाको रूपमा हाम्रो समाजको संरचनाले दिएको

वास्तविकता हो । वास्तविक वा मनौवैज्ञानिक अमूर्त दरिद्रताबाट समाज मुक्त छैन । त्यसैले गर्दा समाज द्रव्यमूलक बनेको छ । मूल्यहरु दरभाउमा रुपान्तरित भइरहेका छन् । सर्वसाधारणको परिणति निरीहताको हुन्छ । ऊ मूल्य जोगाउन साटो दरभाउलाई नै मूल्य मान्न थाल्दछ । किनभने द्रव्यमूलक संस्कृतिले उसलाई उम्कन नसक्ने गरी बेरेको छ । यसको नियन्ता पनि उही हो अर्थात् ऊ जस्तै मानिसहरु छन् । त्यसमा सम्यकता ल्याउने जिम्मेवारी पनि उसैको हुन्छ । यही परिस्थिति उपन्यासको चिन्ता र चिन्तनको विषय हो । ( गौतम, २०५५ : २५) शैली शिल्पको नवीनता साथै वर्तमान मानवले भोगेका दर्दनाक सूत्रात्मक प्रस्तुत उपन्यासमा भेटिन्छ ।

यस मोडमा देखा परेको अर्को कृति बाढी (२०५६) हो । यो उपन्यास पनि उत्तरआधुनिक शैलीको देखिन्छ । यो कृति पनि उपन्यासकार गौतमको विधा विनिर्माण अर्थात् विधा भञ्जनको उदाहरण हो । यसलाई संस्मरणात्मक शैलीमा लिखित आख्यानका रुपमा लिन सकिन्छ । यसलाई उपन्यासकारले अनुभवन्यासको नामाकरण गरेका छन् । यसमा उपन्यासकार नै उपन्यासको मुख्य विषय र उपन्यासकारको प्रारम्भिक जीवनको इतिवृत्तिको रुपमा यस उपन्यासलाई लिन सकिन्छ । आफ्ना जीवन भोगाइको क्रममा गरिएका महत्वपूर्ण क्षणका अनुभवहरुलाई औपन्यासिक संरचना प्रदान गरी यिनले उपन्यास जगत्मै नौलो मोड सिर्जना गरेका छन् । (पौडेल, २०६० : २२) लेखकीय जीवनका स्मृति र संस्मरण भए पनि बाढी अनुभवन्यासले छुट्टै साहित्यिक मान्यता र मूल्य वरण गरेको छ । जीवनीपरक सन्दर्भसँग आउने लेखकीय जीवनका स्मृति र संस्मरणात्मकताका आधारमा लेखिएको उपन्यास भएकोले संस्मरणात्मक उपन्यासका रुपमा नै पनि बाढीलाई मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ । जीवनकै एउटा अंश भए पनि यस उपन्यासमा गौतमका प्रवृत्ति अलि भिन्न देखिन्छन् ।

प्रस्तुत उपन्यास यथार्थको धरातलमा आधारित छ । उपन्यासकारको प्रयोगवादी प्रवृत्तिको पुनरावृत्ति यस कृतिमा भएको छ । उनको यो बाढी अनुभवन्यास हो र यो विधानिर्माण पनि उनले नै गरेका छन् । अनुभवन्यासकारले यो विधा निर्माण नगरिदिएको

भए यसलाई आत्मकथा, संस्मरण, आत्मकथात्मक उपन्यास आदि केही भनिन्थ्यो र यसलाई पनि शास्त्रीय कसीमा घोट्न थालिन्थ्यो । नेपाली साहित्यमा अनुभवन्यासको यही नवीन अनुभव हाम्रा लागि पनि नयाँ अनुभव हो । (पौडेल, २०६० : १०५) ।

बाढी अनुभवन्यासपछि गौतमको अर्को सूत्र उपन्यास सहस्राब्दीको अन्तिम प्रेमकथा ( २०५७) देखा पर्दछ । वर्तमान आर्थिक र राजनीतिक युगमा पूँजीको अगाडि सबै थोक निरीह र विचलित बनेको भेटिन्छ । पूँजीवादको चरमता र त्यससित सम्बन्धित अनेकौँ सराबीले मानवीय जीवन सङ्कटग्रस्त बन्दै गइरहेको यथार्थलाई यस उपन्यासले सङ्केत गरेको देखिन्छ । यसमा प्रयुक्त प्रतीक, विम्ब, गति तथा लय, मिथक, अधिकल्पना र श्यामव्यङ्ग्यले समसामयिक युगको जटिलतामाथि दृष्टिप्रक्षेप गरेको देखिन्छ । पूर्ववर्ती उपन्यासहरूको अपेक्षाकृत यसमा प्रणयात्मक सम्बन्धलाई पृथक रूपमा हेरिएको पाइन्छ । प्रेमलाई त्याज्य ठानी विस्मृत गर्न नमिल्ने त्यसमा अवरोध उत्पन्न गर्दा जटिलता सिर्जित हुने कुरा कृतिमा छ । यस्तै अभिभावकविहिन केटाकेटी कसैका लागि रुचिकर नहुने चिन्तन पनि यहाँ उल्लेख छ । सङ्कटावस्थामा विग्रह र सभिधाकी छोरी एकै चोटी दस वर्षकी जन्मिनुलाई अस्तित्वको पेचिलोपनको रूपमा अभिगृहण गर्न सकिन्छ । असामान्य परिस्थितिमा अद्भूत किन जन्मिन्छ । त्यससम्बन्धी कौतुहल छन् । यस औसरलाई प्रजातन्त्र पुनर्वाहालीपछिको अनुर्वरता र अनुपलब्धिको प्रतीक र विम्बका रूपमा लिन सकिने स्थिति छ । यसरी कृतिगत स्वैरकल्पना, पाठकलाई मनोलोकको सन्धेय क्षितिजमा उफार्न पुग्दछ । (पौडेल, २०६० : १२९) त्यस्तै स्वतन्त्र चेतनाको अवलम्बनद्वारा कुनै पनि कालखण्डका प्रेम वृत्तान्त र सद्भाव व्यवधानरहित नहुने कुरा प्रस्तुत उपन्यासमा व्यक्त गरिएको छ । कृतिको प्रेमकथा अन्तिम नभए पनि वस्तुतः यो समयसीमाको आफ्नै किसिमको प्रथम कथाको शुभारम्भ हो र यसले काल उद्दीपक थालनीलाई दिशा दिएर कतिपय प्रेमाकाङ्क्षीलाई जीवनदृष्टिको उष्णता प्रदान गरिरहेको छ । (पौडेल, २०६०, १३१) बीसौँ शताब्दीको प्रारम्भको विन्दुलाई समय सीमा मानेर यस युगमा देखिएका राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक, यौनिक आदि विकृतिप्रति प्रस्तुत उपन्यासले दरिलो व्यङ्ग्य प्रहार गरेको देखिन्छ ।



गौतमको यस चौथो मोडमा प्रकाशित अर्को औपन्यासिक कृति मौन हो । २०५८ वि.सं. मा छापिएको यस कृतिलाई पनि उपन्यासकारले सूत्र उपन्यासकै नाम दिएका छन् । सूत्रात्मकताको विशेष भूमिका, विषय, शैली, भाषा, प्रस्तुति आदिमा देखिएकाले पनि यो लेखकको नामाकरणसँग नजिक नै देखिन्छ । वर्तमान समाजमा मानिस परिचयविहीन बन्दै गइरहेको यथार्थको यसलाई सटिक चित्रण पनि भन्न सकिन्छ । स्वतन्त्र अप्रत्यक्ष कथनको संवाद, सबै दृष्टिविन्दुको प्रयोग, पात्रको बहुलता, विविधता, सूत्रात्मक कथा एवं वर्तमान समयको यथार्थ प्रस्तुतिले उपन्यासलाई विशिष्ट तुल्याएको छ । गौतमका उत्तर आधुनिक चेतनाको स्पर्श भेटिन्छ । मानिससँग आफ्नो भनेको अङ्गप्रत्यङ्ग, भावावेग, क्रियाकलाप, सोचविचार आदि केही पनि एकलौटी नहुने भाव व्यक्त गरिएको छ । (गौतम, २०५८ : ड) मौन सूत्र उपन्यासमा परिलक्षित समाज, समय, लक्षित स्थान, वर्णित विषयवस्तु, चित्रित चरित्र आदि सबैमा साहित्यशाक्तिअन्तर्गत रहने यौन, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, भाषिक शाक्तिको प्रयोग यत्रतत्र रूपमा भएको पाइन्छ र मौन भित्रका मौन दृश्यहरुको भने विस्फोट चित्रको प्रस्तुति गरेका छन् । (पौडेल, २०६० : १४५) यसैगरी मौन उपन्यासमा समकालीन जीवनका विसङ्गतिलाई सूत्रात्मक रूपमा प्रस्तुत गरी मानवीय अस्तित्वको खोजीगर्ने चेतनासमेत अपेक्षा गरिएको छ । उपन्यासको लेखन सूत्र उपन्यासका लागि थप ऊर्जा हो र यसको सूत्र उपन्यासलेखन परम्परामा नयाँ अध्ययनको थालनी गरेको छ ।

गौतमको परम्परित मान्यता अनुरूपको उपन्यासकृति तथाकथित (२०५९) हो । प्राचीन मिथकहरुलाई उपन्यासका क्रमबद्ध घटनाहरूसँग सुहाउँदो र मेल खाने गरी समावेश गरिएको यस उपन्यासमा पनि समसामयिक राजनीतिका विकृत पक्षहरुलाई नै केलाइएको छ । उपन्यास जनचाहना, जनआकङ्क्षाविपरीत जनअधिकारको दुरुपयोग गरी व्यक्तिगत एवं सीमित पारिवारिक स्वार्थमा नाचिरहने अदूरदर्शी एवं अक्ष शासकहरुको छवि हो । कुर्सीमै लिप्त हुन चाहने, दूरदर्शिता अभावले केवल आफ्नो स्वार्थ सिद्ध गर्ने हरदम प्रयासको तीतो यथार्थ हो । आजको राजनीति समसामयिक विडम्बनाका वास्तविकतालाई अत्यन्तै सफल

प्रस्तुत गर्ने गौतमले यस उपन्यासलाई सशक्त उदाहरण नै बनाएका छन् । (पौडेल, २०६२ : १४६) स्वैरकल्पना र व्यङ्ग्य एवं सामाजिक विसङ्गतिको प्रयोग यस उपन्यासमा पनि प्रबल नै देखिन्छ । उपन्यासका सम्पूर्ण पात्र घटनाक्रम एवं उपन्यासभित्र सिर्जित परिस्थिति सबै प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूपमा तथाकथित छन् । यस अर्थमा उपन्यासले तथाकथित व्यवस्थाको, तथाकथित शासन पद्धतिको एवं चरित्रको माजसिक एवं अन्य क्रियाकलापको तथाकथित बिम्बचित्र स्पष्ट रूपमा उतार्न सफल पनि देखिन्छ । यसरी प्रस्तुत उपन्यासमा उपन्यासकारको प्रवृत्ति पृथक रूपमा प्रस्तुत भएको छ साथै लेखनमा परिपक्वता आएको छ र आन्तरिक संरचनाको प्रयोग, बिम्बपरकता एवं प्रतीकात्मकताजस्ता प्रवृत्ति क्रियाशील देखिन्छन् ।

उपन्यासकार गौतमको पूर्ववर्ती सूत्र उपन्यासलेखन परम्परा फेरि अर्को नवीन उपन्यास **भीमसेन-४ को खोजी** ले कायम गरेको छ । आकारगत हिसाबले पनि सानो तर सूत्रको हिसाबले तीनवटै सूत्र उपन्यासमा सबैभन्दा ठूलो यस उपन्यासले पनि समसामयिक विद्रुपताको चित्रण गरेको छ । समसामयिक विद्रुपतालाई पस्कने महत्वपूर्ण हतियारचाहिँ मिथकलाई नै बनाएको देखिन्छ । महाभारतको एउटा कथामा वर्णित एक चक्का नगरीलाई मिथक बनाई त्यसलाई आधुनिक सन्दर्भमा प्रस्तुत उपन्यासमा व्याख्या गरिएको छ । (गौतम, २०६१: आवरण पृष्ठ) । आफ्ना पूर्ववर्ती दुवै सूत्र उपन्यासभन्दा भिन्न रूपमा यस उपन्यासमा उनले वीरचरित्र, हितोपदेश, पञ्चपन्त्र आदि प्राचीन लेख्य परम्परा र संस्कृतका ग्रन्थहरूमा पाईने टीका पद्धतिलाई आधुनिक सन्दर्भमा प्रयोग गरेर सूत्र उपन्यासलेखनमा नितान्त नौलो प्रविधि भित्रयाएका छन् । (गौतम, २०६१: आवरण पृष्ठ) यस उपन्यासमा पनि गौतमको विसङ्गतिवादी अस्तित्वादी प्रवृत्तिको पुनरावृत्ति भएको देखिन्छ । यहाँ त्यस्तै एउटा विसङ्गत जीवन, मान्छेको एक्लोपन, जीवनका निराशा र त्रासदीको चित्रण गर्ने प्रयास गरिएको छ । संरचना, शिल्पगत नवीनता र प्रयोगशीलताका हिसाबले यो नेपाली साहित्यको उल्लेखनीय कृति हो ।

उपन्यासकार गौतमको अर्को प्रकाशित औपन्यासिक कृति घुर्मी (२०६२) हो। अनुभवन्यासकै नाम दिइएको यस कृतिलाई अधिल्लो अनुभवन्यास बाढी पछिको उत्तर खण्डका रूपमा लिन सकिन्छ। यो पनि काल्पनिक पात्र चेतचन्द्रका नाममा उभिएको वास्तविक पात्र ध्रुवचन्द्र गौतमकै जीवनको उत्तरार्द्ध नै हो। पुनाको डक्टरेटपछिको हालसम्मको लेखकीय जीवनको परिदृश्यलाई आत्मसंस्मरणात्मक रूपमा प्रस्तुत उपन्यासले व्यक्तिको जीवन सँगसँगै ऊसँग जोडिएको परिस्थितिको पनि आँकलन गरेको देखिन्छ। बालककालमा खेल्ने एउटा घुर्मी खेललाई जीवनसँग दाँजेर प्रस्तुत उपन्यासको नामकरण गरिएको छ।

यसरी अन्त्यपछि बाट प्रारम्भ भएको औपन्यासिक यात्रा सातौँ ऋतु (२०६८) सम्म आइपुग्दा गौतमको प्रवृत्ति उत्तर आधुनिकतातर्फ अग्रसर देखिन्छ। विसङ्गतिवादी जीवनदृष्टि नवीन शिल्पबाट प्रस्तुत गरिएको छ। मिथकको सहायताले श्यामव्यङ्ग्य र स्वैरकल्पनाको यथार्थ चित्र कोर्न प्रयास गरेको देखिन्छ। यस मोडमा सूत्र उपन्यासको आधिक्य र नवीन विधाका रूपमा उनले अनुभवन्यासको सिर्जना गरेका छन्। सूत्र उपन्यासका माध्यमबाट वास्तविक र मनोवैज्ञानिक सामाजिक दरिद्रता साथै द्रव्यमूलक समाजको चित्रणमा उपन्यासकार बढी क्रियाशील देखिन्छन्। मान्छे अप्राकृतिक बन्दै गएको र मानवताबाट पशुत्वतर्फ उन्मुख भएको यथार्थ पनि यस मोडमा देखिन्छ। त्यस्तै यस मोडमा समय निरपेक्षता, स्थानिय निरपेक्षता, परिवेश निरपेक्षताजस्ता नवीन प्रवृत्ति पनि देखिन्छन्। शून्यको धारणालाई कलात्मक रूपले पस्कने अध्यात्मवादी चेत पनि यस मोडको उपलब्धी मान्न सकिन्छ। त्यस्तै आफ्नै जीवनलाई औपन्यासिक परिसीमामा बाँधेर विधा भञ्जन साथै विधाविनिर्माणको थालनी पनि यसै मोडको उपलब्धी हो।

गौतमको चार दशकभन्दा लामो उपन्यासयात्रामा उनले नवीन प्रयोग, पृथक प्रवृत्ति र स्थापत्य चिन्तनको माध्यमबाट एक सशक्त आख्यानकारका रूपमा आफूलाई स्थापित गरेका छन्। सङ्ख्यात्मक र गुणात्मक दुवै रूपमा गौतमका उपन्यासहरू प्रत्येक विन्दुका कालखण्डका अंशका रूपमा रहेका छन्। अस्तित्ववादी, विसङ्गतिवादी पाश्चात्य चिन्तनलाई नेपालीमाझ सुहाउँदो तुल्याएर साथै समसामयिक विद्रुपताको चित्राङ्कन गरेर उपन्यासकारले पृथक पहिचान कायम गरेका छन्।

श्यामव्यङ्ग्य र स्वैरकल्पनाको माध्यमबाट सामाजिक विकृतिमाथि चोटिलो बज्र प्रहार गर्न पनि गौतम सक्षम देखिएको छन्। त्यस्तै आलोचनात्मक यथार्थवाद र आधुनिकतावादी चिन्तनको स्थापना पनि गौतमका उपन्यासमा पाइने प्रवृत्ति हुन्। यसरी ध्रुवचन्द्र गौतमलाई एक सफल उपन्यासकारका रूपमा लिन सकिन्छ।

## २.६. ध्रुवचन्द्र गौतमका औपन्यासिक प्रवृत्तिहरू

### २.६.१. विसङ्गतिवादी अस्तित्वादी चिन्तन

जीवनजगतका कुनै पनि वस्तु विचार वा क्रियाकलापमा सङ्गति नभएको देख्ने साहित्यिक दृष्टिकोण वा धारण विसङ्गतिवाद हो। (पोखेल र अन्य, २०४०: १२३७) गौतमका पहिलो चरणका अधिकांश उपन्यासको मूल प्रवृत्तिको रूपमा विसङ्गतिवाद/अस्तित्त्ववाद देखिन्छ। जीवनप्रतिको निस्सारता, अर्थहीनता, निराशा र मूल्यहीनतालाई उपन्यासमा मूल कथ्य विषयमा प्रवेश गराउनु उनको औपन्यासिक प्रवृत्ति देखिन्छ। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धर्मसंस्कारको पतनले ल्याएका वैयक्तिक पीडालाई पनि उपन्यासमा प्रस्तुत गरेका छन्। उनका उपन्यासमा अस्तित्त्वका लागि गरिएका सङ्घर्ष पनि अन्त्य विङ्गतिमै टुङ्गिएका छन् यसको ज्वलन्त उदाहरण डापीमा भेट्न सकिन्छ। पहिलो चरणमै सशक्त रूपमा देखा परेका यो प्रवृत्ति पछिल्ला उपन्यासमा भने शिथिल भए पनि निरन्तरता पाइरहेको छ।

### २.६.२. आलोचनात्मक यथार्थवाद

समाजमा देखिएका कुरीति शोषण र अन्य विसङ्गत तत्वहरूलाई औल्याएर तिनको विरोध गर्ने तथा तिनलाई सुधारनु पर्ने आकांक्षा राख्ने लेखनपद्धतिलाई आलोचनात्मक यथार्थवाद भनिन्छ। (बराल र एटम, २०६६: १०९) विकृतपूर्ण तत्कालीन स्थिति, परिस्थितिलाई भत्काउन खोजी नवीन मूल्य र मान्यतालाई स्थापित गराउन खोज्नु आलोचनात्मक यथार्थवादको स्वभाव हो। गौतमका अधिकांश उपन्यासमा यो प्रवृत्ति भेटिन्छ। जुन कट्टेल सरको चोटपटकदेखि मूल प्रवृत्ति रूपमा देखा परेको पाइन्छ। सामाजिक विकृतिको भण्डाफोर गरी अन्त्य गर्न खोज्ने प्रवृत्ति यसमा पाइन्छ। नीति र नियमको पालना नभएको, सम्पत्ति र शक्तिमा मानवीय मूल्य र मान्यता साटिएको देखेपछि यो

अव्यवस्थाप्रति उनी घुँएत्रो हान्न पुग्छन्। आफ्ना हरेक उपन्यासमा तत्कालीन वैयक्तिक र सामाजिक यथार्थलाई आलोचनात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्न सिपालु गौतमका अलिखित, उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य, निमित्त नायक र स्वर्गीय हीरादेवीको खोजजस्ता उपन्यासमा राजनीतिक विकृतिलाई ओलोचनात्मक रूपले प्रस्तुत गरिएको छ। नैतिकतामा आएको हासकै कारण भ्रष्टाचार, अनियमितता, अनैतिकता, पीडा, शोषण र उत्पीडन भएको भनी त्यसको आलोचना गर्न गौतम सिपालु छन्।

### २.६.३. प्रयोगवादी प्रवृत्ति

पहिलेदेखि चलिआएका कलात्मक वा साहित्यिक परम्परालाई प्रयोगात्मक रूपमा परीक्षा गरेर त्यमा रहेका अनावश्यक तथा निरर्थक कुराहरूको विरोध गर्दै वा त्यस्ता कुराहरूलाई हटाउँदै नयाँ किसिमको प्रयोग गर्नुपर्छ भन्ने एक किसिमको मान्यता प्रयोगवाद हो। (पोर्खेल र अन्य, २०४०: ८८१) ध्रुवचन्द्र गौतम परम्परागत लेखनशैलीलाई त्याग्दै नवीनताको खोजी गर्दछन्। गौतम बाटै नेपाली उपन्यास परम्परामा प्रयोगवादको थालनी भएको हो। रहस्यमय स्वैरकल्पना र मिथकको प्रयोग गरी उपन्यास लेखनमा उनी अब्बल छन्। भाषामा नवीनता अनि चेतनप्रवाह शैलीमा वस्तु, घटना, कार्य र समय आदिको विशृङ्खलताका साथ प्रयोग गरी अरू उपन्यासकारभन्दा विशिष्ट उपन्यासकारका रूपमा आफूलाई चिनाइरहेका छन्। अनुभवन्यास, सूत्रोपन्यास आदि नवीन प्रवृत्तिका उपन्यास जन्माउन उनी यसरी नै सफल भएको हुन्। उपन्यासको शीर्षकमा पनि उनी प्रयोगवादी प्रवृत्ति नै अँगाल्छन् जस्तै:- डापी, मौन, उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य आदि।

### २.६.४ प्रकृतवादी प्रवृत्ति

मान्छे संसारका अन्य प्राणिहरूजस्तै प्रकृतिसँगै विकसित भएकोले उसमा पशुसुलभ आकर्षण विकर्षणका सबै गुणहरू उत्तिकै विद्यमान रहन्छन्। यही तथ्य स्वीकारेर प्रकृतवादीहरू मान्छेलाई काम, क्रोध र वासना जस्ता मनोभावहरूको समष्टि हो भन्ने ठान्छन् र उसका अर्थहीन आचरण, कामाबक्त चेष्टा अहङ्कारबाट उत्पन्न वृत्तिहरूलाई

विशेष रूपबाट हेर्ने र त्यसको यथार्थ प्रस्तुत गर्ने काम गर्छन् । (बराल र एटम, २०६६ : १२२) जीवनजगतको नाङ्गो यथार्थलाई उपन्यासमार्फत् प्रस्तुत गर्न गौतमलाई कुनै पनि आदर्श र नैतिकताले छेकबार लगाएको पाइँदैन । अचेतन मनद्वारा क्रियाशील मानवीय पाशविक प्रवृत्ति उनका उपन्यासमा पाइन्छ । ज्ञान, बुद्धि र विवेकमा जति अधि भएपनि मानव मनमा पशुवत आदिम प्रवृत्ति पनि सुषुप्तावस्थामा रहेको हुन्छ भनी उनी त्यसलाई जस्ताको तस्तै प्रयोग गर्छन् । अश्लील भाषा, अपाच्य गालीगलौज जस्ताको तस्तै प्रयाग गर्नाले उनी आलोच्य पनि छन् । मानव जनेन्द्रीय, यौनक्रीडा आदिको खुला चर्चा गर्दै नग्न रूपले त्यसलाई प्रयोग गर्नाले प्रकृतवादी यथार्थवादी भए पनि उनी अश्लील र अनैतिक लेखकजस्तो लाग्न सक्छ ।

### २.६.५ स्वैरकल्पनात्मक प्रवृत्ति

यथार्थलाई पर सारी कल्पनाशक्तिलाई बढी क्रियाशील बनाई सिर्जित साहित्य स्वैरकालपनिक साहित्य हुन् । अयथार्थ र काल्पनिक कुराको प्रस्तुतिबाट यथार्थको सूक्ष्म निरीक्षण गर्ने स्वैरकल्पनाको प्रयोग गौतमका उपन्यासमा पाइने महत्वपूर्ण विशेषता हो । (बराल र एटम, २०६६ : २५२) अलौकिकताको प्रधानता हुने यस्ता उपन्यासमा गौतम बौद्धिकताको मिश्रण गर्न खप्पिस छन् । डापी उपन्यासको डापी टोल, अलिखित उपन्यासको विरहिनपुर बरेवा, दोरहन्तल पोखरी, उत्खनन कार्य आदिको प्रयोग गरी स्वैरकल्पनाको रूपमा नेपालको यथार्थ चित्रण गरेका छन् । यथार्थ र स्वैरकल्पनाको मिश्रण गरी रोचक रूपमा उपन्यास सिर्जना गर्नु उनको वैशिष्ट्य हो ।

### २.६.६ भाषा तथा संरचनात्मक प्रवृत्ति

प्रायजसो कथानकहीन कथावस्तु भएका उपन्यास लेख्ने गौतमका उपन्यासमा कथावस्तु क्रमबद्ध विकास भएको हुँदैन भने कथ्य भाषाको प्रयोग गरिएको हुन्छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक सबै प्रकारका शब्द, नेपालीका साथै ठाउँठाउँमा अङ्ग्रेजी, हिन्दी र अङ्ग्रेजीबाट संरचनात्मक प्रभाव बेहोरेको देखापर्छ भने कहिलेबाहीं त त्यस्तो भाषिक स्वरूप जटिलसमेत बनेको देखिन्छ । (बराल र एटम, २०६६ : २५४)

## २.६.७ भय, आतङ्क प्रस्तुत गर्ने प्रवृत्ति

गौतमको सम्पूर्ण उपन्यासमा आतङ्कको भाँकी हुन्छ । पात्रहरु जीवनको भोगाइ भयको सीमान्त पीडा खपिरहेका हुन्छन् । जताजतै अनुशासन र आदर्शको स्वलन भइरहेको हुँदा सज्जनहरुलाई सन्त्रासमय बाध्यता नै अभिशापका रूपमा प्राप्त हुन्छन् । (बराल र एटम, २०६६ : २५१) जीवन जगतका भय र आतङ्कलाई उपन्यासमा प्रस्तुत गर्न गौतम खप्पिस छन् । त्यस्ता पात्रहरु भयग्रस्त भएर बाँचिरहेका हुन्छन् । डापी, अलिखित, उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य, 'एक सहरमा एक कोठा' आदि उपन्यासमा यस्तो प्रवृत्ति पाइन्छ । पात्रमा भय र त्रासको भाव उत्पन्न गराउनाले पाठक पनि भयानुभाव गर्दै उनका कृति पढ्ने गर्छन् । जीवनजगतका मूल्य र मान्यताका पर्खाललाई मान्छेले भत्काएपछि त्यही मान्छे त्यो भत्काइको परिणामस्वरूप भय, आतङ्क र सन्त्रासले ग्रस्त भएर बाँचन अभ्यस्त भइरहेको पाइन्छ ।

## २.६.८ मिथकीय प्रयोग

उपन्यासमा वर्णन गरिने कुरालाई अदिमताका साथ नवीन अनुभूति दिने क्रममा मिथकको प्रयोग गरिन्छ । (बराल र एटम, २०६६ : २५२) आदिम पात्र, प्रवृत्ति र घटनालाई नवीनताको जलप लगाउन मिथकको प्रयोग गरिन्छ । डापीको सिङ्गो परिवेश दानवीय क्रुरताको मिथकीय परिवेशका रूपमा अभिव्यक्त छ । अलिखितको धरमपुरका मानिसहरुको पाशाविक अत्याचार आदिम मानवको यायावरीय स्वरूपसँग तुलनीय छ । वीरचरित्रको नायक अग्निदत्तलाई मिथकीय रूपमा प्रस्तुत गरी अग्निदत्त+अग्निदत्त लेखिएको छ । अन्य सानातिना मिथकीय प्रयोग उनका सबै कृतिमा पाइन्छ ।

## २.६.९ चेतनप्रवाह शैलीको रोचक प्रयोग

उपन्यासमा कथयिताको विचारको अनवरत बहाइबाट चित्रण गरिने अतीत र वर्तमानको उत्खनन वा अन्वेषण नै चेतनप्रवाह शैली हो । (बराल र एटम, २०६६ : २५३) घटना, समय र कार्यको तालमेललाई ख्याल नराखी विशृङ्खलित रूपमा अवरोधहीन भावनालाई अविरल प्रवाह गरी साहित्य सिर्जना गर्ने शैली चेतनप्रवाह शैली हो । मनमा

आएको विचारलाई स्वतःस्फूर्त रूपमा उपन्यासमा प्रस्तुत गर्ने प्रवृत्ति गौतममा पाइन्छ । अलिखित, उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्य चेतनप्रवाह शैलीको प्रयोग गरी लखिएका सफल उपन्यास हुन् ।

### २.६.१० असीत व्यङ्ग्य

ब्ल्याक हयुमर शब्दको प्रयोग सर्वप्रथम लेनी ब्रुसले गरेका थिए । यसले रुग्ण विपर्युक्ति भएका बर्बर पाशविक उपकथा प्रयोग गरी मानवीय मूर्खतामाथि मनोविनोदी तर कट उपहास गर्दछ । (बराल र एटम, २०६६ : २७०) नेपालीमा यसलाई असीत व्यङ्ग्य वा श्याम व्यङ्ग्य भनिन्छ । डापी उपन्यासमा डापीटोलको वर्णनक्रममा शासकको क्रुरताको चित्रण गर्दा र देशको स्थिति दर्शाउँदा, कट्टेल सरको चोटमटकमा बुद्धिजीवीको विवशता प्रकट गर्दा, अलिखितमा देश, काल र जनताको स्थिति प्रस्तुत गर्दा, उपसंहार अर्थात् चौथो अन्त्यमा प्रजातन्त्रप्राप्तिपछि चैतेहरुको बिगबिगी र योद्धाहरुको रुग्ण चित्रण गर्दा, अग्निदत्त + अग्निदत्त नेपालको ब्रह्मलुट र नैतिकताको हास प्रस्तुत गर्दा, 'एक सहरमा एक कोठा'मा अस्पताल, डाक्टर, अनि बैंकको चित्रण गर्दा असीत व्यङ्ग्य प्रकट भएको छ ।

समग्रमा ध्रुवचन्द्र गौतमका औपन्यासिक प्रवृत्तिलाई निम्न बुँदाहरुमा प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

- (क) विसङ्गतिवादी चिन्तन
- (ख) अस्तित्वादी प्रवृत्ति
- (ग) आलोगनात्मक यथार्थवादी चिन्तनको अवलम्बन
- (घ) समसामयिक विद्रुपताको चित्राङ्कन
- (ङ) आतङ्क, भय र सन्त्रासको प्रस्तुति
- (च) नग्न यथार्थको चित्रण
- (छ) आञ्चलिकता
- (ज) प्रयोगवादी प्रवृत्ति
- (झ) स्वैरकल्पनाको प्रयोगमा सचेतता



- (ट) श्याम व्यङ्ग्यको प्रयोग
- (ठ) नवीन भाषिक शिल्प संयोजन
- (ढ) लेखनमा परिपक्व आन्तरिक संरचना
- (ण) उत्तरआधुनिकतावादी चिन्तन
- (त) विनिर्माणवादी लेख ।

## २.७ निष्कर्ष

नेपाली साहित्यका अथक साधकका रूपमा रहेका गौतमले साहित्यका विविध विधामा कलम चलाए पनि उनको औपन्यासिक व्यक्तित्व सबैभन्दा महत्वपूर्ण रहेको छ । २०२४ साल बैशाखको रुपरेखा पत्रिकामार्फत् अन्त्यपछि उपन्यास लिएर देखा परेका गौतम सातौँ ऋतु (२०६८) सम्म आइपुग्दा आख्यानपुरुषका रूपमा स्थापित भएसकेका छन् ।

अस्तित्ववादी, विसङ्गतिवादी चिन्तन लिएर औपन्यासिक यात्रा थालेका गौतम विभिन्न नयाँ नयाँ प्रविधि र प्रयोगका माध्यमबाट नेपाली उपन्यासलाई विश्व उपन्यास जगतसँग प्रतिस्पर्धा गर्ने सक्षम उपन्यास दिन सफल रहेका छन् ।

आज आएर उपन्यासकार गौतमको प्राप्ति यत्किञ्चित् अस्तित्वको प्रयोग, केही मात्रामा सङ्गतिको प्रयोग आलोचनात्मक यथार्थ एवम् स्वैरकल्पनाका साथै मनोविज्ञान र यौनमनोवैज्ञानिक चेतको समीकृत प्रयोग नै बनेको देख्न पाइन्छ । जसले गर्दा उनी नेपाली साहित्यजगतमा आख्यान पुरुषका रूपमा उभिएका छन् ।

## तेस्रो परिच्छेद

### उपन्यासको सैद्धान्तिक परिचय

#### ३.१ उपन्यासको सङ्क्षिप्त परिचय

उपन्यास संस्कृतबाट आएको तत्सम शब्द हो । यसको निर्माण उप+नि+अस्+धञ् ( अ) बाट भएको हो । “उपन्यासको शाब्दिक अर्थ कुनै वस्तुलाई कसैको नजिक राख्नु हो ।” उपन्यास शब्दले नेपाली साहित्यको ललित गद्यकाव्यको आख्यानात्मक विधालाई सङ्केत गर्दछ । मानव सभ्यताको इतिहास, मानव जीवनको आरम्भको यात्राआदिको पहिलो संघारसँगै मान्छेले भोका, उपनाएका र जीवन भोगाईले छाँडेका प्रभावहरूलाई मान्छेले नै आफ्ना व्यवहार र अनुभूतिमा ग्रहण गर्दै र ज्ञानभण्डारलाई विस्तार गर्दै विकसित हुँदै आयो ।

सर्वप्रथम सत्रौं शताब्दीमा स्पेनिस भाषामा युरोपबाट निस्केको ‘डन क्वीजोट’ ले ठूलो प्रभाव पार्यो । पाश्चात्य साहित्यमा उपन्यासको आरम्भ अठारौं शताब्दीमा मात्र भयो । विश्व साहित्यमा नै उपन्यासको सुरुवात अठारौं शताब्दीमा भएको पाइन्छ । आधुनिक उपन्यासको मूल स्रोत संस्कृत साहित्यका आख्यानात्मक कृतिहरू हुन् । पूर्वीय साहित्यमा ठोस आख्यान लेखन बाल्मीकि र व्यासबाट सुरु भयो । रामायण, महाभारत, पुराण, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, कामशास्त्र एवम् दैनिक जीवनमा उपयोगी सामग्रीहरू पञ्चतन्त्र,

हितोपदेश, बालकथा, परिकथा जस्ता रचनाहरु प्राचीन कालमा देखा परे । मिश्रको सभ्यतालाई देखाउने जादुगरको कथालाई पुरातन आख्यान मानिन्छ ।

उपन्यास वर्तमान साहित्यको सबैभन्दा लोकप्रिय विधा हो । “पहिलेका महाकाव्यको स्थान र महत्वलाई अहिले यसले लिएको छ । यसैले यसलाई गद्यमा लेखिएको महाकाव्य पनि भनिन्छ ।”

“ऋग्वेदका सूत्रहरुमा पूर्वीय साहित्यको आरम्भ र त्यस लेखनका परिधि भित्र जीवन सभ्यतालाई सीमाबद्ध गर्ने काम भयो । जीवनका यी व्यापक इतिवृत्तहरुलाई सीमित सन्दर्भ र परिवृत्तमा समेट्ने प्रयासमा उपनिषद्, वेदोत्तर, ब्राह्मण ग्रन्थहरु पनि देखा परे ।” उन क्वीजोट, बोकासियोको ‘डेक्क भैरोन’ लाई आधुनिक उपन्यासका आधारमा मानिन्छ । पन्ध्रौं शताब्दीको लुल्लादाउदको ‘चन्दनायन’ प्रकाशित भयो । विक्रमको (१५२०-१५४०) को बीचमा जयासीको ‘पद्मावती’ र मञ्जुनको ‘मधुमालती’ प्रकाशित भए सन् १६१३ मा उसमान महोदयको चित्रावली, कशिम शाहको १७३१ मा ‘हँसजबाहिर’ प्रकाशमा आए । इ. १७१९ मा ‘इयानियल डिपोका ‘रविन्सनक्रुशो’ बाट उपन्यासको निश्चित ढाँचा देखा परेको पाइन्छ , जसलाई क्रिया र उपकथाको उपन्यास (Novel of Action and Explosde) भनेर चिनिन्छ ।

ऋग्वेदका सूत्रहरुमा पूर्वीय साहित्यको आरम्भसँगै लेखनमा जीवन सभ्यतालाई सीमाबद्ध गर्ने काम भयो । जीवनका यस्तो इतिवृत्तहरुलाई सीमित सन्दर्भ र परिवृत्तमा समेट्ने प्रयासमा उपनिषद्, वेदोत्तर, ब्राह्मण ग्रन्थहरु पनि देखा परे । वर्तमान साहित्यिक विश्वमा उपन्यास परिभाषाबद्ध भएर देखा परेको छ । उपन्यासका उपकरणहरु, स्वरूपहरु, प्रकार र शैलीले कतिपय अतिरञ्जनात्मक आख्यान श्रृङ्खलाहरु संसारमा मानव वसभ्यतासँगसँगै विकसित भएको देखिन्छ । मानवीय सभ्यताका भोक, शोक, तिर्खा, इर्ष्या, उत्साह, कामवासना, घृणा, निद्रा, दया, माया, त्रास, करुणा जस्ता अनेकौं गुणहरु मानिसको आदिम अवस्था अथवा ठुङ्गे युगमा जस्ता थिए आजसम्म उस्तै छन् । समयले फड्को मार्दै जाँदा लाखौं वर्ष बिति सक्दा पनि मान्छे प्रकृतिक गुणका विन्दुबाट अघि बढेको छैन ।

प्राचीन पूर्वीय जगतका विद्वान व्यास, वाल्मीकि र होमरको सौन्दर्य हालका श्रृजनाबाट पनि प्राप्त भएबाट अदिम प्रवृत्तिको पुनः सिर्जना भएको पाइन्छ ।

लगभग १९ औं शताब्दी पूर्वको पूर्वीय साहित्य जगत औपन्यासिक कृतिमा शून्य थियो । पाश्चात्य साहित्यमा पनि उपन्यासको आरम्भ अठारौं शताब्दीपछि मात्र भयो । आख्यानत्मक बाहुल्य भएका आशिक रुपमा उपन्यास जस्ता देखिने केही लोकसाहित्यमूलक कृतिहरु देखिन्छन् ।

“उपन्यास जीवनको आन्तरिक र बाध्य संरचनाको वास्तविक तर कलात्मक अभिव्यक्ति हो । उपन्यास जीवनको तस्वीर हो र अझ कलात्मक प्रस्तुतिमा आउने हुनाले जीवन भन्दा बढ्ता साझा जीवनको प्रतिच्छाया हो ।” “साहित्यले मान्छेको अन्तर्वाह्य दुवै प्रस्तुति प्रतिपादन गर्न सक्छ । जीवनको सम्पूर्ण पक्षलाई सीमकरण गरेर प्रस्तुत गर्न भने उपन्यास मात्र सफल हुन्छ ।”

पूर्वीय साहित्यमा ठोस आख्यानको आरम्भ वाल्मीकि र व्यासबाट भएको देखिन्छ । रामायण र महाभारतलाई आख्यान श्रृङ्खलाको उपजीव्य आधार मानेर पुराण र उपपुराणका कथाहरु, नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, कामशास्त्र आदि जस्ता रचनाहरु भए । दण्डीको ‘हर्षचरित’ ‘दशकुमार चरित’ आदि कृतिहरु उपन्यासरुपी आख्यान हुन् ।

विक्रमको सोह्रौं शताब्दीतिर भारतवर्ष र वरपरका मुलुकहरुमा आख्यानको प्रभाव जन्म्यो । पाश्चात्य साहित्यमा यहुँदीको आचरण ग्रन्थ ‘ओल्ड टेस्टामेन्ट’ र क्रिश्चियनहरुको धार्मिक ग्रन्थ ‘न्यूटेस्टामेन्ट’ (वाइबल), होमरको - इलियड र ओडेसी, ‘दाँतेको’ ‘डिभाइन कमेडी’ आदि जस्ता ग्रन्थहरु देखा परेर वर्तमान उपन्यास विधाको धरातल निर्माण गरेको पाइन्छ ।

यसरी सभ्यताको क्रम एशिया, युरोप, अफ्रिकाका भू-भागमा पनि लोक साहित्यको भण्डार व्यापक मौलाएको छ । जर्मनीमा प्रगलित आख्यान ‘व्यो उल्फ वेलायतमा प्रगलित ‘क्यान्टरवरी टेल्स’, टास्सटायको ‘युद्ध र शान्ति’, माक्सिम गोर्कीको ‘आमा’, बाल्जाकको ‘बदामवोभारी’हुँदै नेपाली साहित्यमा आइपुग्दा भवाजी भिक्षुको ‘आगत’ मदनमणि दीक्षितको

माधवी आदि कृतिहरु नेपाली उपन्यास परम्परामा देखा पर्दछन् । यसरी पाश्चात्य पूर्वीय साहित्यबाट विकसित हुँदै नेपाली साहित्यमा आएको उपन्यास के हो भन्ने विषयमा विभिन्न परिभाषा गरेको पाइन्छ ।

## ३.२ उपन्यासको परिभाषा

उपन्यास के हो भन्ने विषयमा परिभाषा गर्ने क्रममा पाश्चात्य, पूर्वीय र नेपाली विद्वानहरुका केही परिभाषालाई यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ

### ३.२.१ पाश्चात्य विद्वानका दृष्टिमा उपन्यास

१. “विशेष देशकाल र चारित्रिक समूह समावेश भएको क्रमवद्ध घटनाहरुको माध्यमद्वारा अभिव्यक्ति हुने आवश्यकताअनुसार लम्बाई भएको त्यस्तो साहित्यिक वर्णनात्मक गद्यविधालाई उपन्यास भनिन्छ जसमा मान्छेका अनुभवहरुलाई केही जटिलताकासाथ प्रस्तुत गरिन्छ ।” The New Encyclopeida Britanica, Vol. 18
२. “उपन्यास भनेको वास्तविक जीवन, चालचलन र आफ्नो समयको तस्वीर हो ।” - कलाश रिब्स
३. “उपन्यास प्राकथनपूर्ण हो, जसमा कथानक हुन्छ ।”-प्रोफेसर वारेन
४. “उपन्यसालाई गद्यमय कल्पित आख्यानको माध्यमले गरिएको जीवनको व्याख्या भन्न सकिन्छ”-अर्नेष्ट ए. बेकर
५. “उपन्यास गद्यमा लेखिएको महाकाव्य हो ।”-हेनरी जेम्स
६. “उपन्यास मानव अनुभवको निरूपण हो, चाहे त्यो यथार्थ होस वा आदर्श, तर उपन्यासमा अनिवार्यतः जीवनको आलोचना रहन्छ ।”-डा. हर्वट मूलर
७. “उपन्यास कोरा कथात्मक गद्यलेखन होइन, यो त मानव जीवनको गद्य हो । उपन्यास कला नै पहिलो कला हो, जसले मानवको सम्पूर्ण जीवनलाई अभिव्यक्त गर्ने प्रयास गर्दछ ।”-राल्फ फक्स

### ३.२.२ पूर्वीय विद्वानहरुका दृष्टिमा उपन्यास

१. “युक्तिपूर्ण ढङ्गले अभिप्रायलाई प्रस्तुत गर्नु उपन्यास हो ।”-भरतमूनि
२. “उपन्यास भनेको कसैलाई प्रसन्न गराउनु हो”-विश्वनाथ
३. “उपन्यास नयाँ युगको नयाँ अभिव्यक्तिको नयाँ रूप हो ।”-डा. सतेन्द्र
४. “म उपन्यासलाई मानव चरित्रको चित्रण मात्र सम्झन्छु । मानव चरित्रमाथि प्रकाश पार्नु र त्यसको रहस्य खोल्नु नै उपन्यासको मूल्य तत्व हो ।”-  
प्रेमचन्द्र
५. “उपन्यासले कल्याणको आधारमा एउटा संसार खडा गरिदिन्छ । कहिले काहीं त उपन्यासमा यति सबल भ्रम प्राप्त हुन्छ - हामी त्यस भित्रै नै हराएर सन्तोष प्राप्त गर्न पुग्दछौ ।”-डा. गोपाल राय
६. “उपन्यास मनुष्यको वास्तविक जीवनको काल्पनिक कथा हो ।”- डा.  
श्यामसुन्दर

### ३.२.३ नेपाली साहित्यकारका दृष्टिमा उपन्यास

१. “उपन्यास धेरै अध्याय वा खण्डहरुमा लेखिएको लामो साहित्यिक कथा हो ।”-  
बालचन्द्र शर्मा
२. “उपन्यास मानव जीवनकै सम्पूर्णताको अभिव्यक्ति हो ।”-कृष्णचन्द्र सिंह  
प्रधान
३. “यथार्थसँग परिचयन, सत्यको साधना, मूल्यको संरक्षण, जीवन वैविध्यमाथि एकरूपता प्रधान जीवन शिक्षण, व्यक्तित्वको पुनरन्वेषण र मानवताको प्राप्ति उपन्यासका प्रमुख दायित्व हुन् ।”-इन्द्रबहादुर राई
४. “कुनै शाश्वत मानवीय मर्मको अविस्मरणीय कलात्मकताले नै उपन्यासलाई महान बनाउँछ ।”-डा. मोहनहिमांशु थापा
५. “उपन्यास गद्यमा लेखिएको त्यो विधा हो, जसमा मानव जीवनको विस्तृत पक्ष र सम्बद्ध परिवेशको प्रस्तुति हुन्छ ।”-मोहनहिमांशु थापा

६. “मानव जीवनसंग सम्बद्ध भएर आउने पक्षलाई जतिसम्म समेट्न सकिन्छ त्यति सम्मको अनुवेक्षण गराउने रचनालाई उपन्यास भनिन्छ।”-राजेन्द्र सुवेदी
७. “उपन्यास मानवीय जीवनको चित्रण गर्ने विशालकाय आख्यानत्मक गद्य संरचना हो।”-मोहनराज शर्मा
८. “थोरै अध्याय वा वा खण्डहरुमा लेखिने लामो साहित्यिक कथा चरित्र-प्रधान गद्य महाकाव्य नै उपन्यास हो”-नेपाली बृहद् शब्दकोष

यसरी उपन्यास मानव सभ्यताका विविध पक्षहरुमाथि आधारित घटना श्रृङ्खलाको यथार्थ वा अतिरञ्जनात्मक बृहत गद्यपरक आकारको कलात्मक अभिव्यक्ति मात्र नभई मानव सभ्यता विर्माणको पथप्रदर्शन पनि हो। उपन्यासभित्र मानवीय जीवनको सुख दुःख, माया प्रीति, सपना-विपना, आशा-निराशा, करुणा, सहानुभूति, आपद-विपदका साथै यथार्थ, आदर्श, विसङ्गत-स्वच्छन्द आदि विभिन्न पक्षहरुको समावेश हुन सक्छ। “संक्षेपमा भन्ने हो भने उपन्यासभित्र मानव जीवनका यापन पक्षहरु समाविष्ट हुन सक्छन्।”

यसरी विश्वसाहित्यमा आख्यानबाट विकसित भई जन्मेको उपन्यास विधाको विकासक्रमलाई अध्ययन गर्दा वैदिक संस्कृति गन्धहरु नै आधुनिक उपन्यासका पृष्ठभूमि हुन्। हालसम्मको अनुसन्धानबाट नेपाली भाषाको जन्म भएको लगभग हजार वर्षको समयमा आर्य भाषाको जन्म भयो र आज नेपाली भाषाले सु-सङ्गठित रूप धारणा गरेको छ।

उपन्यास आख्यानबाट सुरु भएको गद्य विधा हो। यो मानव जीवन र मानव समाजका सत्य, तथ्य, ऐतिहासिक तथा विविध पक्षमा अनुकरणका साथै पुनः सिर्जना हुन्छ। उपन्यास परम्परालाई चरणगत रूपमा निम्नानुसार तीन चरणमा विभाजन गरी अध्ययन गर्न सकिन्छ।

- १) प्राथमिककाल (वि.सं. १८२७-१९४५)
- २) माध्यमिककाल (वि.सं. १९४६-१९९०)
- ३) आधुनिककाल (वि.सं. १९९१-हालसम्म)

### ३.३ उपन्यास संरचनाका तत्वहरु

उपन्यास संरचनाका तत्वहरु केकति रहेका हुन्छन् भन्ने बारेमा विद्वानहरुको एकमत देखिँदैन । कृष्णचन्द्रसिंह प्रधानले कथानक, चरित्र, कथोपकथन शैली, भाषा, उद्देश्य र वातावरणलाई उपन्यासका आधारभूत तत्व भनी निर्धारण गरेका छन् (प्रधान, २०६१:७) । त्यस्तै राजेन्द्र सुवेदीले कथानक, चरित्र, कथोपकथन, द्वन्द्व परिवेश, विचार र कौतुहल भनी निर्धारण गरेका छन् (सुवेदी, २०५३:१२) । ऋषिराज बरालले कथानक, चरित्रहरु, सारतत्व, दृष्टिबिन्दु, भाषाशैली र कार्यपीठिकालाई उपन्यासका तत्व मानेका छन् । कृष्णहरि बराल र नेत्र एटमले कथानक चरित्र र चरित्रचित्रण, पर्यावरण, दृष्टिबिन्दु, सारवस्तु, भाषा, प्रतीक र विम्ब तथा गति र लय भनी निर्धारण गरेका छन् (बराल र अन्य, २०५६:२२) । यी विभिन्न उपन्यासका तत्वहरुबाट मुख्य तत्वहरु निम्नानुसार देखाइएको छ ।

- १) कथानक
- २) चरित्रचित्रण
- ३) संवाद
- ४) भाषाशैली
- ५) वातावरण
- ६) उद्देश्य
- ७) दृष्टिबिन्दु

#### ३.३.१ कथानक

घटनाको व्यवस्थित विन्यास कथानक हो । यो उपन्यासको महत्वपूर्ण तत्व हो । यसलाई कार्यकारणको तारतम्यपूर्ण सूत्रबद्धस्वरूप अथवा घटनाहरुको सङ्गठन भन्न सकिन्छ जसको जम्माजम्मीमा उपन्यासको आकृति खडा हुन्छ (प्रधान, २०६१:७) । कथानकको भूमिका चरित्रप्रधान उपन्यासमा कम जस्तो लागे पनि घटनाप्रधान उपन्यासमा त अत्यधिक रहन्छ । कथानकमा पात्र तथा घटनाहरु रोचक तथा रहस्यमय ढङ्गले एकहर्कालाई गाँस्दै अगाडि बढ्दछन् । यसमा घटनाहरु कथात्मक रुपमा स्वितर उदारेभै सरर नभनेर



एकअर्कासंग सम्बन्धित तुल्याउँदै घटनासंग कारण जोड्ने हुनाले यसले पाठकमा पर्ने जिज्ञासालाई शान्त गर्दै लैजान्छ । कथानकलाई अगाडि बढाउन पात्रहरुबीच हुने स्वभाविक खालका बाह्य तथा आन्तरिक द्वन्द्व र क्रियाकलापले भूमिका खेल्छन् । उपन्यास लेखनका क्रममा लेखकले कुनै न कुनै स्रोतबाट कथानक लिएको हुन्छ । यस्ता स्रोतहरु सामान्यतः इतिहास, यथार्थमूलक अनुभव, मिथक, रागात्मक सौन्दर्य र स्वैरकल्पना हुन सक्छन् (बराल र अन्य, २०५६ : २५) । सुरुलेखि अन्त्यसम्म कथाले मूलतः पाँचवटा तह पार गर्दछ, जसलाई कथानकको आङ्गिक विकार भनिन्छ । ती आरम्भ, सङ्घर्षविकास, चरम, सङ्घर्षह्रास र उपसंहार हुन् ।

### ३.३.२ चरित्रचित्रण

चरित्र उपन्यासको अर्को अभिन्न अङ्ग हो जसले कथानकलाई बोकेर अगाडि बढ्दछ । यसलाई पात्र, भोक्ता वा सहभागी पनि भनिन्छ । चरित्रबाट नै घटना जन्मन्छन् र यथार्थको समेत उद्घाटन हुन्छ (बराल र अन्य, २०५३ : २७) । उपन्यासमा मानवजीवनको व्यापकतटा झल्काउने बहुल पात्रको प्रयोग हुन्छ, जसका माध्यमबाट उपन्यासकारले आफ्ना विचार पाठकसमक्ष पुऱ्याउँछ । उपन्यासकारले उपन्यासमा के भन्न चाहन्छ, उसको दृष्टिकोण कस्तो छ भन्ने कुरा चरित्र र तिनबाट प्रस्तुत हुने निष्कर्षबाट थाहा पाउन सकिन्छ । चरित्रहरुको संवादकार्य र गतिमा कथावस्तु, विचार तथा उद्देश्यको पनि विस्तार हुन्छ (सुवेदी, २०५३:१७) । उपन्यासमा मानवीय तथा मानवेतर दुवै प्रकारको पात्रहरुको प्रयोग गरिएका हुन्छन् । उपन्यासका मानवीय पात्रहरु मुनै खास वर्ग, प्रवृत्तिका आधारमा विविध प्रकारका हुन्छन् । कृष्णहरि बराल र नेत्र एटमले उपन्यासमा प्रयोग हुन सक्ने पात्रहरुलाई छ जोडीका प्रकारमा बाँडेका छन् । जस्तै : गतिशील र गतिहीन, यथार्थ र आदर्श, अन्तर्मुखी र बहिर्मुखी गोता र च्याप्टा, सार्वभौम र आञ्चलिक, पारम्परिक र मौलिक (बराल र अन्य, २०५६:३०) । यस्तै मोहनराज शर्माले लिङ्ग, कार्य, प्रवृत्ति, स्वभाव, जीवनचेतना, आसन्नता र आबद्धताका आधारमा पनि चरित्रका विविध प्रकार बताएका छन् ।

।

### ३.३.३ संवाद

चरित्र वा पात्रहरु बीचको कुराकानीलाई संवाद चरित्रपछिको अर्को महत्वपूर्ण तत्व हो । यसलाई कथोपकथन पनि भनेको पाइन्छ । संवाद उपन्यासको अनिवार्य तत्व नभए पनि उपन्यासलाई स्वाभाविक, नवीन, कौलूहलतापूर्ण र रोगक बनाउनका निमित्त यसको प्रयोग फलदायी हुन्छ । लामो संवाद अरुचिकर र प्रभावहीन हुने सम्भावना बढी हुन्छ । त्यसैले संवादलाई देश, काल परिस्थिति अनुकूल सङ्क्षिप्त, सरल, सरस, स्वाभाविक, कलात्मक र रोचक बनाउने प्रयास गर्नुपर्छ जसबाट सार्थक कृत्तिको सृजना गरेर मनमा गहिरो प्रभाव पार्न सकिन्छ । संवादले कथानकलाई गत्यात्मक बनाउन, लेखकीय जीवन दर्शनको उद्घाटन गर्न र चरित्रको विकास गर्न सक्नुपर्छ, अनयथा यसको प्रयोग निरर्थक हुन्छ । पात्रको सामाजिक र मनोवैज्ञानिक अवस्था तथा देशकाल र परिस्थिति अनुकूलता गरिएको संवाद योजना उपन्यासका लागि महत्वपूर्ण हुन्छ ।

### ३.३.४ भाषाशैली

यसअन्तर्गत भाषिक तथा शैलीय बनोट अर्थात् भाषा, शैली, बिम्ब, प्रतीक, अलङ्कार, गति, लय आदि पर्दछन् । उपन्यास पाठ्यप्रधान साहित्यिक विधा हो । यसमा भाषाको सर्वोपरि स्थान रहन्छ । भाषाका माध्यमबाट मात्र लेखकले उपन्यासको आकृति खडा गरी आफ्ना विचार सशक्त र जीवन्त रूपमा संवहन गराउँछ । उपन्यासमा कथ्य, लेख्य दुवै खाले भाषाप्रयोग हुन्छन् । पात्र, घटना, परिवेशअनुरूप स्वाभाविक भाषा उपन्यासमा प्रयोग हुन्छ र भाषामा रोचकता तथा कलात्मकताको अपेक्षा उपन्यासले गरेको हुन्छ । साहित्यिक भाषामा सामान्य नियमहरुको अतिक्रमण गरी विशिष्टताको निर्माण गरिन्छ । साहित्यिक कृतिमा पाइने सौन्दर्यचेतना भाषिक कलाको आधारमा खडा भएको हुन्छ (श्रेष्ठ, २०६४:३७) । भाषामा परम्परित नियमले बोकेको भन्दा भिन्नै अर्थ खोज्दै व्याकरणिक विचलन, बिम्बप्रतीक, लक्षणा, व्यञ्जनाबाट भाषिकसौन्दर्य खोजिनु आजका उपन्यासका भाषिक विशेषता बनेका छन् ।

शैली भाषालाई प्रस्तुत गर्ने तौरतरिकासँग सम्बन्धित कुरा हो । उपन्यासमा भाषालाई कुन विधिद्वारा प्रयोग गर्ने र बढी रोचक एवम् सजीव बनाउने भन्ने कुरा यसले बुझाउँछ । उपन्यासलेखनको क्रममा प्रयोग गरिने वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, संस्मरणात्मक, पत्रात्मक आदि शैलीले सीपसौन्दर्यलाई बुझाउँछन् ।

उपन्यासलाई मिठासपूर्ण बनाउनको लागि प्रतीक तथा बिम्बको प्रयोग गरिन्छ । कुनै पनि मूर्त वस्तुको प्रयोगद्वारा अमूर्त वा भावको उल्लेख गर्न प्रयोग गरिने वस्तु वा घटना नै प्रतीक हो । प्रतीकले एकातिर अमूर्त र अव्यक्त भावलाई भिन्न ढाँचाले मूर्तता र अभिव्यक्ति दिने काम गर्छ भने एकातिर धेरै शब्द खर्च गरेर भन्नुपर्ने कुरालाई थोरै शब्दमा मीठोसँग भन्दछ (बराल र अन्य, २०५६:३६) । उपन्यासमा प्रयोग गरिने प्रतीकहरू वैयक्तिक र सार्वभौमिक गरी दुई प्रकारका हुन्छन् । वैयक्तिक प्रतीक लेखनको मौलिक सिर्जना हो । यसलाई बुझ्न लेखकीय सिर्जनाको परिवेश, अनुभूति, विचारधारालाई बुझ्नुपर्ने हुन्छ भने सार्वभौमिक प्रतीक चाहिँ सर्वत्र लगभग एउटै अर्थमा प्रयोग गरिन्छन् (बराल र अन्य, २०५६:४४) ।

उपन्यासमा गति भनेको कथानकको विकासमा रहेको वेग हो (श्रेष्ठ, २०६४:१२) । कुनै उपन्यासमा कथानकको विकासको वेग तीव्र हुन्छ भने कुनैमा मन्द हुने गर्छ । वर्णनात्मक शैली र लामा संवाद तथा वाक्यमा उपन्यासको गति कम हुन्छ । वास्तवमा औपन्यासिक गति लेखनको पद्धतिमा निर्भर गर्दछ । ती पद्धति दृश्यात्मक र सङ्क्षेपपद्धति हुन् (बराल र अन्य, २०५६:४२) ।

दृश्यात्मक पद्धतिमा उपन्यासकारे सम्पूर्ण सानातिना घटना तथा गौण पात्रको पनि रुचि लिएर विस्तारपूर्वक दृश्यका रूपमा प्रदर्शन गर्दै कथानक अगाडि बढाउँछ । दृश्यात्मक पद्धतिमा कथानकको गति मन्द हुन्छ । पात्रहरूको संवाद, कार्यपीठिका, पात्रको मनोद्वन्द्व, गतिविधि आदि समाहित पार्ने काम यसमा हुन्छ (बराल र अन्य, २०५६:४२) ।

सङ्क्षेप पद्धतिमा छोटोछरितो रूपमा मसिना कुराहरूलाई काट्दै कथानक अगाडि बढ्छ । पात्रका कतिपय क्रियाकलाप र सानातिना घटनाहरू सूचनाको भरमा अगाडि

बद्धदछन् । भएगरेका सम्पूर्ण घटना र कार्यहरुको सार खिचिन्छ र समयको पनि खासै महत्व नहुने पद्धति सङ्क्षेप पद्धति हो (बराल र अन्य, २०५६:४२) । कम आवश्यक कुराहरुको बिम्ब चित्र प्रस्तुत नगर्नाले यसमा औपन्यासिक गति तीव्र हुन्छ ।

उपन्यास गद्यमा लेखिए पनि यसको आफ्नै किसिमको ढाँचा र छन्द हुन्छ । भाषिक ध्वनिबाट उत्पन्न हुने साङ्गीतिकताभित्र निहित मूर्च्छनालाई गद्य भाषामा लय भनिन्छ ( बराल र अन्य, २०५६:४२) । विचलनयुक्त शब्दहरुबाट, ध्वनिको पुनरावृत्तिबाट तथा आलङ्कारिक बिम्बात्मक भाषा आदिबाट लय उत्पन्न हुन्छ । लयको माध्यमबाट यो अपरिहार्य तत्व बनेको छ ।

### ३.३.५ वातावरण

उपन्यासमा पात्रहरुका कृयाकलापहरु जहाँ सञ्चालन हुन्छन् वा घटनाहरु जहाँ घट्छन् त्यो ठाउँ उपन्यासले लिएको समय र उपन्यास पढ्दै जाँदा पाठकमा पर्न सक्ने मानसिक प्रभावलाई पर्यावरण भनिन्छ । यसरी हेर्दा पर्यावरणभित्र देशकाल र वातावरण पर्न सक्छन् (शर्मा, २०५०:१७४-१७५) ।

देश, काल, चित्र, उपन्यासले लिएको कुनै निश्चित समय र उपन्यासमा पात्र र घटनामार्फत बुझिने अर्थात् सिधै वर्णित स्थानविशेष पर्दछन् । देशकाल कथानकसँगै जोडिएर आउने आधार भूमि हो । कुनै उपन्यासमा उपन्यासकारले भूगोल, संस्कृति, जाति, समयको चित्रण र वर्णन गर्छ । कुनैमा भने पात्र र घटनाको प्रकृति हेरेर वा तिनको रीतिरिवाज, चालचलन, भेषभूषा, बोलीचाली आदिमार्फत पनि बुझ्न सकिन्छ । आञ्चलिक उपन्यासमा देशकालको महत्व बढी हुन्छ । आज उत्तरआधुनिकतावादी उपन्यासकारहरु भने देशकाललाई कम महत्व दिएको पाइन्छ । विश्वजननी प्रवृत्तिका उपन्यास लेखिने यो समयमा देशकाल स्वतः गौण हुँदै गएको छ ।

उपन्यासमा पढ्दा त्यसले पैदा गर्ने मानसिक स्थितिलाई वातावरण भनिन्छ । घटना तथा पात्रहरुको जीवन्त र सजीव प्रस्तुति भएका उपन्यासले पाठकमा रोचक तथा घोचक खालको वातावरण सृजना गर्न सक्छन् । यो मानसिक अवस्थसँग सम्बद्ध हुने हुँदा भाव पनि

भनिन्छ । उपन्यासको कथानक पढ्दै जाँदा पाठकमा उत्पन्न हुने दुःखसुख, घृणा, क्रोध, करुणा, प्रेम, नैराश्य, हर्ष, आशक्ति आदि भावनाको उद्बोधन र तिनको परिवृत्ति नै वातावरण हो ।

### ३.३.६ उद्देश्य

सारवस्तु उपन्यासको महत्वपूर्ण पाटो हो । यो उपन्यासलेखनको उद्देश्य तथा परिणति हो । यसलाई उद्देश्य तथा विचार पनि भनिन्छ । उपन्यासले निचोडमा भन्न खोजेको अर्थात् समाख्याताबाट सम्प्रेषण गर्दा चाहेको गुदी कुरोलाई सारवस्तु मान्न सकिन्छ । लेखकको जीवनको दर्शनको भारवहन गर्ने सारवस्तु उपन्यासको अर्थ हो । यो उपन्यासमा कोरा उपदेशात्मक वा घोषणात्मक रूपमा भन्दा कलात्मक रूपमा आएर अन्त्यमा पाठकलाई तत्वबोध गराउँछ । उपन्यासमा विचारको संवहन कुनै बिम्बप्रतीक तथा भाषिक विचलन, लक्षणा, व्यञ्जनाजस्ता कुनै पद्धतिद्वारा अभिव्यक्त गर्न सकिन्छ (बराल र अन्य, २०५६:४२) ।

### ३.३.७ दृष्टिबिन्दु

दृष्टिबिन्दु त्यो स्थिति, स्थान वा सीमा हो जसका माध्यमबाट कथाकारले आफ्नो धारणा वा अनुभूति पाठकवर्ग समक्ष पुऱ्याउँछ अर्थात् कथाकार र पाठकवर्गबीचको सम्बन्धसूत्र नै दृष्टिबिन्दु हो (बराल र अन्य, २०५६:३६) । प्रस्तुतीकरणसँग सम्बन्धित दृष्टिबिन्दु उपन्यासमा कथावाचकले लिने ठाउँ हो । यसबाट कथानक कसले र कसरी भनेको छ भन्ने कुरा ज्ञात हुन्छ । कुनै उपन्यासमा कथयिता स्वयम् सहभागी भएको हुन्छ । कुनैमा अरुलाई नै पात्रको रूपमा खेलाडीभैँ खेलाएर आफू परै बसेर त्यसको वर्णन गर्ने गर्छ । दृष्टिबिन्दु र बाह्य दृष्टिबिन्दु गरी २ प्रकारका हुन्छन् ।

#### ३.३.७.१ आन्तरिक दृष्टिबिन्दु

यसमा कथयिता नै 'म' पात्र तथा नायकको रूपमा आएर अन्य पात्र तथा घटनाको बारेमा वर्णन गर्छ । प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दु पनि केन्द्रीय र परिधीय गरी दुई प्रकारको हुन्छ ।

कथयिताले कथानकभित्र आफ्नो महत्वपूर्ण स्थान हुन्छ र आफ्नै आत्मकथाका रूपमा सरसर्ती बताउँछ भने तयो केन्द्रीय आन्तरिक दृष्टिबिन्दु हुन्छ ।

परिधीय दृष्टिबिन्दुमा भने कथयिताको उपस्थिति कथानकमा 'म' पात्रकै रूपमा भए पनि ऊ अलिपर रहन्छ अर्थात् चित्रणको केन्द्रीय पात्र अर्को नै हुन्छ ।

### ३.३.७.२ बाह्य दृष्टिबिन्दु

कथयिता कथानकभित्र सहभागी नभई बहिरै बसेर अन्य पात्रहरुको उपस्थितिमा घटना घटाउँदै त्यसको वर्णन गरेको हुन्छ भने त्यो बाह्य वा तुतीय पुरुष दृष्टिबिन्दु हो । यो पनि ३ प्रकारको हुन्छ । सर्वदर्शी, सर्वज्ञ र सीमित ।

सर्वज्ञ दृष्टिबिन्दुलाई सर्वदर्शी दृष्टिबिन्दु पनि भनिन्छ । यसमा कथाकारले प्रायः सबै पात्रका भावना, प्रतिक्रिया, विचार आदि समाविष्ट गर्दै ती पात्रको आन्तरिक जीवनको चिनारी दिइन्छ (बराल र अन्य, २०५६:३६) । कथानक बाहिर बसेर पनि सम्पूर्ण घटना तथा यसको कुरा नियाली विस्तापूर्वक बयान गर्दै जान्छ ।

सीमित दृष्टिबिन्दुमा भने कथावाचकको भूमिका सीमित हुन्छ । कुनै खास वर्ग, विचार भिन्न रही सीमित पक्षबाट कुराको चर्चा गर्छ ।

### ३.४ उपन्याससँग अन्य विधाको सम्बन्ध

नेपाली भाषामा साहित्यका विभिन्न विधाहरु प्रचलित छन् । ती विधाहरुमध्ये उपन्यास पनि एउटा महत्वपूर्ण विधा हो । यो आख्यानकै एउटा प्रकार हो । यसको आख्यानत्मक विधाहरूसँग नजिकको सम्बन्ध छ । त्यसैले यसको कथातत्वका जगमा उभिने विधाहरु कथा, आत्मकथा वा जीवनी, महाकाव्य, नाटक आदिसँग तुनला गरेर समानता र असमानता पहिल्याउने प्रयास गर्नु सान्दर्भिक हुन्छ । उपन्याससँग अन्य विधाको सम्बन्ध निम्ना अनुसार देखाइएको छ ।

#### ३.४.१ उपन्यास र कथा

उपन्यास र कथा दुबै साहित्यका आख्यान विधा हो । यी दुबै विधामा कथानक, पात्र वा चरित्र, पर्यावरण, भाषाशैली, उद्देश्य, दृष्टिबिन्दु जस्ता तत्वहरुको प्रयोग गरिन्छ । दुबै विधाको रचना गद्य भाषामा गरिन्छ । दुबै विधामा घटनालाई कल्पनाको सहयोग लिएर प्रस्तुत गरिन्छ । कथामा सामान्तया एउटा कथानक हुन्छ भने उपन्यासमा एक भन्दा बढी

कथानक वा उपकथानक हुन्छ नै । लघुउपन्यास र लामो कथाका बीचमा खासै भिन्नता नरहे पनि कथालाई बढाएर उपन्यास र उपन्यासलाई छोट्याएर कथा बनाउन सकिदैन, त्यसैले यी दुबै आ-आफ्नै किसिमको मौलिक र स्वतन्त्र अस्तित्व भएका नितान्त भिन्न साहित्यिक विधा हो ।

### ३.४.२ उपन्यास र आत्मकथा

लेखकले आफै आफ्नो विषयमा लेखेको जीवन आफ्नो कथा हो । यसलाई आत्मजीवनी पनि भनेको पाइन्छ । यो गद्य भाषामा लेखिने हुनाले केही कुरामा यसमा र उपन्यासमा समानता देखिन्छ भने केही कुरामा भिन्नता पनि देखिन्छ । आत्मकला लेखकको आफ्नै कथा भएकाले आत्मवृत्तात्मक ढाँचामा लेखिन्छ र त्यसमा आत्मगतता पाइन्छ भने उपन्यास अन्य व्यक्तिको कथा भएकाले इतिवृत्तात्मक ढाँचामा देखिन्छ र त्यसमा वस्तुगतता पाइन्छ । आत्मकथामा मुख्य चरित्रका रूपमा एकलो मपात्र रहन्छ, अन्य पात्रको प्रयोग ऐच्छिक रूपमा गर्न सकिन्छ भने उपन्यासमा नायक, नायिका, खलनायक आदि पात्रहरु रहन्छन् । आत्मकथामा सत्यतथ्यको प्रस्तुतिमा जोड दिइने हुँदा यो विधा प्रायः नीरस हुन्छ भने उपन्यासमा कल्पनाको समेत राम्रै गरी सदुपयोग गरिने हुँदा यो विधा रोचक हुन्छ । समग्रमा हेर्दा यी विधामा केही कुरामा असमानता देखिन्छ ।

### ३.४.३ उपन्यास र नाटक

नाटक ज्यादै पुरानो विधा हो भने उपन्यास नयाँ विधा हो । आफ्नो जन्मकाल देखि नै यी दुबै विधा ज्यादै लोकप्रिय विधाको रूपमा देखापर्दै आएका छन् । उपन्यास गद्यभाषामा लेखिन्छ भने नाटक छन्द वा लयमा समेत लेखिएको भेटिन्छ ।

नाटक अभिनय तथा कार्यात्मक विधा हो भने उपन्यास वर्णनात्मक विधा हो । उपन्यासमा गरिने संवाद आदि नाटकीय तत्वको प्रयोग अचेल प्रस्तुत गरिने रेडियो श्रव्यनाटक र मञ्चीय नाटकमा गरिने अत्याधुनिक दृश्य सामग्रीको प्रयोगलाई भने बिसन मिल्दैन । समग्रमा हेर्दा केही समानता देखिए पनि दुबै मौलिक र स्वतन्त्र विधा भएकाले यिनका बीचमा भिन्नता पनि पर्याप्त मात्रामा देखिन्छ ।

### ३.४.४ उपन्यास र महाकाव्य

उपन्यास गद्यको बृहत् रूप हो भने महाकाव्य कविताको बृहत् रूप हो । महाकाव्य प्राचीन समयको लोकप्रिय विधा हो भने उपन्यास आधुनिक समयको लोकप्रिय विधा हो । समानताका दृष्टिले हेर्दा उपन्यास र महाकाव्य दुबै विशाल आकारका विधाका रूपमा देखापर्छन् । दुबै विधामा मानवीय जीवनजगतको व्यापक परिवेशको चित्रण गरिन्छ । दुबै विधाको उद्देश्य जीवनका विभिन्न पक्षहरूको वर्णन गर्नुहुन्छ ।प दुबैमा सामाजिक जनजीवनको सिङ्गो रूप प्रस्तुत गर्ने प्रयास गरिएको हुन्छ ।

उपन्यास र महाकाव्यमा यति धेरै कुराहरूमा समानता हुँदा हुँदै पनि यिनमा असमानता समेत पर्याप्त मात्रामा देखिन्छ । उपन्यास आधुनिक साहित्यिक विधा हो भने महाकाव्य प्राचीन साहित्यिक विधा हो । उपन्यास गद्य भाषामा लेखिन्छ भने महाकाव्य पद्य भाषामा लेखिन्छ । महाकाव्य कवितासाहित्यको एउटा प्रकार हो भने उपन्यास गद्यसाहित्यको एउटा प्रकार हो । महाकाव्य विज्ञ पाठकवर्गको साहित्यिक विधाका रूपमा देखापर्छ भने उपन्यास विज्ञदेखि सर्वसाधारण सम्मका सबै पाठकवर्गको साहित्यिक विधाका रूपमा देखा पर्छ । त्यसैले उपन्यासलाई आधुनिक सर्वपक्षीय गद्य महाकाव्य पनि भनेको पाइन्छ ।

### ३.४.५ उपन्यास र निबन्ध

उपन्यास र निबन्ध विधामा भाषिक माध्यम र शैलीजस्ता केही कुरामा समानता देखिन्छ भने दुबै नितान्त स्वतन्त्र र मौलिक विधा भएकाले यिनमा भिन्नता पनि पर्याप्त मात्रामा देखिन्छ । यी दुबै विधाको रचना गद्य भाषामा गरिन्छ । दुबै विधा पाठ्य वा श्रव्य विधामा रूपमा रहेका छन् । उपन्यासमा कथावस्तुको भूमिका महत्वपूर्ण हुन्छ भने निबन्धमा विचारको भूमिका महत्वपूर्ण हुन्छ । उपन्यासमा चरित्र चित्रणमा जोड दिन्छ भने निबन्धमा यसलाई महत्व दिइदैन । कथावस्तु चरित्र आदिको स्वभाविक प्रयोगले उपन्यासको भाषाशैली रोचक हुन्छ भने विचारको बोझाका कारण निबन्धको भाषा प्रायः निरस हुन्छ ।



### ३.५ निष्कर्ष

विराटपर्व थालिएको उपन्यासको विकासक्रमले हालसम्म तीन चरण पार गरिसकेको छ । वि.सं. १८२७-१९४५ सम्म प्राथमिक काल, वि.सं. १९४६-१९९० सम्म माध्यमिक काल र वि.सं. १९९१देखि हालसम्म आधुनिक काल गरी उपन्यासकारहरूले विभाजन गरेका छन् । यसरी उपन्यासको परिभाषामा पाश्चात्य र पूर्वीय विद्वानहरूका परिभाषालाई पनि प्रस्तुतिएको छ । उपन्यासका तत्वहरूको निरूपणका सन्दर्भमा सबै साहित्यकारहरूको एउटै मत नभए पनि उपन्यासको निर्माणका लागि आवश्यक तत्वहरू, कथानक, चरित्रचित्रण, संवाद, भाषाशैली, वातावरण, उद्देश्य, दृष्टिबिन्दु, विन्यासहरू रहेका छन् । यसरी उपन्यासका अन्य विधाको सम्बन्धमा पनि देखाइएको छ ।

## चौथो परिच्छेद

नेपाली उपन्यासको विकासक्रममा 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासको स्थान

### ४.१ नेपाली उपन्यासको विकासक्रम

वर्तमानमा नेपाली साहित्यमा प्रचलित उपन्यास विधालाई पाश्चात्य साहित्यको देन मानिन्छ । अङ्ग्रेजी साहित्यमा छोटो रमाइला आख्यानबाट आरम्भ भएर अठारौँ शताब्दीमा विकसित भएको उपन्यास विधा हिन्दी र बङ्गाली साहित्य हुँदै नेपाली साहित्यमा बीसौँ शताब्दीमा चित्रिएको पाइन्छ । अङ्ग्रेजी साहित्यमा जस्तै नेपाली साहित्यमा पनि आधुनिक स्वरूपका उपन्यासको पृष्ठभूमिका रूपमा संस्कृत भाषाबाट नेपाली भाषामा अनुवाद गरिएका व्यवहारोपयोगी धर्म, नीति, संस्कार, संस्कृति, औषधिउपचार, प्रेम आदि सम्बन्धी आख्यानलाई लिइन्छ र अनुदित आख्यानको थालनी शक्ति वल्लभ अर्यालको 'महाभारत विराट्पर्व' (१८२७) बाट भएको मानिन्छ । यसैलाई प्रस्थानबिन्दु मान्दा त्यस बेला (१८२७) देखि हालसम्मको नेपाली उपन्यासको विकासक्रमको समयावधिलाई तीन कालमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।

- १) प्राथमिक काल (वि.सं. १८२७ देखि १९४५ सम्म)
- २) माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६ देखि १९९० सम्म)
- ३) आधुनिक काल (वि.सं. १९९१ देखि हालसम्म)

#### ४.१.१ नेपाली उपन्यासको पृष्ठभूमिकाल (प्राथमिक काल) वि.सं. १८२७-१९४५)

सत्रौं शताब्दीमा पूर्ण काल्पनिक रूपमा वीरताले भरिएको आख्यान 'डन क्वीजोट' स्पेनिस भाषामा निस्क्यो जसले सम्पूर्ण युरोपभरी प्रभाव पायो । त्यसरी नै नेपाली उपन्यासको सुरुवात पनि गद्य साहित्यको विकाससम्म पुग्दा आख्यानबाट नै भएको देखिन्छ । नेपाली भाषाको पुर्खा संस्कृत भाषा भएकाले संस्कृतकै आख्यानमा नेपाली आख्यान पनि भर पर्दछ । पहिलो आख्यान शक्तिवल्लभ अर्यालको 'हाँस्यकदम्ब' (वि.सं. १८२५) लाई मानिन्छ । यस समयमा अनुदित भएका संस्कृतका आख्यानत्मक कृतिहरुमा नीति उपदेशमूलक, धार्मिक वीरताको भावना छचल्किएका र मनोरञ्जनात्मक कृतिहरु पाइन्छन् र उक्त कृतिहरुमा उपन्यासको ऋभल्को पाइने हुँदा यो एक सय अठार वर्षको समयावधिलाई पृष्ठभूमिकाल भनिन्छ ।

यसरी कथा र उपन्यास नै छुट्ट्याउन नसहिने गद्य आख्यानात्मक कृतिहरुलाई निम्नानुसार तालिमकामा प्रस्तुत गर्न सकिन्छ ।

| रचना                   | लेखक              | रचना समय    |
|------------------------|-------------------|-------------|
| १. 'महाभरत विराटपर्व'  | शक्तिवल्लभ अर्याल | १८२७ वि.सं. |
| २. 'हाँस्यकदम्ब'       | शक्तिवल्लभ अर्याल | १८५५ वि.सं. |
| ३. 'हितोपदेश मित्रलाभ' | भानुदत्त          | १८३३ वि.सं. |
| ४. 'पिनासको कथा'       | अज्ञात            | १८७२ वि.सं. |
| ५. 'तीन आहानहरु'       | मुन्सी            | १८७६ वि.सं. |
| ६. 'भक्तिकाण्ड रामायण' | रामदाश            | १८९२ वि.सं. |
| ७. 'पिनासको विनास'     | बेनामे            | १८७२ वि.सं. |
| ८. 'स्वस्थानी ब्रतकथा' | मुन्सी            | १८७८ वि.सं. |

आदि कृतिहरुमा आख्यान तत्व रहेकाले उपन्यासको बीज रूप पाइन्छ ।

#### ४.१.२ माध्यमिक काल (वि.सं. १९४६-१९९०)

नेपाली गद्य साहित्यको विकासमा वि.सं. १९४६ देखि नयाँ युगको सूत्रपात भएको देखिन्छ अथवा वि.सं. १९४६ देखि उपन्यासको विकासक्रममा दोस्रो मोठ सुरु हुन्छ । कतिपय विद्वानहरूले यो समयलाई नेपाली उपन्यासको निर्माण काल भनेर मानेका छन् । यो समयमा वास्तविक उपन्यास नै नभए पनि औपन्यासिक शरीर भएको रचनाको आधार कृति शिवदत्तको 'वीरसिक्का' (वि.सं. १९४६) ले यस युगको प्रतिनिधित्व गरेको छ । "यसभन्दा अघि रहेको धार्मिक, नैतिक र औपदेशिक परम्पराबाट केही अगाडि बढी रहस्य, रोमाञ्च, स्वाप्निल संसार काल्पनिक विलाश अतिरञ्जना, अद्भूत र रोमाञ्चकारी घटनाले साथै तिलस्मी र जासुसी कथाहरूको एकमात्र श्रोत 'वीरसिक्का'बन्नु पुग्यो ।"

आख्यानान्तात्मक चरित्र र अनुदित रचनागत प्रवृत्तिलाई अँगाल्नु मानै 'वीरसिक्काले' महत्त्व रहे पनि कथावस्तु र चरित्रको प्रस्तुतिका आधारमा हेर्दा यो पनि उपन्यास नभएर उपन्यासको नजिक पुगेको कृति मात्र हो । "यसले प्रारम्भ गरेको प्रवृत्तिलाई अँगालेर अघि बढेका कृतिहरू हुन : हरिहर शर्माको 'भागवत भक्ति विलासिनी' (१९४६), चिरञ्जीवी पौड्यालको 'प्रेमसागर' (१९५० तिर) र 'सुरवर्णव' (१९५०) नरदेव पाण्डेद्वारा प्रकाशित 'नलोपाख्यान' (१९५९) आदि ।"

पत्रपत्रिकामा 'गोरखापत्र' (२०५७) 'उपन्यास तरङ्गिणी' (१९५९), 'सुन्दरी' (१९६३), 'चन्द्र' (१९७१) गोरखाली आदिको प्रकाशनले नेपाली उपन्यासको विविध रूपमा धारण गर्‍यो । यस अवधिको प्रथम मौलिक उपन्यास सदाशिव शर्माको 'महेन्द्र प्रभा' (१९५९) लाई लिइन्छ । यो समयमा पनि प्राथमिक कालको अनुवाद गर्ने प्रवृत्तिलाई छोडेको थिएन 'वेतालपच्चिसी', 'सुकवहत्तरी', 'सिंहासन बहत्तरी', 'विदुलापुत्र संवाद', वृहजजातक र प्रेमसागर जस्ता आख्यानको उदय भयो । यी कृतिहरू मूलभाषाबाट हिन्दीमा र हिन्दीबाट नेपालीमा लेखिएका हुनाले यिनमा नेपालीपनको मौलिकता त्यती भेटिँदैन ।" तत्कालीन मनोरञ्जनको निम्ति तयार गरिएका उपयुल्लिखित कृतिहरूमा आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक साँस्कृतिक चेतनाको मूल्य कम पाइन्छ । यस्ता रचनाहरूले समाजको संरचनामा नै अवरोध

खडा गरेका छन् । यसै गरी सदाशिव शर्माले हिन्दीमा देवकीनन्दन खत्रीद्वारा लेखिएको 'चन्द्रकान्त' र चन्द्रकान्ता सन्तति भन्ने जासुसी उपन्यासको नेपालीमा रुपान्तरण गरेका थिए ।

वि.सं. १९६० मा गिरीवल्लभ जोशीद्वारा 'वीरचरित्र' छापियो । यो लेखाइएका हिसाबले १९५८ मा लेखिएको भएतापनि छपाईले 'महेन्द्रप्रभा' भन्दा कान्छो भएको छ । उक्त उपन्यासरूपी कृतिमा नेपालको वन, पाखा, माटो, हावा, पानी प्रकृति र जातिको सुगन्ध पाइन्छ ।

यस कालका कृतिहरूमा धार्मिक, पौराणिक धारा, नैतिक-औपदेशिक धारा, मनोरञ्जनात्मक धारा सामाजिक सुधारात्मक धारामा प्रवाहित भएको पाइन्छ । यस कालका अवधिमा राजधानी काठमाडौँबाट प्रकाशित 'गोरखापत्र' र सुन्दरी पत्रिकामा क्रमशः उपन्यासहरू छापिन थाले । 'सुन्दरी' मा रामप्रसाद सत्यालको 'कलावती' (१९६३) र 'मधुवाला' (१९६४) सदाशिव शर्माको 'सुन्दरी भूषण' (१९६३) आदि र गोरखापत्रमा प्रकाशित करिव एक दर्जन जति उपन्यासहरू मध्ये 'यमपञ्चक प्रपञ्चक' (१९९३) नै प्रमुख मानिन्छ । यसबेला युद्धले तातेको विश्वको तापका कारण घटेका नरसंहारकारी घटनाहरूले गर्दा मानिसहरूमा चेतनाको ज्वाला दन्कन थाल्यो । यो ज्वालाबाट नेपाल र नेपालीहरू पनि मुक्त रहन सकेनन् । 'मकैपर्व' (१९७०) युद्धकै परिणाम हो । यसमा ऐयासी, शोषक सामन्तीहरूको विलाशितापूर्ण जीवनप्रति आक्रोश व्यक्त गरिएकाले गर्दा लेखकहरूमा जागरण एवम् सिर्जनाको लहर फैलिएको छ । वि.सं. १९७८ मा वेदनाथ आचार्यद्वारा लिखित 'दयाकी भावी' र अम्बालिकादेवीद्वारा लिखित 'राजपूवतरङ्गिणी' जस्ता कृति पनि जासुसी तिलस्मी मात्र नभएर केही मात्रामा सामाजिक चेतनाको विकास भएको पाइन्छ तर यस समयमा उपन्यास लेखिएको पाइन्छ ।

माध्यमिककालीन उपन्यासलाई पनि विशेषताको आधारमा तीन भागमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।

#### ४.१.२.१ जासुसी तिलस्मी उपन्यास

यस्ता उपन्यासले पाठकहरूलाई हृदयमा आशा, निराशा, भय आदिको तीव्र भावनाहरू उठाएर अन्त्यमा उचित समाधान दिई जिज्ञाशा पुरा गराउँछ । यसले समाजमा अपराधी गतिविधि सञ्चालन गर्नमा हतोत्साही गरी समाज सुधारको आग्रह गर्दछ । यस प्रकारका उपन्यासहरू निम्नानुसार छन् ।

| उपन्यास                 | उपन्यासकार      | प्रकाशन समय    |
|-------------------------|-----------------|----------------|
| १. 'वीरसिक्का'          | सदाशिव शर्मा    | १९४६ वि.सं.    |
| २. 'महेन्द्र प्रभा'     | प. सदाशिव शर्मा | १९५९ वि.सं.    |
| ३. 'डा. सूर्यप्रसाद'    | पद्मनाथ सापकोटा | १९७२ वि.सं.    |
| ४. 'महारानी प्रियम्बदा' | पद्मनाथ सापकोटा | १९७३ वि.सं.    |
| ५. 'वीरचरित्र'          | गीरिवल्लभ जोशी  | १९२४-८० वि.सं. |

#### ४.१.२.२ धार्मिक, पौराणिक र नीतिपरक उपन्यास

नेपाली साहित्यको इतिहासमा संस्कृत र हिन्दी भाषाको प्रशस्त प्रभाव परेको पाइन्छ । यस अवधिमा संस्कृत भाषाका धार्मिक, पौराणिक (जसले मानिसमा धर्मप्रति आस्था जगाई नीतिवान र कर्तव्यपरायण बनाउँछ) कृतिको अनुवाद भएको पाइन्छ । यस प्रकारका केही कृतिको उदाहरणहरू यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ :

| रचना               | रचनाकार            | रचना समय    |
|--------------------|--------------------|-------------|
| १. 'प्रेमसागर'     | चिरञ्जीवी पौड्याल  | १९४७ वि.सं. |
| २. 'दुर्गासप्ताती' | हरिहर शर्मा        | १९४८ वि.सं. |
| ३. 'नलोपाख्यान'    | कपिलदेव शर्मा      | १९५९ वि.सं. |
| ४. 'वेदान्तसागर'   | तीर्थप्रसाद आचार्य | १९६० वि.सं. |
| ५. 'उपदेश मञ्जरी'  | भोजराज पाण्डे      | १९७६ आदि ।  |

### ४.१.२.३ विकृति विरोधी उपन्यास

यसकालमा बेनामको 'यसपञ्चक-प्रपञ्चक' (१९६३) चक्रपरिक्रमा (१९७३) जस्ता औपन्यासिक कृतिहरुको समाजमा देखिने विकृति, विसङ्गति परिवेश चित्रण गर्दै समाज सुधारको आह्वान गरेका छन् । उक्त कृतिमा सामाजिकताको कृत्रिम प्रस्तुति गर्न रोमाञ्चक शैली र अतिमानवीय पात्रको प्रयोग गरेको पाइन्छ । यस किसिमका केही उपन्यासहरु यसप्रकार छन् :

| रचना                   | रचनाकार          | रचना समय    |
|------------------------|------------------|-------------|
| १. 'महारानी प्रियंबदा' | विज्ञानविलास     | १९७३ वि.सं. |
| २. 'पद्मकुमारी'        | पहलमानसिंह स्वार | १९७४ वि.सं. |
| ३. 'दयाककी भावी'       | वेदनाथ आचार्य    | १९७९ वि.सं. |
| ४. 'त्रिवेणी'          | महानन्द सापकोटा  | १९८५ वि.सं. |

### ४.१.३ नेपाली उपन्यासको आधुनिककाल (वि.सं. १९९१ - हालसम्म)

वि.सं. १९९१ देखि हालसम्मको समयावधिलाई नेपाली उपन्यासको आधुनिक काल भनिन्छ । यस अवधिमा विषयवस्तुगत, प्रवृत्तिगत र श्रोताका दृष्टिले विविध किसिमका उपन्यासहरु प्राप्त भएका छन् । त्यसकारण यस औपन्यासिक काल अवधिलाई धेरै विद्वानहरुबाट विविध दृष्टिकोणले व्याख्या विश्लेषण गरी चरणगत विभाजन गरिएको पाइन्छ । "यस सन्दर्भमा डा. दयारम श्रेष्ठ तथा ऋषिराज बरालद्वारा गरिएको चिन्तन निकै बैज्ञानिक देखिन्छ ।"

एयारी, क्षणिक मनोरञ्जनमूलक र नीतिवादी प्रवृत्तिलाई त्यागेर औपन्यासिक विश्लेषणले युक्त सामाजिक परिवेशलाई विषयवस्तुको रूपमा लिएर रुद्रराज पाण्डेको 'रुपमती' (वि.सं. १९९१) प्रकाशन भई नेपाली उपन्यासको आधुनिक कालको सुत्रपात भयो । विष्णुचरण श्रेष्ठको 'सुमती' उपन्यास 'रुपमती' भन्दा अगाडिको भएर पनि प्रकाशनका दृष्टिले 'रुपमती' भन्दा चार-पाँच महिनापछि मात्र प्रकाशित भयो । 'रुपमती' उपन्यासले जेष्ठताको पगरी लगाएको छ र यसले मध्यम वर्गीय परिवारको सामाजिक विषयवस्तुलाई

उपन्यासको प्रमुख कथावस्तु बनाएर नारीमाथि केन्द्रीत भई कुशत गृहिणीका क्रियाकलापको चित्रण गर्न खोजेको छ । माध्यमिककालीन र आधुनिककालीन अथवा नयाँ पुराना औपन्यासिक मान्यतालाई जोड्ने साँधु वा सीमानाको रूपमा 'रूपमती' उपन्यास देखा पर्दछ । तर जति सामाजिक यथार्थता आधुनिक नवीन औपन्यासिक शैली प्राप्त गर्नुपर्ने थियो त्यति चाहिँ यसले पूर्ण रूपमा ग्रहण गर्न सकेको छैन । 'रूपमती' को आदर्शवादी प्रवृत्तिलाई च्यात्तै वि.सं. १९९३ मा प्रकाशित रूपनारायण सिंहको 'भ्रमर' ले स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तिलाई ग्रहण गर्दछ । "कवितात्मक भाषाशैलीले भरिएको सुसज्जित 'भ्रमर' लाई कतिपय विद्वानहरूले नेपाली उपन्यासको इतिहासमा आधुनिक कालको भुल्केघाम भनेका छन् ।" रुद्रराज पाण्डेका अन्य उपन्यासहरूमा 'चम्पाकाजी' (१९९३) छापियो तर सामाजिक मूल्य 'रूपमती'ले जति अरुले पाउन सकेनन् । रूपनारायण सिंहको 'भ्रमर' (१९९३) ले बहुमुखी चरित्र, कोमल भाषाशैली, यथार्थवादी धारातल, सुसङ्गठित कथावस्तु जस्ता विशेषताहरू अँगालेको पाइन्छ तर भाषाभूमि चाहिँ मात्र प्रेममा केन्द्रित रह्यो ।

'रूपमती' र 'भ्रमर' को आदर्शवादी, स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति सँगै आदर्शोन्मुख यथार्थवाद प्रवाहित भएको करिब बाह्र वर्षको अन्तराल पश्चात वि.सं. २००४ सालमा प्रकाशित लैनसिंह बाइदेलको 'मुलुक बाहिर' उपन्यासले नेपाली उपन्यासको आधुनिक काललाई पश्चात्य यथार्थवाद प्रदान गरेर नयाँ दिशा, निर्देश गर्दछ । 'रूपमती' र मुलुक बाहिर प्रकाशन भएको बीच समयमा पनि धेरै उपन्यासहरू लेखिएका छन् । काशीबहादुर श्रेष्ठको 'उषा' (१९९५) र 'वचन' '२००१', भवानीभक्त सिंहको 'यौवनको आँधी' (१९९६), पद्मराज र टेकाराज मिश्रको 'रजवन्धकी' (१९९६) र 'रामकृष्ण कुँवर राणा' (१९९९) आदि उपन्यास देखा पर्दछन् तर उपर्युक्त लिखित कृतिहरूले युगीन चेतनाको खोलो बगाउन नसकेकोले आधुनिक कालको प्रारम्भको श्रेय 'रूपमती' र 'भ्रमर' लाई नै दिन सकिन्छ ।

यय दृष्टिले हेर्दा नेपाली उपन्यासमा देखिने परम्परागत प्रवृत्तिहरूमा नैतिक चेतना, उपदेशात्मक र स्वच्छन्तावादी प्रवृत्ति बढी रहेको देखिन्छ । भाषाशैलीमा बढी औपचारिकताको आभाष पाइन्छ भने पात्रहरूमा बढी उच्च कुलीन वर्गका पात्रहरूको प्रयोग



गरिएको छ । रसमा श्रृङ्गार रसको प्रधानता छ । पछि गएर वाङ्मेलले मात्र करुण रस र निम्न वर्गका पात्र छानेर नौलो प्रयोग गरेका छन् । वाङ्मेलको साहित्यिक यात्रा एउटै विधामा मात्र सिमित नरहेर कथा, कविता र जीवनी लेखन जस्ता फाटसम्म फैलिएको छ ।

उपन्यास शिल्पमा दृष्टिले कोसढुङ्गे ठहर्ने वाङ्मेलको उपन्यास मुलुक बाहिर (२००४) ले सामाजिक यथार्थवादको सम्पूर्ण ढोका खोलिदिएको छ ।

वि.सं. १९९१ देखि वि.सं. २००७ सम्मको समयलाई नेपाली उपन्यासको आधुनिक कालको प्रथम चरण मानिन्छ । यस कालमा समयक्रम अनुसार निम्न उपन्यासहरु लेखिए विष्णुचरण श्रेष्ठको 'सुमती' (१९९१) र 'भिष्मप्रतिज्ञा' (१९९३), रुपनारायण सिंहको 'भ्रमर' (१९९३), काशीबहादुर श्रेष्ठको 'उषा' (१९९५), धर्मरन्त बौद्धको समाजको एउटा झलकमा, (१९९५) शिवप्रसाद शम्शोर थापाका 'श्रीकृष्ण चरितामृत' (१९९८), टुकाराज पदमराज मिश्रको 'रजबन्धकी' (१९९६) आदि हुन भने लैनसिंह वाङ्मेलको 'मुलुक बाहिर' (२००४) र 'माइतघर' (२००६) बबरबहादुर राणाको 'सपना कि विपना' (२००५) आदि उपन्यासहरु बढी महत्वपूर्ण उपन्यास मानिन्छन् । यी उपन्यासहरुले आधुनिककालको औपन्यासिक प्रवृत्तिको प्रतिनिधित्व गर्दै आगामी चरालाई टेवा पुऱ्याएका छन् ।

आधुनिक कालमा उपन्यासका विभिन्न मोड र धाराहरु देखा पर्दछन् । कुन-कुन धारामा कसकसले कलम चलाए केही उपन्यास र उपन्यासकारको नाम उल्लेख गर्दा आधुनिक उपन्यासका विविध-धाराको झलक देखिने भएको हुँदा यहाँ धारागत उपन्यास र उपन्यासकारको उल्लेख गरिएको छ ।

#### ४.१.३.१ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी धारा (वि.सं. १९९१ बाट सुरु)

यस धाराका उपन्यासहरुमा सामाजिक गृहस्थ जीवनमा प्रचलित इश्या, वैमनस्यता गृहकलह, सासू-बुहारी बीचको सम्बन्ध जस्ता कुप्रथाहरुको अन्त्य गरी समाज सुधाको आवहान गरिएको हुन्छ । यसमा माध्यमिककालीन श्रृ गरी समाज सुधाको आवहान गरिएको हुन्छ । यसमा माध्यमिककालीन श्रृङ्गारिक जासुसी, तिलस्मी प्रवृत्तिको मुक्त गरिएको छ । यस

धाराका उपन्यासहरुमा सामाजिक ऐतिहासिक विषयबस्तुलाई पनि लिएर उपन्यास लेखिएको छ । यस धाराका केही प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारहरु यसप्रकार छन् :

| उपन्यास                   | उपन्यासकार             |
|---------------------------|------------------------|
| १. 'रुपमती' (१९९१)        | रुद्रराज पाण्डे        |
| २. 'सुमती' (१९९१)         | विष्णुचरण श्रेष्ठ      |
| ३. 'भ्रमर' (१९९६)         | रुपनारायण सिंह         |
| ४. 'उषा' (१९९५)           | काशीबहादुर श्रेष्ठ     |
| ५. 'आगत' (२०३२)           | भवानी भिक्षु           |
| ६. 'यौवनको आँधी' (१९९६)   | भवानी भक्त सिंह प्रधान |
| ७. 'सपना कि विपना' (२००५) | ववरबहादुर राणा आदि ।   |

#### ४.१.३.२ स्वच्छन्दतावादी धारा (वि.सं. १९९३ बाट सुरु)

प्रेम, साहस, मानवता, प्राकृतिक सौन्दर्य वीरताको विषय स्वच्छन्द शैली, अदभूत आश्चर्यजनक घटना, भावनाको बगाई, अज्ञात रहस्यमा विश्वास जस्ता कुराहरुलाई सुव्यवस्थित गरी लेखिएको उपन्यासलाई स्वच्छन्दतावादी उपन्यास भनिन्छ । यो धारामा कलम चलाउने मुख्य-मुख्य उपन्यास र उपन्यासकारको नाम यसप्रकार छ ।

| उपन्यास           | उपन्यासकार        | प्रकाशन समय     |
|-------------------|-------------------|-----------------|
| १. 'भ्रमर'        | रुपनारायण सिंह    | १९९३ वि.सं.     |
| २. 'अशेष यात्रा'  | कृष्णसिंह मोक्तान | २०२१ वि.सं.     |
| ३. 'उजेलो छाया'   | मोहनबहादुर मल्ल   | २००८ वि.सं.     |
| ४. 'निर्दोष कैदी' | हमराज आचार्य      | २०५४ वि.सं.     |
| ५. 'समयको हुरी'   | मोहनबहादुर मल्ल   | २००८ वि.सं. आदि |

#### ४.१.३.३ सामाजिक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २००४ बाट सुरु)

यस धारामा समाज जस्तो त्यस्तै फोटोग्राफरले देखाए भै समाजको यथार्थ चित्रण गरिन्छ । गाँस बास र कपासको समस्यामा जकडिएर बाँच्न विवश नेपाली निम्न वर्गीय

मानिसहरुले हातमुख जोडने समस्याको समाधानको निम्ति विदेशिन बाध्य नेपालीको चित्रण गरिएको उपन्यास 'मुलुक बाहिर' बाट यो धाराको सूत्रपात भएको छ । यस धारा केही उपन्यासहरु र उपन्यासहरुको नाम यसप्रकार छ :

| उपन्यास             | उपन्यासकार         | प्रकाशन काल |
|---------------------|--------------------|-------------|
| १. 'मुलुक बाहिर'    | लैनसिंह बाड्देल    | वि.सं. २००४ |
| २. 'माइतघर'         | लैनसिंह बाड्देल    | वि.सं. २००६ |
| ३. 'बसाई'           | लीलबहादुर क्षेत्री | वि.सं. २०१४ |
| ४. 'मन'             | लीलाध्वज थापा      | वि.सं. २०१५ |
| ५. 'घामका पाइलाहरु' | ध.च. गोतामे        | वि.सं. २०३५ |
| ६. 'उत्सर्ग प्रेम'  | राजेश्वर देवकोटा   | वि.सं. २०४४ |

#### ४.१.३.४ ऐतिहासिक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २००६ बाट सुरु)

यस धारामा इतिहासमा घटेका घटनाहरुलाई जस्ताको त्यस्तै देखाइन्छ । दरवारीया षड्यन्त्रको प्रस्तुत गरी मानव माथि गरिने दानवी प्रवृत्ति र त्यसबाट उत्पन्न आतङ्कको चित्रण गरी प्रयासः राणाकालीन समयमा घटेका सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक घटनाहरु देखाउँदै तत्कालीन न्याय व्यवस्थाको चित्रण गरिएको हुन्छ । यस धाराका उपन्यास र उपन्यासकारका केही उदाहरणहरु यस प्रकार छन् :

| उपन्यास            | उपन्यासकार        | प्रकाशन काल |
|--------------------|-------------------|-------------|
| १. 'वसन्ती'        | डयमन शमसेर राणा   | २००३ वि.सं. |
| २. 'सेतो बाघ'      | डयमन शमसेर राणा   | २०३० वि.सं. |
| ३. 'खानदान'        | खगेन्द्र के.सी.   | २०३५ वि.सं. |
| ४. 'जङ्गबहादुर'    | श्रीकृष्ण श्रेष्ठ | २०५१ वि.सं. |
| ५. 'फाँसीको फन्दा' | दौलतविक्रम विष्ट  | २०५३ वि.सं. |

आदि उपन्यासहरु यस घटनामा लेखिए ।

#### ४.१.३.५ अतियथार्थवादी धारा (वि.सं. २००८ बाट सुरु)

यो धारा स्वतस्फूर्त लेखनमा आधारित छ । यो धाराको सुरुवात 'लङ्काको साथी' ( २००८) बाट भयो । यस धारामा स्वप्निल भावतरङ्गका माध्यमबाट व्यक्तिको सक्कली स्वरूपको चित्रण चेतनप्रवाह शैलीमा गरिन्छ । यान्त्रिक र आधुनिक सभ्यताप्रति घृणा र मानवतप्रति आस्था देखाइन्छ । यस धाराका उपन्यासहरु यस प्रकार छन् ।

| उपन्यास               | उपन्यासकार           | प्रकाशन काल |
|-----------------------|----------------------|-------------|
| १. 'लङ्काको साथी'     | लैनसिंह बाङ्गेल      | २००८ वि.सं. |
| २. 'पल्लो घरको भ्याल' | गोविन्दबहादुर गोठाले | २०१६ वि.सं. |
| ३. 'घाम डुवेपछि'      | अर्जुन निरौला        | २०३३ वि.सं. |
| ४. 'गौरी'             | हिरण्य भोजपुरे       | २०५४ वि.सं. |

आदि उपन्यासहरु यो धारामा लेखिएका छन् ।

#### ४.१.३.६ आलोचनात्मक यथार्थवादी धारा (वि.सं. २०११ बाट सुरु)

यसमा समाजमा रहेका विकृत विसङ्गत, शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचारप्रति आलोचना गरिन्छ । यस धारामा सामाजमा नारी पुरूष बीचको असमान अवस्था, नारीलाई किनबेच गर्ने र भोग्यवस्तु सम्झने परिपाटीप्रति तीखो व्यङ्ग्य गरी शोषण, दमन, सामन्ती व्यवस्था, अन्धविश्वास, विकृति, विसङ्गति, जस्ता कृतिमताको भण्डाफोर गरिएको हुन्छ । यस धाराका उपन्यासकार र प्रमुख उपन्यासहरु यसप्रकार छन् ।

|                       |                      |             |
|-----------------------|----------------------|-------------|
| १. 'पल्लो घरको भ्याल' | गोविन्दबहादुर गोठाले | वि.सं. २०१६ |
| २. 'अनुराधा'          | विजय मल्ल            | वि.सं. २०१८ |
| ३. 'तीनघुम्ति'        | वि. प्रसाद कोइराला   | वि.सं. २०२५ |
| ४. 'नरेन्द्र दाइ'     | वि. प्रसाद कोइराला   | वि.सं. २०४५ |
| ५. 'कुमारी शोभा'      | विजय मल्ल            | वि.सं. २०३९ |

आदि उपन्यासहरु मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी उपन्यास हुन् ।

#### ४.१.३.७. प्रकृतवादी धारा (वि.सं. २०१६ बाट सुरु)

प्रकृतवादी दर्शन डार्विनको विकासवादबाट सुरु भएर जीववैज्ञानिक र भौतिकशास्त्रीय मान्यताका आधारमा यो धारा बन्दछ । यो धारामा मान्छे र समाजको प्रकृति वा स्वभावमा अन्तर्निहित धर्म र प्राकृतिक प्रक्रियाको अध्ययन गरिन्छ, सार्थ मानिसका आदिमा पाशविक प्रवृत्तिको चित्रण यस धाराका उपन्यासमा पाइन्छ । यस धाराका केहि प्रमुख उपन्यास र उपन्यासकारको नाम प्रकार छ :

| उपन्यास         | उपन्यासकार       | प्रकाशन काल |
|-----------------|------------------|-------------|
| १. 'खैरेनी घाट' | शङ्कर कोइराला    | २०१८ वि.सं. |
| २. 'पाइप नं. २' | भवानी भिक्षु     | २०३४ वि.सं. |
| ३. 'आज रमिता छ' | इन्द्रबहादुर राई | २०२१ वि.सं. |

आदि उपन्यासहरु यस धारामा लेखिएका छन् ।

#### ४.१.३.८ विसङ्गतिवादी धारा

कुण्ठित मानवीय आकांक्षा, अनियन्त्रिक यथार्थ, विकृति र विसङ्गत जीवनको प्रस्तुति यस धाराका उपन्यासमा गरिन्छ । जीवनलाई असन्तुलित रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ विशेषतः निरिह, निरुद्देश्य, निरुपाय, मानवको प्रस्तुति यस धारामा गरिन्छ । यो धारामा लेखिएका उपन्यासहरु र उपन्यासकारहरु र उपन्यासकारहरु यसप्रकार छन् :

| उपन्यास             | उपन्यासकार       | प्रकाशन काल |
|---------------------|------------------|-------------|
| १. 'आज रमिता छ'     | इन्द्रबहादुर राई | २०२१ वि.सं. |
| २. 'शिरीषको फूल'    | पारिजात          | २०२२ वि.सं. |
| ३. 'महत्ताहीन'      | पारिजात          | २०२५ वि.सं. |
| ४. 'चपाइएका अनुहार' | दौलतविक्रम विष्ट | २०३० वि.सं. |

आदि उपन्यासहरु यो धारामा देखा पर्दछन् ।

### ४.१.३.९ अस्तित्ववादी धारा

मानवको जन्म, मृत्यु, कुण्ठा, सन्त्रास आदिको अर्थ खोज्ने माध्यमका आधारमा नेपाली उपन्यास परम्परामा पारिजातको 'शिरीषको फूल' बाट यो धाराको सुरुवात भएको छ । यसमा नारीको अस्मिता, विसङ्गतिप्रति घृणा, यौन विकृतिले ल्याएको पलायनवादी चिन्तन र अस्तित्ववादी चिन्तनको अभिव्यक्ति यस धारामा गरिन्छ । यस्ता केही प्रमुख उपन्यासहरु यस प्रकार छन् :

| उपन्यास          | उपन्यासकार               | प्रकाशन काल |
|------------------|--------------------------|-------------|
| १. 'शिरीषको फूल' | पारिजात                  | वि.सं. २०२२ |
| २. 'महत्ताहीन'   | पारिजात                  | वि.सं. २०२५ |
| ३. 'तीन्धुमती'   | विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला | वि.सं. २०२५ |
| ४. 'पागलवस्ती'   | सरुभक्त                  | वि.सं. २०४८ |

आदि उपन्यासहरु यस धारामा देखा पर्दछन् ।

### ४.१.३.१० समाजवादी यथार्थवादी धारा

यो धारा कार्लमाक्सको द्वन्द्वान्त्मक भौतिकवादी दर्शनबाट प्रभावित भई सामाजिक परिवर्तन र विकासको चित्रण गर्दछ । शोषणबाट मुक्तिको निम्ति क्रान्ति र विद्रोहको एवम् वर्गीय द्वन्द्वको प्रस्तुति र प्रतिक्रियावादी शक्तिसँग भिडेर क्रान्तिकारी बाटोबाट राज्य सत्ताको नियन्त्रणको अभिव्यक्ति यो धाराका उपन्यासमा गरिएको हुन्छ । जनताको संगठित शक्तिको अगाडि शोषकहरुले टिक्न नसक्ने यथार्थ यो धाराका उपन्यासमा प्रस्तुत गरिन्छ । यस धाराका उपन्यासहरु हुन् :

१. डि.पी अधिकारीको 'आसमाया' वि.सं. २०२५ ।
२. खगेन्द्र संग्रौलाको 'आमाको छटपटी' वि.सं. २०३४ ।
३. पारिजातको 'पर्खालभित्र र बाहिर' वि.सं. २०३५ ।
४. रमेश विकलको 'अविरल बग्दछ इन्द्रावती' वि.सं. २०३९ आदि उपन्यासहरु यो धारामा देखा पर्दछन् ।

#### ४.१.३.११ प्रयोगवादी धारा

कथानक, चरित्र, वातावरण जस्ता उपन्यासका तत्वहरुलाई बहिष्कार गरी लेखिने अमूर्त लेखनलाई प्रयोगवादी धारा भनिन्छ । यसमा समाजमा लुकीछिपी रहेका सत्यहरुलाई चेतनप्रवाह शैलीमा विम्वात्मक भाषा प्रयोग गरेर प्रस्तुत गरिन्छ । यस प्रकारका उपन्यासहरुमा निम्न कृति देखापर्दछ ।

१. ध्रुवचन्द्र गौतमको 'अन्त्यपछि' वि.सं. २०३४ ।
२. मञ्जुलको 'छेकुडोल्मा' वि.सं. २०२६ ।
३. कवितारामको 'वक्रपत्र' वि.सं. २०४६ ।
४. दशजना लेखकको संयुक्त लेखन 'आकाश विभाजित छ' वि.सं. २०३१ प्रस्तुत उपन्यासहरुले प्रयोगवादी धारालाई अँगालेका छन् ।

#### ४.१.३.१२ मिथकीय धारा

मानव सभ्यताको आदिम संस्कारहरुको नवीन दङ्गले पुनः सिर्जना गर्ने काम यो धाराका उपन्यासले गरेको छ । यिनमा उत्तर वैदिक कालीन पुराण तथा धर्मशास्त्रमा आधारित कथावस्तुलाई लिएर नवीन अर्थको अन्वेषण गरी भाषा, संस्कृति र परिवेशको आदिम सभ्यता र संस्कारसँग उचित समायोजन गरी प्रस्तुत गरिन्छ । यस्ता उपन्यासहरु हुन् :

१. विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको 'सुम्निमा' वि.सं. २०२७ ।
२. ध्रुवचन्द्र गौतमको 'डाँपी' वि.सं. २०३३ ।
३. राजेश्वर देवकोटाको 'द्वन्द्वको अवसान' वि.सं. २०४२ ।

#### ४.३.३. ध्रुवचन्द्र गौतमद्वारा लिखित 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासको स्थान:-

नेपाली उपन्यासका फाँटमा विक्रम सम्बत २०२४ सालमा 'अन्त्यपछि' उपन्यास लिएर देखा परेका ध्रुवचन्द्र गौतमले वि.सं. २०२४ देखि हालसम्म विभिन्न उत्कृष्ट उपन्यासहरु नेपाली साहित्यलाई दिएर धनी बनाएका छन् । वि.सं. २०२८ मा बालुवामाथि, डापी (२०३३), आकाश विभाजित छ (२०३५), कट्टेल सरको चोटपटक (२०३७), अलिखित (२०४०), निमित्त नायक

(२०४३), एक सहरमा एक कोठा (२०४६) यी सबैमा उपन्यासकार ध्रुवचन्द्र गौतमका विभिन्न प्रवृत्तिहरू देखा परेका छन्।

उनका अन्त्यपछि, बालुवामाथि र डापी यी तिनै उपन्यास उस्ता-उस्तै लागे पनि भिन्दा-भिन्दै प्रवृत्ति लिएर उभिएको देखिन्छ। कुनैमा जीवनका विरक्ति - विरागलाई त कुनैमा शुन्य-शुन्य न्यासो एकलोपन र कुनैमा जीवनको रंगविहिन यान्त्रिकता र उदासिनतालाई आत्मसात गरेको पाइन्छ।

तर, माथिको उपन्यासहरूको तुलनामा 'कट्टेल सरको चोटपटक' एकदम भिन्दै किसिमको छ। अर्कै कित्ताको प्रस्तुती, विषय, शैलिहरू अंगालेर यसले विविशताको कथा हालेको छ। यो उपन्यास 'अन्त्यपछि' र डापी जस्तो स्वेच्छिक कल्पना र किंवदन्तीमा आधारित नभईकन सामाजिक यथार्थतमा उभेको छ। यसरी गौतमका औपन्यासिक यात्राको उत्कृष्ट एवं सामाजिक यथार्थताको विशेषता बोकेको नमुना उपन्यास हो। यर्थात 'कट्टेल सरको चोटपटक' को स्थान नेपाली साहित्यमा महत्वपूर्ण रहेको छ।

प्रयोगवादी आख्यानकार ध्रुवचन्द्र गौतम (२०००) ले अन्त्यपछि (२०२४) बाट शुरू गरेको औपन्यासिक यात्रा 'कट्टेल सरको चोटपटक' (२०३७) सम्म आइपुग्दा शैली शिल्पमा प्रौढता र विधागत उच्चताको शिखर टेकिसकेको अनुभव हुन्छ। कट्टेल सरको चोट-पटक ध्रुवचन्द्र गौतमको चौथो उपन्यासिक कृति हो। मध्यमवर्गीय समाजले भोग्नुपरेको तीता अष्टयारा र यथार्थहरू नै यस उपन्यासको कथावस्तु हो। मध्यमवर्गका नेपालीहरूको आर्थिक दुरावस्था र त्यसबाट उत्पन्न हुने बाध्ययात्मक परिस्थितिको दस्तावेज हो 'कट्टेल सरको चोट-पटक' को परिवेश तृतीयपुरुष शैलीमा लेखिएको उपन्यासमा नायक 'कट्टेल सर' मार्फत उसका जीवनका जटिलताहरू चित्रण गरिएको छ।

उपन्यासको 'कट्टेल सर' जस्ता मान्छेहरू हाम्रो समाजमा प्रतिनिधि मान्छे हुन्। आफू र आफ्नो परिवारको पेट पाल्न जिन्दगीभरी हाड घोटेर चन्दन बनाउन परिरहेको र कतिपय अवस्थामा जीवनलाई नै आहुति दिनुपरेको यथार्थलाई र त्यस वरिपरि जेलिएको सिङ्गो समाजको



मनोविज्ञानलाई उपन्यासको विभिन्न पात्रहरू मार्फत जगजाहेर गर्नु नै उपन्यासकारको अभीष्ट देखिन्छ। गाँस, वाँस र कपासको समस्याको समाधान खोज्ने क्रममा नै सम्पूर्ण जीवन चिप्लिएर जाने भएको हुनाले देश र समाजका लागि सोच्ने फुर्सदसम्म नपाउनु वा इमान्दार मानिसले आजको समयमा आफ्नो परिवारको परिचालन गर्न नसक्ने अवस्थामा देश वा समाजको बारेमा सोच्ने त असम्भव नै भएको देखिन्छ। 'कट्टेल सरको चोट-पटक' को कथावस्तु शिक्षक भईकन पनि आर्थिक विपन्नता भोग्नुपर्ने दुर्गतिपूर्ण सामाजिक अवस्थसँग गाँसिएको छ। राजनीतिक अनुदारता र मान्छेको अवज्ञा गर्ने समाजमा भनसुन, खुसामद, चाकरी नै योग्यता निर्धारण गर्ने माध्यम हुने बिडम्बना छ। यस्तो परिस्थितिमा कट्टेल अर्थात् वासुदेव आर्थिक कारणबाट विपन्न हुनुका साथै व्यवहारिक र विशेष प्रयत्न गर्न नसक्ने प्राध्यापक हुनाले र त्यस्तै कसैको सेवा खुसामद र भनसुनपछि नलाग्ने, आत्मस्वाभिमानी पनि हुनाले उसले उन्नति गर्नु त कहाँ आफ्नो जाँगिर जोगाउन पनि नसकेको अवस्थालाई 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासमा उपन्यासकारले सफलातापूर्वक चित्रण गरेको छन्।

उपन्यासको कट्टेल सर यस उपन्यासमा आफ्नै अस्तित्वको रक्षार्थ जिन्दगीको सम्पूर्ण श्रम खर्चिने गर्छन्। उनी परिवारको पालन-पोषणका लागि सधैं प्रयत्न रहन्छन्। आफ्नो तलवले दुई छोरी एक छोरा, बुढा बुवा र आफू श्रीमान श्रीमती गरी छौ जनाको परिवार पाल्न उसलाई मुस्किल परेको छ। कहिले घरभाडा तीर्न नसक्नु त कहिले चामल, दाल किन्न नसक्नु र कहिले छोरो बिरामी भएर राम्ररी उपचार गराउन नसक्ने अवस्थसँग उसले सामना गर्नु परेको छ। जीवनमा कट्टेल सर पनि अघि बढ्न चाहन्छन्। तर आत्मसम्मानका साथ ऊ आफूले गरेको मेहनतको सम्मान वापत आफूलाई पनि आफ्ना साथी सत्याल र शर्मा जस्तै विदेश जान चाहन्छन् तर उसको परिश्रमलाई उसका डीनले पनि कदर गर्दैन किनकी ऊ कसैको चाकरी चापलुसीमा रहँदैन। ऊ अरुजस्तो चापलुसीमा नलागी बढी पैसा कमाउन नसक्ने हुँदा उसकी श्रीमतीले समेत उसलाई नामर्द भनेर होच्याउने गरेकी छ। आर्थिक विपन्नताका कारण उसले धेरै समस्यालाई भोग्नु परेको छ। बुढा बाको औषधी किन्न नसक्नु छोरी रंजु बिग्रीएको सहन र छोराको उपचार गराउन

नसक्नु, त्यस्तै जेठो छोराको आवश्यकता पूरा गर्न नसक्दा उसको वियोग सहनु कट्टेल सरको विवशता रहेको छ।

यता कट्टेल सरले काम गर्ने क्याम्पस चाप्लुस र चाकडी गर्नेको अखाडा जस्तो छ। कक्षामा पढाउँदा ठट्टा, मजाक गरी पढाउने प्राध्यापक र अफिसमा बस्दा व्यक्तिगत छेडखानीमा व्यस्त हुने र चाकडी चाप्लुसीमा मात्र पारङ्गत प्राध्यापकहरूको माझमा कट्टेल सरले आफ्नो प्रगति खोज्न निरर्थक भएको देखिन्छ, तसर्थ ऊ पनि कहिलकाही आफूलाई त्यही वातावरणमा भिजाउने प्रयत्न गर्छ। उसका साथीहरू पनि केही-न-केही कुण्टामा डुबेका छन्। सत्याल बढी कमाउनका लागि जेपनि गर्न सक्छ भने अर्को साथी शर्मा आफ्नी श्रीमतीले दिएको धोकालाई बिसन बढी कल्पनाको दुनियामा डुबी रहन्छ।

त्यस्तै कट्टेल सरकी श्रीमती साबित्री आर्थिक अभावग्रस्त भएर पनि पतिव्रता नारी छिन्। उनी आफ्ना रहर, इच्छा आकांक्षामालाई पूरा गर्न सक्तिनन्। यहाँसम्म की उनले आफ्नो लागि किनेको व्याग पनि पसलेलाई फिर्ता गर्नु परेको छ, घरमा चामल किन्न पैसा नपुगेकोले छोरा छोरीको विजोग भएको र आर्थिक अभावले राम्रो डेरामा बस्न नपाउनु, त्यस्तै आफ्नो घर बनाउने इच्छा पूरा हुन नसक्नु, समाजमा कतै कुनै समारोह र पार्टी हुँदा आफ्नो सम्मान नगरिनु जस्ता अनैतिक व्यवहारलाई श्रीमति कट्टेलले सहनुपरेको छ। जे जस्तो भएपनि श्रीमति साबित्री कट्टेल यस उपन्यासमा सहनशील पतिव्रता नारीको रूपमा देखिएकी छिन्। ज्यादै खिन्नता भए आफ्नो पीडा री रिसलाई उनी आफ्नो श्रीमान कट्टेल सर समक्ष पोख्ने गर्छन। कट्टेल सर पनि श्रीमतिको रिस र आक्षेपलाई सहन्छन्। उनी भित्रभित्र आफ्नो असक्षमतालाई स्वीकार्न तर माथिबाट स्वीकारेको देखाउँदैनन्। कट्टेल सरले यस उपन्यासमा विभिन्न व्यक्तिहरूबाट धोका खाइएको देखाइएको छ। जस्तै कुमार जस्तो मिल्ने साथीले उसलाई साथी जस्तो देखावटी व्यवहार गर्छ र भित्रैदेखि हेला र आफूभन्दा निम्न स्तरको व्यक्ति जस्तो व्यवहार गरेको देखिन्छ र यो प्रत्यक्ष रूपमा कुमारको घरमा दिइने पार्टीमा उनीहरूलाई खाना पकाउन आमन्त्रण गरेर खानेबेलामा फर्काइने गरिन्छ। यस्ता अपमानहरू फरक-फरक ठाउँमा उसका अन्य साथी र विद्यार्थी समेतले गरेको देखिन्छ। तर, कट्टेल

सर आत्मस्वाभिमानी छन्। उनी सितैमा वा अपमानित भएर सहयोग पनि लिन चाहँदैनन्। अन्ततः कसैको खुसामद र भनसुन पछि नलाग्ने व्यक्ति कट्टेल सरले आफ्नो जागिर गुमाएर जीन्दगीमा धेरै समस्यासँग सामना गरेका छन्।

‘कट्टेल सरको चोट-पटकमा’ कट्टेल सर जस्ता मानिस हाम्रा समाजका प्रतिनिधि मान्छे हुन्। आर्थिक दुरावस्थाका कारण पाइने अत्याचार, व्यभिचार र थिचोमिचो अनि त्यसलाई स्वीकार्नुपर्ने आममान्छेको विवशतालाई यस उपन्यासले राम्ररी समेटेको छ। भयग्रस्त एवं त्रसित र सन्त्रासयुक्त परिवेशका अतिरिक्त यस उपन्यासले नयाँ प्रवृत्तिका रूपमा व्यक्तिकेन्द्र बौद्धिक समस्या र स्वतन्त्रताप्रति हुने अनादरपूर्ण व्यवहारको विरोधलाई अँगालेको देखिन्छ। एउटा सामान्य मान्छेको असमान्य जीवन भोगाइको चित्र यस उपन्यासमा छ। शैक्षिक आरजकता, पीडा, देश, काल परिस्थिति र देशको कुव्यवस्थाको उत्तम चित्रणका साथै जीवनको आर्तमय संघर्षलाई एउटा सामान्य शिक्षकको असमान्य व्यथालाई समेटिएको उपन्यास ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ हो।

गौतमका पूर्ववर्ती उपन्यासहरू स्वेच्छिक कल्पना र किंवदन्तीमा आधारित रहेको पाइन्छ भने ‘कट्टेल सरको चोटपटक समाजिक यर्थाथमा अभिन खोजेको छ। एक यर्थाथवादी वस्तुपरक समसामयिक शैक्षिक समाजतिर सम्बन्ध राखेर यसको केन्द्रियतामा आधारित जीवनको चित्रण यस उपन्यासमा छ। यस उपन्यासले गौतमलाई अन्तर्मनको गुफाबाट बाहिर ल्याउने प्रयास गरेको छ। परम्पराको रूप लिन पुगेको शास्त्रीय सुत्रहरू, जीवनको छनौटपूर्ण पक्षका प्रतिवादनहरू, चरित्र र घटनाका चर्का तारतम्यहरूलाई विशेष गरी औपन्यासिक तत्व मानिसको परिपेक्ष्यमा यस उपन्यासले नवीन शिल्पशैली एवं प्रयोगवादी चेतनाका माध्यमबाट एवं पृथक पहिचान स्थापित गरेको देखिन्छ।

ध्रुवचन्द्रका उपन्यासमा आर्थिक दुरावस्थाले निम्नमध्यम वर्गीय मान्छेहरूमा उत्पन्न हुने अप्ठ्यारा वा बिठल्याँटाहरूको चित्रण मार्मिक र जीवन्त ढंगले गरिएको हुन्छ। चरम अप्ठ्याराहरूमा पनि उनका पात्रहरू हतास हुँदैनन् बरु आफ्नो स्थितिप्रति आफै। व्यंग्य गर्छन र आफ्नो पतनको साक्षी बस्छन्। विसङ्गति र त्यसले सजिएका अस्तित्ववरणका अनन्त प्रश्नहरूको सागरमा उनका

पात्रहरू पौडिरहन्छन्। तिनीहरूले भेटाउने किनाराको कुनै टुङ्गो र समयधि छैन। त्यसैले ध्रुवचन्द्र गौतम हाम्रो सामाजिक विसङ्गतिका मर्मज्ञ हुन् र महान व्याख्याता पनि हुन्।

#### ४.३.४. निष्कर्ष

यसरी नेपाली उपन्यासको विकासक्रमलाई हेर्दा सत्रौं शताब्दीबाट पाश्चात्य मुलुकको आख्यान परम्पराको प्रथम कृति 'डन क्वीजीट' बाट सुरु भइ युरोप, एशिया हुँदै नेपाली आख्यान परम्परामा आएको पाइन्छ। उपन्यास परम्परामा वि.सं. १८२७ - १९४५ सम्मको समयलाई प्राथमिककाल, १९४६ - १९९० को समयलाई माध्यमिक काल र वि.सं. १९९० देखी हालसम्मको समयलाई प्राथमिक कालमा संस्कृतिबाट अनुदित कृतिहरू मात्र देखा परे भने मौलिक रूपका उपन्यास देखा परेनन्। तर, माध्यमिक कालमा जासुसी तिलस्मी मनोरञ्जनात्मक औपदेशिक नीतिपरक आख्यानहरू देखा परे। आधुनिक कालमा आएर वि.सं. १९९९ को रूपराज पाण्डेको 'रूपमती' ले मात्र नेपाली उपन्यासको वास्तविक रूप धारण गर्यो। आधुनिक कालका उपन्यासले मात्र वास्तवमा मानव समाजको यथार्थ चित्रण गरेको देखिन्छ। यो कालमा विविध मोड, धारा र उपधाराहरू देखा परे र उपन्यासको पनि तीव्र गतिमा सिर्जना भईरहेको पाइन्छ। हालका उपन्यासहरू वास्तविक मानव जीवनका चित्र उतार्न सफल भएको देखिन्छ।

यसरी ध्रुवचन्द्र गौतम प्रयोगवादी आख्यानकार हुन्। ध्रुवचन्द्र गौतमले अन्त्यपछि (२०२४) बाट शुरु गरेको औपन्यासिक कट्टेल सरको चोट-पटक (२०३७) सम्म आइपुग्दा शैलीशिल्पमा प्रौढता र विधागत उच्चताको शिखर टेकिसकेको अनुभव गरेका छन्। उनको यो उपन्यास चौथो औपन्यासिक कृति हो। यस उपन्यासमा मध्यम वर्गीय समाजले भोग्नु परेका तीता, अप्ट्यारा र यथार्थहरू नै उल्लेख गरेका छन्। यो तृतीय पुरुष र कतै-कतै प्रथम पुरुष शैलीमा लेखिएको छ। यस उपन्यासका नायक कट्टेल सर मार्फत उसका जीवनका जटिलताहरूको चित्रण मार्मिक रूपमा चित्रण गरिएको छ।

## पाँचौं परिच्छेद

औपन्यासिक तत्वका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण

### ५.१ पृष्ठभूमि

ध्रुवचन्द्र गौतमद्वारा 'कट्टेल सरको चोटपटक' (२०३७) उपन्यास आधुनिक नेपाली उपन्यास परम्पराको मध्य प्रहरमा देखिएको हो। यस उपन्यासको प्रकाशन साझा प्रकाशनबाट चैत्र ८ गते वि.सं. २०३७ सालमा गरिएको हो। उपन्यासको मूल कथानक 'कट्टेल सर' पात्रसँग सम्बन्धित छ। कट्टेल सरले आर्थिक विपन्नताले भोग्नु परेको दुर्गतिपूर्ण समाजिक अवस्था नै कथानकको रूपमा आएको छ।

### ५.२ उपन्यासको नामाकरण

'कट्टेल सरको चोट-पटक' को अभिधार्थ कट्टेल सरको पीडा वा उनले भोगेका समस्या भन्ने हुन्छ। अभिधात्मक रूपमा हेर्दा कट्टेल सरको आर्थिक समस्याबाट उपन्यास शुरू भई सम्पूर्ण पात्र त्यसबाट प्रभावित भएको र अन्त्यमा पनि उनको पीडाको कुनै अन्त्य नभएकोले शीर्षक असान्दर्भिक लाग्दैन। लक्ष्यार्थको रूपमा हेर्दा कट्टेल सरको सम्पूर्ण पीडा, छटपटि अपमानले मध्यम वर्गीय मानिसको पीडालाई प्रतिनिधित्व गरे झैं लाग्छ भने व्यञ्जनार्थमा उपन्यासको

शीर्षकलाई केलाउँदा सिङ्गो मध्यम वर्गीय नेपालीको जीवनलाई प्रतिनिधित्व 'कट्टेल सर' पात्रले गरेको देखिन्छ। 'कट्टेल' सरको परिवारमा नेपाली मध्यम वर्गीय परिवारमा देखिने कलहहरू विभिन्न प्रसङ्गरूपले देखाएको छ।

'तिमीलाई चाहिन जति कमाउन मैले स्मगलर हुनु पर्ला अनि मात्र .....। - कट्टेल सर भन्छन्'  
श्रीमती भन्छिन - स्मगलर हो कि होइन कसलाई थाह हुन्छ। (पृष्ठ १४)

यस्ता विभिन्न वाद प्रतिवादात्मक संवादबाट कट्टेल सर उनकी श्रीमती बीच झगडा चलिरहन्छ। उपन्यासको अन्त्यले पनि एउटा शिक्षकको जागिरले कहिल्यै जीवन उकास्न नसकिने स्थितिलाई प्रष्ट्याएको छ।

मचाहिँ तिनताक एउटा यस्तो खेलाडी थिएँ, जो लछारिन्थ्यो, पछारिन्थ्यो रगतपक्ष हुन्थ्यो, उकुस, मुकुस हुन्थ्यो तर जीवनमा कहिल्यै 'सी' उच्चारण गर्न सकिदन्थे। (पृष्ठ २०८)

साबु, मभन्दा पनि दुखी छे र उसको लागि कहिल्यै केही गर्न सकिएन भन्ने एउटा ... (पृष्ठ २०६)

यस्ता विवशताले निम्न मध्यम वर्गीय नेपाली समाजमा व्यापकता छाएको छ भन्ने व्यञ्जनार्थ बोकेको छ।

### ५.३ उपन्यासको संरचना

सामान्य: संरचनाले बनोटलाई जनाउँछ। उपन्यासले सिङ्गो रूप धारण गर्नका लागि त्यसको आन्तरिक र बाह्य संरचना आवश्यक हुन्छ। आन्तरिक संरचनाले भाव पक्ष र बाह्य संरचनाले कार्यगत पक्षलाई बुझाउँछ।

सामान्य कलेवरमा रहेको उपन्यास डिमाइ साइजको २०८ पृष्ठमा संरक्षित छ। पुस्तकमा २० परिच्छेद छन् जसलाई १ देखि २० अंकले छुट्याएको छ। अनुच्छेदमा उपन्यासको कथानक विस्तार भएको छ।

प्रमुख चरित्र 'कट्टेल सर' ले जीवनमा बढी कमाउन नसकेर भोगेका भोगाइ र अपमानको क्षणहरूलाई उपन्यासमा प्रस्तुत गरिएको छ। शुरुदेखि अन्त्यसम्म आइपुगेको कथानकमा अपमान र विसङ्गति जताततै पाइन्छ। कट्टेल सरका साथीहरू ऊजस्तो नभएकोले चोँकडी चापलुसी

गरेर उन्नति गरी सुखी छन भने कट्टेल सर अभावग्रस्त र असङ्गत जीवन जीउन बाध्य छन्। भएको शिक्षकको जागिरले कट्टेलसरले सम्पूर्ण सपरिवारको आधारभूत आवश्यकता पूरा गर्न नसक्नु विसङ्गति हो भने चामल किन्न, छोराको औषधि उपचार गराउन नसक्नु गरिबीको चरम रूप हो। सहरी परिवेशको कथानक बोकेको बहुपात्रयुक्त अनि मध्यम वर्गीय नेपालीको पीडाको प्रतिमूर्ति रूपमा उपन्यास संरचित छ।

कथ्य भाषाको प्रशस्त प्रयोजन भएको उपन्यासका एक शब्द वाक्य (किनः २५, साट्टुः ४२, कसरीः ५०, हुन्छः ६१, होः १००, सहन्थेः १०१, हरायोः १३०) देखि लामा वाक्य ३० शब्दको (छाटा नभएको दुःख उसलाई तब निकै चढछ, जब कतै जान भनेर ठिक्क परेको छ तर आकाशबाट आइरो लाग्छ र उसले कुनै यात्रा थाल्नलाई सधैं कुनै पानी थामिने बेला पखिनु पर्छ। पृष्ठ -५८) बाट संरचित छ। त्यस्तै एक वाक्यको अनुच्छेद 'पर्सि बिहान आइज न त लन्व राखेको छु, चार-पाँच जना अरू पनि आउँछन्।' पृ. -६१, बाहिर भित्र कस्तो छ? भन्न नसिने पृष्ठ ३९, कहाँ गएको थिइस्? पृष्ठ १३० आदि देखि २१ वाक्ययुक्त अनुच्छेद साबी यही गर्न नसकेकोमा मलाई नामर्द भन्छे। साँच्चे एक किसिमको आँटिलोपन त चाहिँदो हो यसको लागि पनि ? सत्याल जाला। त्यो जसकहाँ पनि गएको होस् अहिले टाइम छैन भन्ने सुन्ला। अर्को पटक जाला, भोलि आउनुहोस् भन्ने सुन्ला, एवम रीत। तर सत्याल छाड्दैन, किमार्थ छाड्दैन। त्यतिका पेट्रोल खेर गैससकेपछि नभेटेर को फर्किन्छ र भेटेपछि कुनै पनि प्राप्ति किन नगर्नु हँ ? दुनियाँ जबकी यसैमा टिकेको छ, यसैले चलेको छ। सत्याल कुनै-कुनै बखत छी छी दुर्दुर गरिएर पनि दारा किट्दैन, घृणा गर्दैन, ऊ त्यस्तै रहन्छ जस्तो हुनुपर्छ। अर्थात् वाञ्छनीय योग्यता भिरेर, कुनै सानो झ्यालबाट छिरेर मान्छे जेनरेटर जस्तै चलन थाल्दो रहेछ। म त्यस्तो छैन, माने हुन सकिन किनभने जानिन्न। धैर्य छैन। धेरै जसो भुङ्ग्यो छ, तर भित्र मात्र। जस्तो भनु कित मसित यो थोत्रो इज्जतको डर वा धान्नुपर्ने बाध्यता नहोस्, कि म पनि यस्तो बन्न चाहन्छु कि प्रमोसनको फिक्रीमा मात्र शत काटुँ र दिन खर्च गरूँ। प्रमोसनको फिक्री मलाई छ, तर फारम भर्न झर्को लाग्छ वा भन्नुँ म कुनै त्यस्तो अजङ्गको मान्छेको आफ्नो बन्नुँ, यो हर्हराउदो रहरले कहिलेकाही

ग्रस्त पाछै। यस्तोमा जीन्दगी त्यसै पो बित्त लाग्यो भन्ने जस्तो म घण्टौं पनि जान सक्छ। छेउमा मेरी स्वास्नी, जसलाई कहिलेकाही कसैकसैले भाग्यमानी पनि भनिदिन्छ, हुन सक्छ जिस्काउनैलाई, भने ऊ त झन मभन्दा गएवितेको परिस्थितिमा हुन्छे, यस अर्थमा कि उसको छटपट, भयावह नै भइदिन्छ कुनै कुनै बखत। कति-कति दिन हामीमा राम्रो बोलचाल हुँदैन, केवल यति बाहेक, जति एउटै दलिनमुनि बस्दा कस्तीमा चाहिएला। म खुसुक्क भनिदिउँ - यो सब प्रायः पैसाको चमत्कार हो अर्थात् पैसा नहुनुको चमत्कार हो। अब म के भुनुं श्रीमान् तपाईं कोही पनि ? सस्तोमा जिन्दगी हगुँहगुँ-मुतुँमुतुँ भएर वित्दैछ। यस्तोमा, कस्तोमा भने, एउटा विरुखुर अन्धकारको दुनियाँ जस्तोमा। माने केवल तलब कमाउने मान्छे यति निरिह हुँदो रहेछ, यति जुत्तै-जुत्ताले खाँदिएको हुँदोरहेछ ..... मलाई कता थाह थियो त मिस्टर नत्र .... नत्र पनि के भन्नु अब त, अब त म एउटा कति कुराको गोलमाल पदार्थ भैसकँ, एउटा बेरुजु हिसाब जो कुनै बेइमानद्वारा लेखिएको छ। (पृष्ठ ११-१२) को प्रयोग भई उपन्यासको संरचना भएको छ। सरल संयुक्त र मिश्र तिनै किसिमको नि कौतुहलपूर्ण वाक्य र अभिव्यक्ति प्रशस्त भएकोले तथा पेजमा रहस्यात्मक तथा कौतुहलयुक्त संवाद भएकोले अन्यास सरल र सरस छ। क्लिष्ट वाक्य कमैमात्र प्रयोग भएकोले उपन्यास दुर्बोध्यरहित भएर संरचित हुनाले सहजै सबैको लागि सम्प्रोषत बहन सक्ने छ।

#### ५.४ कथानक

घटनावलीको ढाँचा वा योजनालाई कथानक भनिन्छ। उपन्यास निर्माणको लागि कार्यकारण सम्बन्धका आधारमा कथावस्तुको विन्यास गरिन्छ। कथावस्तु उपन्यासको प्राण हो भने कथानक काया हो। (न्यौपाने २०५:२०३) उपन्यासको घटनाहरूलाई कथानकले बाँध्ने काम गर्ने हुनाले कथानकको महत्वपूर्ण स्थान उपन्यासमा हुन्छ।

‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासमा कथानकको निर्माण धेरै पात्रको कार्यव्यापारमा बाँधिएर भएको छ। ‘कट्टेल सर’ पात्रले जीवनमा भोगेका समस्याहरू कथावस्तु भएर उपन्यास अधि बढेको छ। ‘कट्टेल सर’ पात्रले भोगेका जीवनका तीतामीठा भोगाइहरू कार्यकारण सम्बन्धको धागोमा बुनिएर उपन्यास निर्माण भएको छ।



‘कट्टेल सर’ पात्र एउटा क्याम्पसका प्राध्यापक हुन्। उनलाई काठमाडौंमा कोठा भाडा लिएर छ जनाको परिवार पाल्न धौ-धौ परेको छ। ‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ मा कट्टेल सरको अभावग्रस्त जीवनलाई विस्तृत रूपमा र एउटा जीवनी वर्णन भएजस्तै वर्णनात्मक शैलीमा उपन्यासको कथ्य अधि बढेको छ। घरमा आर्थिक अभाव भएपछि आउने समस्या कोलाहलको वर्णन साथीभाई, समाज र घरपट्टिले गर्ने राम्रा नराम्रा व्यवहारको वर्णन, क्याम्पसमा कामगर्दा विद्यार्थी तथा साथीभाईसँग विताएका रमाइला/नरमाइला दिनको वर्णन समाजमा शिक्षाको स्तर निम्न र चाकडी चापलुसी गर्नेको उन्नति भएको वर्णन, धनीवर्गले गरिबलाई कसरी अप्रत्यक्ष वा प्रत्यक्ष हेला गर्ने गर्छन त्यस्ता घटनाको वर्णन पैसाको अभावले सन्तानको सभविष्य अन्धकारमा परेको वर्णन, सन्तानको आवश्यकता पूरा गर्न नसक्दा उनीहरू विग्रीएको अवस्थाको वर्णन। सरकारी जागीरको तलबले एउटा परिवारको न्युनतम आवश्यकता पनि पूरा नहुनसक्ने अवस्थाको वर्णन, मानिस आफ्नै परिवारलाई पाल्न नसक्दाँ आफ्नै नजरमा गिर्दो र मर्न नबाँच्नसक्ने अवस्थामा पुग्ने नेपाली समाजको उपस्थिति नै यस उपन्यासको प्रमुख कथानक हुन्।

सामान्यतः ढाँचा भनेको तरिका हो। (न्यौपाने २०५०:२०४) उपन्यासमा रहने आदि देखि अन्त्यसम्मका घटनाहरूको संयोजनको अवस्था नै कथानकको ढाँचा हो। (बराल र एटम, २०६६:२८) आफ्नो रूचि र प्रभावकारिता तथा कुशलताको प्रदर्शनका लागि ती घटनावलीलाई उपन्यासकारले विभिन्न ढाँचाको अवलम्बन गरेर निर्माण गरेको हुन्छ। यस्ता ढाँचा रैखिक र वृत्तकारीय दुई प्रकारका हुन्छन्। आदि, मध्य र अन्त्य क्रमबद्ध रूपले कथानक बगेको भए त्यो रैखिक र कथानकको विकास विशृङ्खलित पाराको भएमा त्यो वृत्तकारीय ढाँचा हुन्छ।

‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासमा कट्टेल सर पात्रको जीवनयापन गर्ने क्रम आदि मध्य र अन्त्य अर्थात् व्यसक अवस्था, लाचार अवस्था, बुढो र विरामी भएर जीवनमा छिट्टै कमजोर भई अन्त्य भएको कट्टेल सरको कथा प्रस्तुत गरिएको छ अर्थात् यस उपन्यासको कथानक रैखिक ढाँचामा अधि बढेको छ।

उपन्यासकारले प्रस्तुत गर्ने कथानक कुनै न कुनै स्रोतबाट ल्याएको हुन्छ। मुख्य गरी स्रोत दुई प्रकारको हुन्छन् - लौकिक र आलौकिक। लौकिक स्रोत भन्नाले लोकसँग सम्बन्धित समाज, इतिहास र पुरान हुन् भने कल्पनाचाहिं आलौकिक स्रोत हो। आधुनिक आख्यान युगीन प्रवृत्ति र समसामयिक विषयवस्तुलाई आधार बनाएर बढी मात्रमा लेखिएको पाइन्छ। आलौकिक उत्पाद्य पनि भनिन्छ। वर्तमान सन्दर्भलाई कथानकलाई उद्घाटन गर्ने लक्ष्य राखिएका उपन्यासको कथानक उत्पाद्य रहेको हुन्छ।

‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यासको कथावस्तुको स्रोत उत्पाद्य प्रकारको भए पनि यो हाम्रो समाजमा हुने गर्ने घटनासँग सम्बन्धित छ। वास्तवमा भनु हो भने हाम्रो नेपाली मध्यम वर्गीय समाजको यथार्थ चित्रण जस्तो छ। उपन्यासमा आएका सम्पूर्ण घटनालाई उपन्यासकारले आफ्नो कल्पनाशक्तिको प्रयोग गरी कथात्मक रूप दिएका छन्। नेपाली मध्यम वर्गीय समाजको पीडा, उच्चवर्गले निम्न वर्गलाई गर्ने अभद्र व्यवहार, आर्थिक सम्पन्नता र विपन्नताले गर्दा मानव जीवनमा पर्ने प्रभावलाई कल्पनाशक्तिको माध्यमद्वारा रोचक र पठनीय बनाई नेपाली सम्पन्न समाज वा वर्ग, कर्मचारीतन्त्र अनि चाकडीबाज प्रवृत्तिको मर्ममा तीर हान्न गौतम सफल भएका छन्। कल्पना र हाम्रो मध्यम वर्गीय समाजको यथार्थ दुवैको मिश्रण गरी ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ को जन्म भएको देखिन्छ।

यसरी हेर्दा उपन्यासको कथानक चरित्र अनि परिवेश समसामयिक छ। त्यही समसामयिकतामा आफ्नो कल्पनाशक्तिको सफल सदुपयोग गरी पाठकसामु प्रस्तुत गरेकाले उपन्यास ओजयुक्त भएको छ।

विभिन्न आधारमा कथानकलाई वर्गीकरण गर्न सकिन्छ। नायकको फल प्राप्तिमा आधारमा मुख्य र सहायक, सङ्गठनका आधारमा सुगठित र अव्यवस्थित, कथाको विविधताको आधारमा सरल र संयुक्त, कथानकको अन्त्यका आधारमा दुःखान्तक, हास्य सुखान्तक, व्याङ्ग्यात्मक र रागात्मक गरी चार वर्गमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ। (पराजुली, २०६६:२३)

‘कट्टेल सरको चोट-पटक’ उपन्यास लम्बाइका आधारमा मध्यम प्रकारको छ। विषयवस्तुको आधारमा विसङ्गतिवादी अस्तित्ववादी, बहुपात्री, वर्णनात्मक अनि कथानकभित्र कार्यकारणहरू क्रमबद्ध रूपमा आएकोले रैखिक प्रकृतिको कथानक छ।

उपन्यासको कथावस्तु शुरूदेखि अन्त्यसम्म पुग्ने क्रममा विकास भएको आरोह अवरोहलाई नै कथावस्तुको विकास मानिन्छ। पाश्चात्य साहित्यका चिन्तक अरस्तुले दुःखान्तक नाटकको कथा वस्तुको चर्चा गर्ने क्रममा कथा आदि, मध्य र अन्त्य भएर विकास हुनुपर्छ भन्ने कुरामा जोड दिएका छन्। यसरी शृङ्खलित रूपमा विकास भएको उपन्यासले पाठकको कौतुहलतालाई समाधान गरिदिन्छ। जसरी जीवनको विकास हुन्छ त्यसैगरी कथानकको विकास एकान्वितिपूर्ण रूपमा हुनुपर्छ। (बराल र एटम, २०६६:२९)

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासको कथानकको विन्यास शृङ्खलित भएकाले कथानकको विकास पनि शृङ्खलित छ।

कथानकको विन्यास भन्नासाथ उपन्यासमा कथानकको क्रमिक प्रस्तुतिलाई बुझिन्छ। कथानकको विन्यास क्रमिक र अक्रमिक कसरी गर्ने हो त्यसैबाट पूर्वदीप्ति, पश्चदीप्ति, चेतनप्रवाह इत्यादि शैलीको निर्धारण हुन्छ।

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासको कथानक २०८ पृष्ठमा विस्तारित छ। खण्ड-खण्ड विभाजन नगरी कथानक प्रस्तुत गरिए पनि प्रसंग अनुसारका फरकफरक २० वटा परिच्छेद छन्। र ती परिच्छेद १ देखि २० अंकबाट छुट्याएको छ। यी परिच्छेदमा समेटिएको कथानक यस प्रकार छ।

कट्टेल सर स्वास्नीसित रोमाशं गर्दैछ। धेरै लामो समयपछि स्वास्नी विरामी परेपछि तड्ग्रेकी थी र यस्तो मौका उन्काउन उसलाई मन छैन। केहीबेरको आनन्दित क्षणपछि उनीहरू आफ्नो दैनिक कार्यमा लाग्छन्। भान्सा पकाउने भनेर हिँडेकी कट्टेलनीको अनुहार अत्यास व्याप्त हुन्छ किनभने चामलको भाँडो रिक्तो थियो यो कुरा थाह पाउने बित्तिकै कट्टेलजी साह्रै दिक्दार भई

रिसाउँछन् किनकी घरमा अलिकति पिन पैसा छैन। अर्को तर्फ हिजै कट्टेल्लीले चुरा र व्याग आफ्नालागि किनमेल गरेकी थिइन्।

यस्तो अवस्थामा उनीहरू दुवैबिच लामो भनाभन चल्यो, अन्त्यमा श्रीमती कट्टेल्ली अर्थात् सावित्री चुप लाग्छिन् र खाना पकाउँन तिर लाग्छिन्। उनी घरमा रहेको थोरै चामलको भात र आलुतामाको तरकारी पकाउँदै जीन्दगीको दुःख-सुखलाई खेलाउँछिन्। उता कट्टेल सर आफ्नो निबन्ध लेखनलाई पूरा गर्नतिर लागेका थिए। खाना खाइसकेपछि केहीबेरमा उनीहरूको घरको वातावरण सहज भए झैं भयो तर संयोग दुधवाला पैसा लिन आइपुगे छ। अबफेरि पैसाको अभावमा उनीहरूको घरमा विकराल कोलाहल बनाउँछ र श्रीमती कट्टेल्लीको आफूले हिजै किनेर ल्याएको व्याग फिर्ता गर्ने पसल पुग्छिन्। व्याग फिर्ता गरेपछि ४५ रूपियाँ लिएर सावित्री घर आउँछिन् र दुधवालालाई ४० रूपियाँ दिएपछि रूपियाँ घरका अरु खर्चका लागि राख्छिन्। तर यी सबको परिणाम के भयो भने कट्टेल्ली ज्यादै चुपचाप र आफ्नो हतभाग्यमाथि चिन्तन गर्ने खालकी भै दिई।

दोस्रो परिच्छेदमा कट्टेल सर आफ्नो चिउँडोमा भएको खटिरावाट पिडित छन् र कट्टेल्ली उसलाई पटक-पटक डाक्टरकहाँ जान भन्छिन् तर कट्टेल सर खटिराको लागि डाक्टरकहाँ जानु मूर्खता ठान्छन्। कट्टेलको त्यो घाउले उसलाई आठ दिन जति दुःख दियो र अन्तमा आफैं पाकेर पिप बगेर चट्ट निको भयो यसरी सानो-तिनो दुःखलाई पैसाको अभावमा ऊ सहने गर्छ। खटिरा बगेको ठाउँमा रूवाले कट्टेल्लीले पुछेर पट्टी लगाई दिन्छे। यस्तो पट्टीलाई देखेर सबैले उसलाई व्याङ्ग्यात्मक प्रश्नहरू सोध्ने गर्छन्। चाकरी चाप्लुसी गर्नमा खपिस भएको कट्टेल सरका साथी सत्यालले रिन गरेर भएपनि मोटरसाइकल चढ्ने गरेको तर इमानदारी साथ कमाउने कट्टेल सर सधैं बसमा मात्र यात्रा गर्न सक्छन्। यस्ता चाकडी गर्न नसकेकोमा सावित्रीले उसलाई नामर्द समेत भनेर विभिन्न कटाक्ष बचनले घोज्ने गर्छिन्। एकदिन दिक्क लागेर कट्टेल सर आत्महत्या गर्न निस्कन्छन्। आत्महत्या गर्ने विभिन्न तरिकामध्ये कट्टेल सरले पोखरीमा हाम फाल्ने तरिकालाई अपनाउँछन् र पोखरीमा हाम फाल्छन् तर कस्तो आफ्त उनलाई पौडिन आउँदो रहेछ र उनी

पौडी खेलै पोखरीको पारी पो पुग्छन्। अब उनलाई घर फर्किन गाह्रो भएको छ। भिजेको जिउ देखेर साबित्रीले वा छोराछोरीले के भन्लान् भन्ने पीर तर उनी घर पुग्दा सबै सुतेकै थिए र उनी चुपचाप लुगा फेरेर स्वास्नीको छेऊमा सुत्छन्। भालिपल्ट उनकी स्वास्नीले कसरी कहाँ लुगा भिजाएको र थुपारेर कोठाभित्र राखेको भनेर प्रश्न गर्दा उनी केही उत्तर दिँदैन। यो प्रश्नको उत्तरलाई ऊ अल्म्याए राखिदिन्छ। यो घटनाको पर्सिपल्ट एक गते रहेछ र उसले तलब पायो। त्यसपछि उसले कहिल्यै आत्महत्या नगर्ने मनमनै कसम खायो किनकी आफ्नो आत्महत्याले त उसका सम्पूर्ण परिवारको झन दुर्गती हुने उसलाई आभाष भएको छ।

तेस्रो परिच्छेदमा कट्टेल सरले पढाउने क्याम्पस चीफको बारेमा वर्णन छ जुन ज्यादै रोचक छ किनकी यस्ता प्रायः चीफ पदमा भएका व्यक्तिहरूको स्वभाव हुने देखिन्छ। अर्थात् कट्टेल सरको क्याम्पस चीफ ..... छोटो छ। राम्रो कुरा, आफ्नो मुखबाट कहिल्यै झार्दैन। असल खबर छ भने सहायक क्याम्पस चीफलाई सुनाउन अहाउँछ। झपार्नु पन्थो, ग्रेड खोस्ने वा झार्ने खबर एकदम उत्तरदायी किसिमले अधि सरेर भन्छ। यस्तो क्याम्पस चीफले उसलाई बोलाएको छ। त्यसैले उसको छाती ढक्क फुलेर आयो। कट्टेल सर क्याम्पस चीफको कोठामा जान्छन् जहाँ पहिले देखि केही शिक्षकहरू जुन चीफका हजुरियाहरू थिए ती बसिरहेका थिए ती सबै उसलाई हेरेर मुसुमुसी हाँसिरहे, यस्तो प्रायः उनीसँग हुन्थ्यो। किनकी कट्टेल सर उनीहरू जस्तो चीफको चाकडी गर्दैनथे। ती सबै मिलेर कट्टेलसरलाई बुद्धु बनाइरहन्थे। कट्टेल सरले चीफलाई सोच्छन् - सरले मलाई डाक्नु भएको हो। उत्तरमा उसले धेरै बेरपछि चीफको मुखबाट सुन्छ - तपाईंलाई जीवनको उत्तरचढाव थाह छैन। मान्छे केवल कमाउन र खानुको नाम होइन र अन्त्यमा उसले मुख्य उत्तर सुन्न पाउँछ - “तपाईं पढाउनमा राम्ररी ध्यान दिनु हुन्न रे ?” अब कट्टेल सर थर्केर बसिरहे। त्यसपछि झन अर्को आरोप उसमाथि लाग्छ कि “तपाईं क्लासमा राजनीतिका कुराहरू मात्र गर्न हुन्छ रे ?” यसबाट के स्पष्ट भयो कि उसमाथि बिनाकारण बेकारको आरोप लगाई उसको अपमान गर्नु नै क्याम्पस चीफको उद्देश्य रहेछ। यसरी चाकरी बजाउन नसक्दा ठूलाले सानाको अपमान गर्ने र सानाले सहने परम्परालाई बढो उत्कृष्ट रूपमा यहाँ वर्णन गरिएको।

आत्मस्वभिमानी कट्टेल सरले यो अपमानले गर्दा राजीनामा दिने सोच्दछन् तर त्यसबाट इन वियोग हुने कुरालाई सम्झन्छ, तापनि अपमानको पीडा यति थियो कि उसले तुरुन्तै राजीनामा खेसा गरिहाल्यो। उसलाई थाह थियो कि ऊ राजीनामा नाट्य विद्रोह देखाउन गरिरहेको थियो। काटेको गोजीमा राजीनामाको खेस्रो लिएर ऊ घर जानलाई निस्कन्छ बाटोमा उसले सत्याललाई भेट्छ जो कुनै काम पूरा भएकोमा ज्यादै खुशी छ। यस अवसरमा सत्यालले कट्टेल सरलाई ड्रिंक गराउन पारस होटलमा लग्छ र सितैमा पिउन पाउने भए पछि कट्टेल सरपनि तुरुन्तै मानिहाल्छन्। पिउँदा पिउँदै कट्टेल सरले आफ्नो पीडा र राजीनामा दिने कुरा सत्याललाई सुनाउँछ तर सत्यालले राजीनामको ठाउँमा ट्रान्सफर गराऊ भनेर सम्झाउँछ। यसपछि कट्टेल सरको मन अलि हलुङ्गु हुन्छ र उनी आफ्नो घर पुग्छन्। घरमा श्रीमति कट्टेलनी सुतिसकेकी हुन्छिन् तर कट्टेल सरले आफ्नो मनको पीडा पोख्न श्रीमतिलाई आफूले लेखेको राजीनामाको खेसा देखाउँछन्। यो देख्ने वित्तिकै श्रीमति कट्टेलनीले ती खेसा खोसेर च्याती दिन्छिन्। अनि कट्टेल सर ढुक्क भएर सुत्छन्। किनकी राजीनामा दिने मन त उसको पनि थिएन। मात्र उसले आफ्नो पीडालाई विद्रोही रूपमा पोख्न यी सब गरेको थियो।

कट्टेल सरले आर्थिक अभावमा विभिन्न परिस्थितिलाई भोग्न परेको छ। कहिले घरमा चामल छैन त कहिले चियामा दुध छैन आदि यस्ता परिस्थितिसँग उसले आफ्नो विरामी बुबालाई पनि खेपेर बाँच्नु परेको छ खपेर भन्नु यस अर्थमा कि बुबा सधैं हुँदा पनि उहाँ ज्यादै नियम संयमको जीवन बिताउने गर्नु हुन्छ। बिहान सबै उठ्नु हुन्छ र टहलिन जानुहुन्छ। पूजालाई प्रसाद चाहिन्छ। भात समयमा चाहिन्छ। तातो पानी पटक-पटक चाहिन्छ। छोरी वा श्रीमती कतै बाहिर जान थाले छन् भने किन कदाँ जानथाले नजाऊ भनेर सोधपुछ गर्नुहुन्छ। यस्तो कुराहरू कट्टेल सर उ उसका परिवारका कुनै सदस्यलाई मन पर्दैन। अर्को तिर बुबा विरामी हुँदा पनि केही उपद्रो गर्छन जस्तै - आँखा नचाउने, जिब्रो झिकेर जिस्काए जस्तो गर्ने, ओछ्यानमै दिसा पिसाब गरिदिने, अर्को कुरा कहिलेकाहीं उहाँमा हिंसात्मकता देखा पर्न थाल्छ। एक रात कट्टेल सरका बुबा उठेर आफू सुतेको कोठाके अर्को कुनामा सुतेकी नातिनीको घाँटी थिचेर मार्ने परिस्थितीमा पुग्छन्। धन्य नातिनी

बलियो थिइन् र हजुरलाई झङ्कारेर आफूलाई बचाउन सकी र चिच्याई। यस्ता उपद्रोले गर्दा छोरीहरू रातभर राम्ररी सुत्न सक्दैनथे तर कट्टेल सरको विवशता की अर्को कोठा भाडामा लिन सक्दैनथ्यो र छोरीहरूलाई बुबा सुत्ने कोठामा सुताउन ऊ विवश हुन्थ्यो। बिरामी बुबा र चार जना छोरा-छोरी र आफू दुई श्रीमान् र श्रीमती जम्मा सात जनाको परिवार पाल्ने केवल लेक्चरर भएर उसलाई गाहो भएको छ। इन् त्यसैमाथि उसको पहिलो छोरोले घर छाडेर गएको पनि वर्षो भइसकेको छ। यदि ऊ भएको भए परिवार यति ठूलो नहुँदो हो। कान्छो छोराको पर्खाइमा तिनोटी छोरीहरूको जन्म भयो र ऊ ठूलो परिवारलाई हलुङ्गो रूपमा उचाल्न सकिरहेको छैन।

एकदिन कट्टेल सर पिरियड सिद्धिएपछि विश्राम गरिरहेको हुन्छ किनकी आजकल उसलाई एक घण्टी पढायो की थकाइ लाग्दो रहेछ। कट्टेल सर विभिन्न कुरा मनमा खेलाइ आँखा चिम्लेर विभागीय कार्यालयमा बसिरहेको बेला अन्य प्राध्यापकहरू पाठक, प्रधान र शर्मा आउँछन् र तीनीहरू कुनै केटीमाथि टीका-टिप्पणी गरिरहेका थिए जसका ठूलूला छातीहरू छन्। - “साले आँखा लाउँछस र स्टुडेण्टमाथि ?” यो वाक्य प्रधानले शर्मालाई भन्छ। शर्माले जवाफ दिन्छ - “त्यो मेरो स्टुडेण्ट होइन, फर योर काइण्ड इन्फर्मेशन इनज्याय इट शर्मा जवाफ दिन्छ। यतिकैमा कट्टेलले आँखा उघारेर भन्छ - शर्माजी अलि-अलि आफ्नो उमेर पनि त हेर्ने गर्नुस्। उही पनि गधा तैले चिनिनस् यो कटी झरूड खेलेकी हो - तँ त यसको आमालाई पनि यसैगरी सपनामा देख्थिस, जब ऊ यहाँ पढने गर्थी ?” यति भनेपछि सबै जना हाँस्न थाल्छन्। क्याम्पसमा अब यिनै ३-४ जना शिक्षक छन् जो सँगसँगै वृद्ध हुन थालेका छन्। शर्माकी स्वारनी कुनै जमानामा आफूभन्दा कम उमेरको एउटा टिटोसित भागेकी थी। तर शर्माले अर्को विहे गरेको थिएन र बडो रोमाण्टिक भएर बाँच्ने गर्थ्यो किनकी शर्मा एकलो भएपनि क्याम्पस बाहेक सम्पन्न घरमा होम ट्युशन पनि पढाउँथ्यो र जग्गा जमीन पनि उसँग थियो। अर्थात् कट्टेल सर जस्तो आर्थिक अभावमा ऊ थिएन। यस्ता वृद्ध शिक्षकहरूको जुनियर शिक्षकहरू माथि धाक हान्ने प्रवृत्ति तिनिहरूको प्रत्येक कुरामा देखिन्थ्यो तर, जुनियर शिक्षकहरू प्रायः यस्ता वयोवृद्धहरूमाथि मनमनै हाँस्ने गर्थे र बाहिर चाँहि दया देखाउँथे। उनीहरू ती वृद्ध शिक्षकका कुरालाई कहिले ध्यान दिएर

सुन्थे भने कहिले सुन्दा-सुन्दै छोडेर हिँडथे र आजको समयमा विद्यार्थीले पनि यस्ता बुद्ध शिक्षकलाई, मन लागे नमस्कार गरेर सम्मान् देखाउँथे र मन नलागे नचिनेको जस्तो गरेर हिँडथे। यस्ता शिक्षकको घण्टीमा विद्यार्थीहरू पढनुभन्दा बढी कागतको गोला फ्याँकाफ्याँक गर्नु, आँखाका ईशारा गर्नु वा क्लासबाट सुरुक्क निस्कन र मन लागे फेरि प्रवेश गर्न हिचकिचाउँदैनथे। सारांश के भने, यी बुढा प्रोफेसरहरू चारैतिरबाट एक प्रकारले अदभुत मनोरंजनका र बेकारका समान बनेका छन्।

जुनियरहरूलाई कुनै वास्ता थिएन। तिनीहरू त टिटीकि राजनीतिको कुरा गर्दै बस्थे। त्यसमध्ये केही सधैं हिटीहरूसित एउटा एकान्त र निकटता उम्काउने प्रयत्नमा रहन्थे। तर सनसनी तब मच्चिन्थ्यो .... जब कोही कुनै छात्रालाई टपक्कड टिपेर अज्ञातवास हिडिदिन्थ्यो। र समयपछि प्रकट हुन्थ्यो अथवा यो पैसे छोडेर अरु केही थोक गर्न थाल्थ्यो। यस्तो बखत प्रायः सबै शिक्षकले कतै न कतै केही न केही व्यंग्यको सामना गर्नुपर्थ्यो, जसको थालनी धेरै जसो यसरी हुन्थ्यो “अचेलका टीचर त झन सबभन्दा खतम छन। तिनिहरू जति पतित कोही छैन। आदि यसरी यस परिच्छेदमा हाम्रो नेपालका क्याम्पसको परिवेश र शिक्षक जीवनलाई राम्ररी वर्णन गरिएको छ।

कट्टेल शर्मासँग अलि बढी मित्रता छ। उनीहरू दुवैसँगै बसेर कहिलेकाहीं रक्सी पिउने गर्छन र बलजपती शर्मा कट्टेललाई लिएर कहिल धुलीखेल त कहिले नगरकोट, ककली, दामन वा शिवपुरीको डाँडा घुम्न जान्छ। जहाँ कट्टेल हरियो घाँसमा आँखा चिम्लेर उत्तानो परेर सुत्छ। शर्मा स्मृतिरहित हुन वहानामा ऊ आफ्नो बिरामी जीवन र अतीतका क्षणलाई सम्झिरहेको हुन्छ। खासगरी जाँड लागेपछि कट्टेल शर्मालाई वेस्टफ्रेन्ड भन्छ र उसको लागि ज्यान पनि दिनसके भने कुरा गर्छ। त्यस्तै जाँड लागेको बखत शर्मा चाहि “कट्टेल म मर्दा तँ मलाई मात्र होइन, मलाई तँले काँधमा बोक्नुपर्छ। नत्र साले म ती अर्थीबाटै उठेर तँलाई गोदन थालुँला। भन्ने गर्छ। यस्तो कुराहरू गर्दै तीनिहरू ढिलो राति घर फर्कन्थे। कट्टेल सरले घर ढिलो फर्कदा कट्टेल्लीको अनुहार निद्रालु झगडालु र उदास हुन्छ।



भोलिपल्ट श्रीमतीसँग कट्टेल सर किनमेल गर्न बजारतिर जान्छन् तर त्याहाँको महँगीले गर्दा थोरै मात्र सामान किन्न पाउँछन्। बल्लतल्ल नुन, चिनी र अरू केही आवश्यक चिज किन्न सक्छन्। यस्तो अवस्थामा श्रीमती कट्टेलनी सस्तो एउटा साँस फेर्नु हो, अब त त्यो पनि यस शहरमा नपाइने जस्तो छ।” भनेर आफ्नो दिक्क लाग्दो विचार पोख्छन्। घर जाने क्रममा उनहीहरूले एउटा पहाडिया ठिटोले ३ मोर प्रति किलो काउली बेचेको देख्छन् र उनीहरू छक्क पर्छन् यति सस्तो साथै अत्यन्त खुशी पनि हुन्छ कि आजको दिनमा केही खुशी त पाइयो किनकी कट्टेल परिवारको लागि कुनै कुरा सस्तोमा किन्न पाउनु धेरै भाग्यको कुरा जस्तो हुन्थ्यो। तापनि एउटा असल र इमानदार व्यक्तिको रूपमा कट्टेल सरलाई यति सस्तो काउली किनेर त्यस ठिटो माथि भइरहेको अन्याय बढाउन मन लागेन तर श्रीमतिले उनलाई चुप लगाइन र काउली किनी घर फर्के। यसरी यस अनुच्छेदमा एउटा मध्यम वर्गीय परिवारमा सानो-सानो कुराबाट पनि ठूलो खुशी पाइने कुरा झल्कन्छ।

यसरी नै दुःख सुखसँग उनहरूको जीवन बितिरहेको थियो। एकदिन कुमार भन्ने साथीले कट्टेल सरलाई पुरै परिवारलाई निमन्त्रण दिएर आफ्नो घर बोलाएछ। कट्टेल सर आफ्नी श्रीमती र सानो छोरालाई लिएर एकदम सजि सजाउँ भएर केही दुरी बसले र केही ट्याक्सीले पार गरी त्यो कुमार भन्ने साथी कहाँ जान्छन् कुमार ज्यादै धनी भएकोले कट्टेल सर उसका घरमा आफ्नो रवाफ देखाउन अलि बढी सजी सजाउ भएर हिँडेको थियो र सोची रहेको थियो कि जे होस् आफूभन्दा धनी भएपनि कुमारले उसलाई साथीको रूपमा इज्जत गर्छ भनेर ऊ जयादै खुशी थियो। तर जब श्रीमती कट्टेलद्वारा उसलाई थाह हुन्छ कि उनहीहरूलाई त खाना पकाउनका लागि सहयोग गर्न मात्र बोलाइएको रहेछ, पार्टी त भरे राति मात्र हुन्छ रे र उनीहरूलाई अहिले बिहान काम सघाउनका लागि मात्र बोलाइएको हो। तब कट्टेल सर आफूलाई बबुरो अनुभव गरिरहयो। यस्तो अपमानपछि उसलाई अब प्रत्येक त्यहाँ दृश्य र व्यवहारमा जताजतै बेइज्जत छत्ताछुल्ल भएको देखियो। कुमारले आफूलाई सपरिवार पार्टी खान अपमानित हुनलाई बोलाएको रहेछ। केहीबेर चुप लागेर तास खेली र अलिकति रक्सी खाई आफ्नो अपमान कट्टेल सरले सेलाउन खोजेकै बखत

उनका छोराले ओछ्यानमा दिसा गरेकोले कुमारकी स्वास्नी चिच्याउँदै वातावरणलाई कोलाहल बनाउँछे। र सानो बच्चा र आमा दुवैलाई असभ्य सम्म भन्छिन्। यति भएपछि बिचरा केही नबोल्नसक्ने अवस्थामा गयो। उनीहरूका साथीमध्ये कसैले बच्चालाई र कसैले बच्चाको अमाले गैँडागुडी खाएकोले बच्चाले दिसा गरेको श्रीमती कट्टेलको ठट्टा उडाए। यसरी श्रीमान र श्रीमती कट्टेलले विभिन्न किसिमले त्यहाँ चोटपटक खाए। अन्त्यमा बस्न नसकी घर फर्के। बिहान घरबाट निस्कँदा जति रउस उम्लेको थियो, अहिले त्यो भन्दा कति गुना गजुल्टिएको उदासी शरीर भरिको भरिको स्वीटर तयार हुने ऊन जति बेरिएर आएको थियो। कट्टेल सरको चोटपटकलाई यहाँ हिसाब गर्ने नसकिने अवस्था थियो।

अर्को दिन बिहान उठ्दा कट्टेल सरको कानमा 'मिट्टेकी आमा भागी' भन्ने वाक्य सुनिन्छ। अर्थात् त्यस टोलभरिको घरमा गएर भाडो मल्ने आइमाई मिट्टेकी आमा थिई जो कही कोही सित भागी र सबैको घरमा भाँडा आ-आफैँ मोल्नुपर्ने स्थिति भयो। यस्तै बेला सत्याल कट्टेल सरको घर आइपुग्छन् र दुवैजना चिया खान्छन् जानेबेलामा सत्यालले भन्छ "भरे ६ बजे पीपलको बोटमा भेटौँ न प्रोग्राम छ। त्यसैबेला सत्यालले आफू र शर्मा वर्ष दिनका लागि स्टेट्स जाने कुरा बताउँछ। केही बेरको बसाइपछि। प्रोग्राम छ भनेको सुनेपछि कट्टेलका मन भित्रभित्रै खुशी हुन्छ कि साँझतिर केही नभए रक्सी थोकाइ त अवश्य हुनेछ।

आजको सारा दिनचर्यालाई उसले राम्ररी पूरा गरेछ। साँझ पीपलवोटमूनि सत्याल, शर्मा, कट्टेल र प्रधान चारैजना जम्मा भएछन् र रक्सी र चुरोट खाएछन्। त्यसपछि उनीहरू अब राम्ररी टिटको अड्डामा जाँड खान जाने भन्दैछन्। यस्ता ठाउँमा तिनीहरू ज्यादै सावधान हुन्थ्यो कि अरू शिक्षकसित वा विद्यार्थीसित जम्काभेट नभैदेओस।

कालो पुलनिर एउटा पुरानो झिडटीको घर थियो। त्यसका प्रत्येक कोठामा रक्सी र टिटको साथ पाइन्थ्यो सत्याल, शर्मा प्रधान र कट्टेल त्यही गए। त्याहाँ उनीहरू अझ रक्सी खाँदै केटीसँग चल्न र जिस्कने काम गरिरहे। शर्माले पैसा तिरेकोले ती केटीलाई उसले अँगालैमा च्यापेको थियो। अरू त्यसका गाला, तिघ्रा, छाती सुम्सुम्याउँदै चिम्ट्दै हिँडन थाले। यी क्रियाकलाप

केटी घृणाले खपिरहेकी थिई किनकी पैसा शर्माले तिरेको थियो भन्ने कुरा ती केटीलाई पनि थाह थियो। अब ती अर्धव्यक्का शिक्षकहरू आफ्ना अर्धइच्छा पूरा गरेर घर फर्किन थालेका थिए त्यक्तिकैमा प्रधानले कोठा बाहिर एउटा नामूद र बदमास विद्यार्थी गोपाललाई देख्छ। अब कसरी बाहिर जानु पर्यो फसाद। शर्माले नम्रसँग केटीलाई भन्यो - “हेर तिमी त्यता जाउ र त्यसलाई अर्के कोठमा लगिदेउ कि त्यसलाई बेस्सरी रक्सी खाइदेऊ, अनि हामी जान्छौं।” त्यसपछि त्यस केटीले गोपाललाई ज्यादै रक्सी धोक्न लगाइ र २० मिनेटपछि गोपालको अवस्था बेटेगान भयो र गोपाल लल्याक लुलुक पर्यो। अनि ती चारै जना आफ्ना मुख रूमालले छोपेर भाग्न थाले तर प्रधानको रूमाल झरेर छ र उसले मुख बङ्ग्याएर अनुहार नाचिने बनाए छ। यति हुँदा-हुँदै पनि उनीहरूको कानमा ‘प्रधान सर, शर्मा सर, कट्टेल सर, सत्याल सर।’ लर्बरिएको आवाजमा गोपालले भनेको सुनियो। अब बाहिर जम्मा हुँदा तीनीहरूको अवस्था बेतोसित विग्रेको थियो, जसलाई न नीलाम्य भन्न सकिन्छ, न राताम्य। मानौ चोरी गर्दा समाटिएका थिए तीनीहरू भोलिदेखि क्याम्पसमा आफ्नो इज्जतको लिलामी हुन डर, कुरा क्याम्पस चीफसम्म पुग्ने, विद्यार्थीले हेप्ने आदी-आदी पीरले घर पुगिसके पनि कट्टेल सरलाई निद्रा लागेन र जसो तसो उनी ओछ्यानमा कोल्टो फेर्दैछन्।

भोलिपल्ट बिहान टाउको टन्काइ र घरपट्टीको डाँकोले कट्टेल बिउँझिन्छ। उसकी स्वास्नीको स्वर पनि झर्को साथ निस्केको थियो। अर्कोतिर घरपट्टि स्वास्नी जोडले - “त्यस्तो छ भने छाडिदिनु घर क्या ? तपाईंहरूलाई पो डेरा भनेको अर्काको घर कुनै माया ममता हुँदैन, हाम्रो त हाड घोटी घोटी कमाएको पैसाले उठाएको घर हो, जे गरे पनि सहन त सकिन्न, बुझ्नु भो ?” यति सुनेपछि कट्टेल उठेर गएछ र के भयो ? किन बाझेको भनेर सोधेछ। उत्तर दिनुको सट्टा घरपट्टिले उसले माथि लगेछ र एउटा कोठको ताल्चा खोलेर भित्र लगेछ। भित्र पसेपछि पिसापको दुर्गन्ध थियो, झ्यालको ऐना फुलेको देखियो र एउटा मानिसलाई बाँधेको देखियो। त्यो मानिस उनकै पिता थिए र कट्टेल सरले आश्चर्यका साथ सोधे - “यहाँ कसरी आइपुग्नु भो ?” उत्तरमा बुढाले थाह छैन भने तर राति ऐना फोरेर पसे बुढा र बुहारी सुतेको ओछ्यानमा

सुतेछन्। कोठाभरि पिसाप, खकार बाहेक केही गरेनन् भनेर घरपट्टिले बतायो र त्यसैले बुढालाई बाँधेर राखेको भने। बुबाको रोग बढेकोले बुबाले यस्तो गरेका हुन् भन्ने कुरा कट्टेल सरले बुझे तर ती घरपट्टिलाई त निउ चाहिएको थियो र उसले बेसस्री कराइ-कराइ घर खाली गर्ने कुरा गर्यो।

भोलिपल्ट क्याम्पसमा कट्टेल सर क्लास गरीओरी चिफसँग विदा माँग्न गएछन् तर क्याम्पस चीफले विदा नदिन कुरा गर्छ तापनि कट्टेल सर सरासर क्लर्कनिर गएर एउटा विदा आवेदन लेखेर फाली हिँडेछन्। दुई तीन ठाउँमा डेरा पनि हेरे र राति पर्दा घर फर्कदा त्यहाँ तमासा खडा भएको रहेछ। त्यो के भने कट्टेल सरका धेरैजसो सामान बाहिर आँगनमा फ्याँकिएका रहेछन् र यो घरपट्टिको छोराको बहादुरी थियो। ऊ आजै कर्केको रहेछ र आफ्नी स्वास्नीको कोठामा बुढा ऐना फुटाएर पसेको थाह पाएपछि यी सब गरेका हुन्। त्यस रात कट्टेल सरका परिवारमा कोही निदाएनन् र भोलिपल्ट कट्टेल सरले जसो-तसो एउटा नयाँ डेरा खोजे। सिक्री बन्धक राखेर घरपट्टीलाई बाँकी घर भाडा र बुबाले ऐना फटाएको पनि पैसा उसले तिर्यो। अनि उनीहरू सारा परिवार नयाँ डेरामा सरे। नयाँ डेरामा आएपछि उनीहरूलाई अलि राहत भयो। यो डेरा पहिलाको जति राम्रो थिएन तर पनि अलि मनमा शान्ति भएको कुरा श्रीमती कट्टेलनी भनिन्छन्। त्यसै बखत तिनीहरूकी सानी छोरीले एक्कासी सोधी - “याँबाट पनि अब त्याँबाट जस्तो निकाल्छन् कि निकाल्दैनन् बुबु ?” यस्तो कुराले केटाकेटीलाई क्या प्रभाव पार्दो रहेछ। कट्टेल सर निरुत्तर भएछन् र उनी उत्तर दिन नसकि, निदाए जस्तो गरेर सुतिरहे। वास्तवमा यो घटनाले बालबालिकाको मनमा निकै आघात पुगेको देखिन्छ र कट्टेल सर पिता भएर पनि आफ्नो आर्थिक अभावले गर्दा छोराछोरीदेखि मुख लुकाउन बाध्य भएका छन्।

समय बित्दै गयो र कट्टेल सरको समस्याहरूमा अर्को समस्याले पनि ठाउँ पायो, त्यो के भने उनका छोरीहरू ठूला भएछन्, जेठी छोरी रन्जु १९ वर्षकी, माइली छोरी मन्जु १७ वर्षकी र कान्छी छोरी ८ वर्षकी भइसकेकी छे। श्रीमती कट्टेलनी र समाजका बुढाबुढी सबै छोरीलाई बुढी कन्या बनाउन लागेको र विहे किन नगरिएको भनेर केरकार गर्छन तर कट्टेल सर त सधैं टाटको टाटै छन र यी कुरालाई कसै गरी टारिरहेका छन्। यस्तो समस्यालाई खेपिरहेकी श्रीमती

कट्टेल एकदिन जेठी छोरीमाथि खनिरहेकी थिइन् किनकी आज R.S. कुँदिएकी औँठी लगाएर आएकी रहिछ। यो औँठी कसले वा कुनै केटाले दिएको हो भनेर शंका गर्दै श्रीमती कट्टेल्ली रंजुलाई गाली गर्दै थिइन्। रंजु आफ्नी साथीले सुनितिले दिएको भनेर सफाई दिइरहेकी थिइन्। तर उसको सफाई माथि कट्टेल्लीलाई पत्यार थिएन। हुन त रंजुले यस्तो उपहार पहिले पनि दुई - तीन चोटी ल्याएकी थिई जस्तै अमेरिकन सारी साथीले केही दिन लाउनलाई दिएको भनेर र जर्मन गगल्स ..... साथीकी आमाले ल्याइ दिएको भनेकी थिई आज तेश्रो पल्ट औँठी ल्याउँदा सावित्री कट्टेललाई ज्यादै रिस, शंका लागेकोले उनले निकै ठूलो आपत्ति जनाइ।

शंका लाग्नु कुनै ठूलो कुरो थिएन रंजुमाथि किनकी रंजुको चालढालमा निकै परिवर्तन आएको सबैलाई अनुभव भएको थियो रंजु सिनेमा जान थालेकी थिइ, राति घर ढिलो आउँथी, कहिलेकाही रक्कसी पेट दुःख्ने, रिङ्टा लाग्ने गर्थ्यो उसलाई र ऊ उपचार पनि आफै गराउँथी त्यो पनि आफ्नो साथीका बुबा सर्जन छन भनेर सित्तैमा औषधि पनि ल्याउँने गर्थिन। रंजु धेरै जसो रातिको खाना बाहिरबाटै साथीले ख्वाएको भनेर घरमा खाँदिन थिई। एक दिन रंजुले एउटा ब्राण्ड न्यू अरोमेटिक क्वार्ज घडी लिएर आई र भनी “यो मैले बाटामा पाएँ आज।” तर श्रीमती सावित्रीलाई रिस र शंका दुवै उठयो कि यति नयाँ घडी त्यो पनि बट्टामा हालिएको कसरी बाटोमा भेटिन्छ र ऊ रंजुलाई केरकार गर्न थाली। केरकार गर्दागर्दै कपाल लुछने सीमासम्म पुगेसकेकी थिइन तर कट्टेल सरले सावित्रीलाई सम्झाउँदै भने यी सब हाम्रो शंका मात्र हो। कुनै मोरा प्रेमीले यति छिटो र त्यो पनि त्यति महँगो घडी प्रजेन्ट गर्छ भन त र यदि दिएको हो भने त्यस्तो धनी केटोलाई ज्वाइँ बनाए मैगो नि भनेर सावित्रीको रिसलाई सामसुम पार्न थाले। केही हदसम्म सावित्री साम्य पनि भइन र कसो कसो निदाइछिन तर कट्टेल सर ती विभिन्न प्रजेन्ट जुन ‘रंजुले ल्याएकी थिइ त्यो सब एउटै प्रेमीले दिएको हो कि भिन्नाभिन्नै प्रेमीहरूले दिएको पो हो कि भन्ने पीरले उनी निदाउन सकिरहेका छैनन्। अन्त्यमा उनी कमपोज निलेर निदाउँछन्। उनको निदाउदा सम्मको समयमा उत्सुकता र त्रास दुवैले ठाउँ लिएको थियो कि भोलि रंजुले के भन्नली ?

भोलिपल्ट रंजुको पिरले गर्दा होल धेरै वर्ष अगाडि घर छोडेर हिंडेको छोरालाई कट्टेल सर सम्झन पुगे। हो उनका जेठो छोरा प्रेम जुन उनीहरूलाई ज्यादै प्यारो थियो तर कट्टेल सरको अवस्था अहिले जति नाजुक नभएपनि त्यति राम्रो पनि थिएन किनकी घरमा विरामी आमाबुबा थिए जसले गर्दा ऊ आफ्ना छोराका हरेक इच्छा पूरा गर्न सक्दैनथ्यो यहाँसम्म कहिलकाहीं उसलाई आवश्यक पर्ने पुस्तक वा लुगा समेत किनी दिन सक्दैनथे। तर, त्यो छोरा उनीहरूको माया पात्र थियो किनकी पहिलो सन्तान त्यसमा पनि छोरो। त्यही छोरो एक महिनादेखि विद्यालय नगएको जब कट्टेल सरलाई थाह हुन्छ र घरमा साँझतिर छोरो व्याग र किताबहरू जम्मै हराएर आएको देख्दा कट्टेल सरलाई ज्यादै रिस उठछ र रिसका झोकमा छोरालाई ज्यादै कुटपिट गर्ने गर्छन। त्यस दिनदेखि छोरो सधैं स्कुल जान थाल्यो र अलि कम बोल्ने भयो। घर स्कुल गर्दा-गर्दै छोरा १४ वर्षको भइसकेको थियो। अब त छोरो ठूलो भएछ र परिवारलाई सहयोग गर्नेछ भन्ने आशमा सबैजना थिए। त्यस्तो समयमा एकदिन साँझ छोरो घर आएन र कट्टेल सर र श्रीमति साबित्री कट्टेलले छोरोलाई सबैतिर खोजे त कतै छोरो नपाएपछि बल्ल उनीहरूलाई थाह भयो कि छोरोले घर छोडेछ। त्यसपछि घरमा भएको पूरै महिनाको तलब जुन कट्टेलनीले सिरानी मूनि राखेकी थिइन त्यो पनि भेटेन अनि उनीहरूले यकिन गरे कि छोरोले त जम्मै महिनाभरिको खर्च वेहोरिने तलब पनि लिएर गएछ। एकातिर पूरै महिनाको खर्च अब कसरी पूरा गर्ने पिर थियो त अर्कोतिर घरबाट भागेको छोरोले भोकै बस्नु पर्दैन भन्ने सान्त्वना पनि थियो। छोरोले केही बनेर मात्र फर्कने भनेर पत्र पनि लेखेर छोडेर गएको रहेछ। कट्टेल सरलाई आज छोराले पाँच छ वर्ष अगाडि उसलाई आफूले कुटेको बदला लिए जस्तो लागिरहेको छ। यसरी छोराले घर छोडेकोले र अर्को छोरा पाउने आसामा तीन छोरीहरू भए र अन्तमा सानो छोरोको जन्म भयो। यसरी उनको परिवार ठूलो भएको थियो।

यस्तै पिरै पिरले आफ्ना जीवनका यात्रा अगाडि बढाइरहेको बेला एकदिन उनको घरमा विश्वनाथ बाजे उनको दैलामा पाहुना बनेर आइपुगे। उनको गुन्टा देखेरै थाह हुन्थ्यो कि उनी निकै दिनका लागि काठमाडौं आएका हुन्। काठमाडौं जस्तो मँहगो सहर र घरमा महिनाको अन्तिम

साता अगावै-अभावको लहर यस्तोमा पाहुना देखेर कसलाई खुशी लाग्छ र ? श्रीमती र श्रीमान कट्टेल सर दुवैलाई पिर पर्यो। शुरू-शुरूका दिनमा विश्वनाथ बाजेले सधैं साँझतिर काउली र कहिले त माछा समेत ल्याएर कट्टेलको परिवारलाई सहयोग गरे जस्तै गरे। यसबाट सबै जना खुशी थिए तर पछि विश्वनाथ बाजेको पैसा सकिएर होला उनी रित्तै हात बाहिरबाट घर फर्किन थाले। अब विश्वनाथ बाजे केवल थकाइ र फिस्चुला दुखेको चिन्ह अनुहारभरि ओसारेर घरभित्र पस्छन्। उनी बाथरूममा धेरै बेर लगाउँथे र यस्ता धेरै कुरा थिए जसले विश्वनाथ बाजेको प्रतिष्ठामा हास गरेको थियो। सबैभन्दा खतरनाक र अशोभनिय कुरा अर्को के चाहिँ थियो कि विश्वनाथ एकलै भएको बेला कट्टेलका छोरीहरूलाई अश्लील इशारा गरिदिन्थे, तर ती विवश केटीहरू यो इशारा जसो तसो सहन्थे। अर्थात् तिनको पूरा व्यक्तित्व अब आएर बेसोमतिपनको थुप्रो देखियो। तर, पनि कट्टेल परिवारले उनलाई सहिरहेको थियो र विश्वनाथ बाजे आफ्नो सम्मान नभएपनि त्यही दिन काटिरहेका थिए र यता आएर उनी केही दिनका लागि सुन्दरी जल जाने कुरा गरिरहेका थिए। विश्वनाथ आफ्ना गुन्टा छाडेर केही दिनका लागि सुन्दरीजल गए र केही दिनका लागि भएपनि कट्टेल सरको परिवारले सास फेर्यो। विश्वनाथ बाजे गएको दिन कट्टेल सरले बचाएर राखेको पैसाबाट मासु किनेर ल्यायो र सबैले आनन्द साथ खाए तर त्यसै साँझ उसले आफ्नो कुनै आफन्त मरेको खबर पायो र एक छाक बार्ने पर्ने कुरा उसले परिवारलाई सुनाऊ कि नसुनाऊ जस्तो भयो। यसमा पनि दिउँसोको तरकारी सावित्रीले फाल्ली भन्ने उसलाई पिर थियो।

अर्को दिन सत्याल र शर्मा अमेरिकाबाट फर्किसकेका छन्। उनीहरूले कट्टेललाई साँझमा कतै बस्नुपर्छ भनेका थिए। अर्थात् रक्सीको पार्टी थियो। अहिले कट्टेल सर भात खाइओरी क्याम्पस जाँदै थिए र कट्टेललाई उनले “साँझमा मेरो भात नपकाउनु, शर्मा र सत्याल अमेरिकाबाट फर्केका छन्। उनीहरूले मलाई डाकेका छन्।” भनेर भने। क्लास लिएर फर्केपछि टेबुलमा कट्टेल सरले आफ्नो नाममा एउटा गोप्य चिठी राखिएको देखे। उनले हतपत्त चिठी खोले। त्यसपछि उनको मनमा भयानक विस्फोट भयो किनकी त्यसपत्रमा उनलाई तीन महिनाको तलब

दिएर नोकरीबाट बर्खास्त गरिएको थियो। यस्तो लिखित विवरणले उनको आँखाको अगाडि अँध्यारो व्याप्त भयो। उनलाई अब विभिन्न चिन्ताले सताउन थाले, छोरीहरूको बिहे भएको छैन, छोरो विरामी छ र स्वास्नी पनि विरामी छे, बुबा झन साहै हुनुहुन्छ। अब के गर्ने तर मलाई के कस्तो कारणले हटाएको भनेर स्पष्टीकरण लिन उनी क्याम्पस चिफकहाँ जान्छन्। क्याम्पस चिफले यसमा मेरो कुनै हात छैन बरु डिनकहाँ जानुस् भनेर पठाइदियो। कट्टेल सर डिनकहाँ पनि गए तर त्यहाँ सहायक डिन थिए उनले चाहिँ भने - तपाईँ क्लासमा राम्ररी पढाउनु हुन्न र केटहरूलाई भड्काउने गर्नुहुन्छ। उनीहरूले नै तपाईँको विरुद्ध कम्प्लेन गरेका छन्।” अब कुरा चाहिँ अलिकति कट्टेल सरले बुझे र मनमा अनेक चोटपटक लिएर शर्मा र सत्यालले बोलाएको ठाउँतिर गए। केहीबेरको पर्खाइपछि शर्मा र सत्याल कट्टेल सरनिर आए। कट्टेल सरको अनुहार अँध्यारो देखेपछि के भयो ? “भनेर उनीहरूले सोधे। तत्काल कट्टेल सरले आफ्नो दुःख लुकाउन खोज्दै भने - केही होइन जाऊँ।”

केहीबेरपछि उनीहरू एउटा रक्सी पसलमा रक्सी खाइरहेका थिए। जब रक्सीले मुटु तातिय अनि कट्टेल सरले आफ्नो दुःख पोख्न सत्याल र शर्मालाई त्यो चिठी देखायो जसले उसलाई यति दुःख दिएको थियो। चिठी पढनासाथ शर्मा र सत्याल दुवै झसङ्ग भए र शर्माले सोध्यो - कहिले चिठी पाएको ? “कट्टेलले उत्तर दिए आजै।” त्यसैमा सत्यालले भन्यो - देखिसु त काम मात्र गरेर बासिस थप काम गरिनसु, त्यसैले तलाइ पारिदिए चिलिम र कुनै अर्कोदिन तलाइ म रहस्यमय कुरा भन्नेछ। यत्तिकैमा शर्मा पिसाप फेर्न गयो ठिक त्यसबेला सत्यालले त्यो रहस्यमय कुरा खोल्नो त्यो के भने यो शर्मा अलिगडबड मान्छे छ। यसले भित्री तलब पनि खान्छ र अर्कै पदमा पनि काम गर्छ र मुख्य कुरा यसले नै तेरो सर्भिस गडबड गरेको हो रे। यो कुराले कट्टेल सरलाई ज्यादै चोट पुर्यायो। केही बेरमा शर्मा फर्केर आएछ तर यति थोरै बेरमा शर्मा र कट्टेलको बीचमा ठूलो दुरी आएछ। शर्मासँग विताएका राम्रा क्षण कट्टेल सर सम्झन थाले। त्यसमा पनि शर्माले “म मर्दा तिमिले मलाई काँधमा बोक्नुपर्छ।” भनेको कुरा सम्झ्यो यस्तो मिल्ने साथिले यस्तो थोका गर्छ। अब उसका सारा कुरा एउटा घृणित र नक्कली कुराम बर्लिएछ। राति घर गएर कट्टेल सरले



आपनी श्रीमतीलाई सारा कुरा सुनाउँछ। श्रीमती कट्टेल आँखाभरि आँसु ल्याएर केही सोच्न थाली र कट्टेल सर विभिन्न विचारलाई तानतुन गर्दै तीनमहिनाभित्र कतै भनसुन गरेर आफ्नै लागि वा मंजुको लागि कुनै नोकरी खोज्नुपर्ला भन्ने कुरा सोचेर चित्त बुझाउँदै निदाउन खोज्नु थाले।

अब कट्टेल सर नोकरी खोज्नु थाले। कहिलकाहीं घरमै बसेर डायरी लेख्छन्। पानीको त्यस टोलमा अभाव रहेकोले उनी थोरै पानीमा नुहाउन कला टान्छन् र चट्ट नुहाउँछन्। घरमा श्रीमती र छोरा बिरामी छ। भएको पैसाबाट औषधि पनि उनी किनेर ल्याउँछन्। बिरामी बुबा आजकल अलि सञ्चो जस्तो देखिनु हुन्छ र यस्तो बेलामा उहाँको फर्माइस पनि बढ्दै छ। जस्तै-भातमा अलिकति घिउ हालिदिने गर, नैवेद्य किन्नलाई अलिकति पैसा दे न वासु एकजोर धोती किनिदे, आमाको सराब्दे यसपालि अलि राम्ररी गर, आदि। तर, बुबालाई थाहा छैन कि उनका छोरा कुनै प्रकारको फर्माइस गरिने लायक पटककै रहेन। रंजुले अब जस्तोसुकै दिनचर्यामा हिँडे पनि उसलाई कसैले गालि गर्दैन किनकी उसैको तलवबाट घरका खर्चहरू व्यहोरिने गरिन्छ। साथीभाई परि अब कोही कट्टेल सर कहाँ आउँदैनन्। बरु कट्टेल सर नै आफ्नो वा मंजु जसको पढाइ पनि छुटेको छ। उसको लागि नारेकरी खोज्दै धेरै ठाउँ कुदिरहन्छ। यसरी कुदने क्रममा उसले बाटामा आफ्नो एउटा मानिससँग भेट भयो जो गाडीमा थियो। गाडी रोकेर कट्टेल सरलाई नमस्ते गर्छ र म तपाईंका विद्यार्थी हु भनेर परिचय दिन्छ। त्यसपछि कट्टेल सरलाई महाराजगंजसम्म पुर्याईदिन्छ। अब कट्टेल सर त्यस विद्यार्थीकहाँ पनि नोकरीका लागि धाउन थाल्छन् किनकी त्यसले कुनै ठाउँमा जागिर लगाइदिने आश्वासन दिएको थियो त दसौं-पधौं चोटी धाइसक्दा पनि त्यसले हेरूला, प्रयास गरूला भनेर माफ जवाफ दिन्थ्यो।

कट्टेल सर एक दिन मन्त्रीका नातेदार श्यामनिधिलाई भेट्न उनका घरमा गए जहाँ कुमार र एकनाथसँग कट्टेल सरको भेट भयो। कट्टेल सर पुग्नु अगावै श्यामनिधि निस्किस्केको कुरा एकनाथले बतायो र ती तीनै जना कुनै रेष्टुराँतिर जान थाले। किनकी कुमारले कट्टेलजीलाई हिँडन कर गरेको थियो। तिनै जना रक्सी खाँदै विभिन्न कुरा गर्न थाले। जस्तै एकनाथले भन्यो -“म घर परिवारका लागि केही जोगाड गरेर क्रान्ती गर्नेछु तर कुमार चाहिँ चुपचाप रक्सी

निलिरहेको थियो, केही बेरपछि तिनीहरू सुनसान रोडमा हिडिरहेका थिए। अचानक कुमारले च्याप्प कट्टेल सरको कठालो सामायो र भन्यो - तैले मेरी स्वानीमाथि आँखा गाड्ने ?” कट्टेल सर यस्तो व्यवहार देखेर झसङ्ग भए किनकी कुमार जस्तो साथीलाई त उनले आफ्नो मित्र ठानेका थिए कि यसले त दुःख परेको बेलामा सहयोग गर्ने छ तर आज यस्तो भनेर उनी अकमक्क परे र उनले आफ्नो कठालो छोड म यस्तो घृणित कार्य गर्ने खालको छुइँ भनेर भन्यो तर कुमार झन रन्थनियो र खल्लीबाट चक्कु झिकेर कट्टेलमाथि प्रहार गर्न पो खोज्यो। अब कट्टेल सर ज्यान जोगाउन भाग्नु थाले तर कुमार र एकनाथले केही परसम्म लखेटेर उनलाई समाइहाले र फेरी कुमारले कठालो समाएर भन्यो - “तिमीहरू मेरो उन्नति देखेर डाहा गर्छौं।” कट्टेल सर यो सुनेर उदास भए किनकी उनी डाहा गर्दैन थे बरु कुमारलाई एउटा आइ र साहाराको रूपमा हेर्थे। आज आफ्नो परिस्थिती बदलिँदा मित्र पनि मित्र रहेन। यस्तो व्यवहारबाट अपमानित भएको लागि रहेको थियो र उनी चुपचाप थिए अचानक कुमारले चक्कु खल्लीमा हाल्यो र कट्टेल सरको कोठालो पनि छोड्यो र भन्यो - आजदेखि म तेरो मुखपनि हेर्न चाहँदैन। आई हेट यु।” त्यसपछि कुमार र एकनाथ एकातिर गए भने कट्टेल सर सरासर आफ्नो घर आए। घर पुगेपछि उनी सबैथोक बिर्सेर सुत्ने सुरसारमा लागे।

भोलि एका विहान रोशन स्वास्नी साहित कट्टेलकहाँ आयो जो ज्यादै मजकिया किसिमको छ र उसले पत्ते पाओस कुनै साथीसित खल्लीमा रकम छ भने जति पनि चाकरी बजाउनुदेखि पछि हरदैन तर केही नपाउनेसँग बोल्न पनि नजाला। रोशनको छोराछोरी चार आम्दानी पाँच सय छ। अब बुझ्न सकिन्छ कि ऊ कसरी परिवार चलाउँदो हो। र यही रोशन आज कट्टेल सरकहाँ पाहुना भएर आएको छ। “एका बिहान आयौ नि त ?” कट्टेलले प्रश्न सोध्दा बडो मस्तसित हाँस्दै-हाँस्दै “चिया र खाना दुवै यतै खान भनेर आएको।” भनेर रोशनले जवाफ दिन्छ। रोशनकी स्वास्नी भान्सामा श्रीमती कट्टेलनीसित मस्त भइन् र दुवै आ-आफ्ना श्रीमानका बारेमा गफ गर्न थाले। यता बैठकमा रोशन र कट्टेल सर गफ गर्न थाले। रोशनले - “भरे साँझमा एउटा एउटा पार्टी छ, यो तपाईंको निम्तो कार्ड लिनुस्।” भनेर भन्यो र कार्ड कट्टेल सरलाई दियो।

कट्टेल सर मनमनै रोशनको चरित्रसँग मिल्ले वर्षो पुरानो एकजना मानिसलाई सम्झन पुग्छन् जसको नाम उमाप्रसाद थियो। विशेषता के भने सात सालमा प्रशस्त क्रान्तिकारी कामहरू गरेको थियो जसले गर्दा आजसम्म यस नधानी नहुने दुनियाँलाई धान्दै आउन सकेको थियो। उमाप्रसाद आफ्नो असाधारण व्यक्तित्वद्वारा मानिसहरूका विभिन्न 'पेण्डिङ्' कामहरू फत्ते पारिदिने र कमिशन खाने गर्छन। यसरी उनी क्रान्तिकारी बेलाका परिचित अब मन्त्रि पदमा बहाल भएका व्यक्तिद्वारा अरूका काम गराएर पैसा र प्रसिद्धि दुवै कमाएर ठाटका साथ हिंडथे तर कट्टेल सर यस्तो चाकडी गरेर पैसा कमाउन सक्दैनथे।

अपईटमा सम्भव भएजति राम्रो र स्वादिष्ट भात ..... कट्टेलनीले पकाएकी थिइन। सबै जनाले ठिक समयमा खाना खाए। तर जाने बेलामा रोशन र उसकी श्रीमती किन हो कुन्नी उदास भएर घर फर्के। यसबाट कट्टेल र कट्टेलनी पनि अलि उदास भए आखिर श्रीमतीले त सबै राम्रै व्यवस्था गरेकी थिइन्। तापनि कता-कता सबैलपाई केही खल्लो लागेको थियो।

अब कट्टेल सर साँझमा पार्टीमा जानका लागि लुगा खोज्ने थाले। तर, उनले एउटा पनि राम्रो लुगा फेला पार्न सकिनन्। यसरी लुगा खोज्दा कट्टेल सर कट्टेलनी एउटा कुरा सम्झन देखि आफूलाई मनमनै छेक्दै छन्। एकजोर लुगा छ। शानदार छ। सुट र टाइ सहित छ। तर त्यसलाई कट्टेल सर श्रीमती कट्टेल मन पराउँदैनन वा कट्टेल लगाउन चाहँदैन किनकी त्यो सुट कुमारले कुनै बखत राम्रो आम्दानी भएकोले कट्टेल सरलाई दिएको थियो। तर, सधैं एउटा पनि लुगा नभेटेपछि अन्त्यमा विवश भई कट्टेल सर त्यही कुमारले दिएको सुट लगाएर पार्टीमा जान्छन्। त्यहाँ गएपछि कतै कुमारले देख्यो भने के होला भन्ने टिठ लाग्न थाल्यो। भरसक कुमारबाट उनी आफूलाई लुकाउन थाले। अचानक पार्टीमा कुमार दुई-तीन जनासँग कुरा गरिरहेको देखियो। कट्टेल सरले आफूलाई कुमारबाट जोगाउनका लागि केही पर पुगेर अर्कोपट्टि फर्केर उभे छन्। तर केही बेरमा कुनि हो कसरी कुमारसँग कट्टेल सरको जम्काभेट हुन्छ। कुमार केही बोल्दैन, मात्र तलदेखि माथिसम्म कट्टेल सरलाई हेरेको हेरै गर्छ। अब कट्टेल सर आफूलाई नाङ्गो अनुभव गर्छन्। कट्टेललाई हेर्न छोडेर कुमार अर्कोतिर फर्किन्छ भने कट्टेल पनि अर्कोतिर फर्केर रक्सी खान थाल्छ।

कट्टेल सरलाई दिकदार भयो र नाङ्गो भएको फिलिङ् गइरहयो र सारा बेसोमती परिस्थितिलाई ऊ एउटा मूर्खले पहिरोलाई झेलै झैं झेलिरहयो ।

धेरै बेरपछि कट्टेल सर त्यस पार्टीबाट रोशनलाई खोज्दै निस्किए । त्यस पार्टीमा रोशन तर आएको रहेनछ । सायद ऊ कुनै परिस्थितिमा परेको छ । घर गएर कट्टेल सरले त्यस सुटलाई बेचीदिने निर्णय गरे किनकी अब त्यो सुटलाई लगाउनु आफ्नो अपमान गर्नु हो, जस्तो उनलाई लाग्यो ।

जीवनका अनेक दुःखेसोलाई झेल्दा झेल्दै कट्टेल सरको जीवनमा आज ठूलो तोड पर्ने सम्भावना देखिएको छ । के भने सधैं अलि-अलि बिरामी रहने छोरो आज निकै बिरामी भएको छ । उसलाई तल्लो पेट दुख्न थालेको छ । ज्वरो आउन थालेको छ । रुचिहीनताले गर्दा दुब्लाउँदै गएको छ । त्यसको हात मुख खुट्टा जम्मै सुनिएको छ । अनुहार पहेलो भएको छ । कट्टेल सर र श्रीमती कट्टेलनी आफूले सकेजति छोरोलाई नुन कम खुवाउने गरे त रोग निको भएन र क्लिनिकमा लग्नै पर्यो ।

डाक्टरले रगत, दिसा, पिसाब सबै जाँच गर्ने सल्लाह दियो र पिसाबको मामुली इन्फेक्सन हो भनेर सान्त्वना दियो । केहीदिनपछि जब डाक्टरले सत्य कुरा भन्यो कि तपाईं छोराको दुवै किडनी इयामेज छ तब कट्टेल सरलाई आकाशबाट तल झरे झैं भयो । जसो तसो अनुहारमा आएका हतास भावलाई फाल्दै कट्टेल सरले सोधे:- “डाक्टर साहेब निको त हुनसक्छ ?” डाक्टरले जवाफ दियो - “हुनसक्छ तर तपाईं हामीलाई बेहाने गारो । हामीले भ्याउनेमा त अही पखिनुपर्ने हुन्छ, तसैले दिल्ली लग्दा राम्रो होला । अब आँट गरेर होला डाक्टरको क्लिनिकबाट कट्टेल सर निस्किएर आफ्नो घर गए । घरमा सावित्री व्यग्र थिइन् र सोधिन “के भन्यो डाक्टरले ?” कट्टेल सर अब के भनूँ र के गरू जस्तो भएर भन्न थाले:- “पिसाबको रोग हो, दिल्ली लग्नुपर्छ भनेर डाक्टरले भन्यो ।” भनेर उत्तर दिए । अब छोरोलाई दिल्ली लग्नु पैसा चाहियो । कहाँबाट ल्याउने ? के गर्ने ? सोच्दा-सोच्दा सावित्रीले ‘ईश्वरी भन्ने व्यक्तिलाई सम्झिन्छ जसलाई कट्टेल सरले २ वर्ष अगाडि आफ्नो दसैं पेश्कीबाट ५००/- रु. सापटी दिएको थियो । त्यस बखत त्यसको घरमा कुनै

मरण-वरण भएको थियो। तर त्यससपछि त्यसले यति झुलायो कि पैसा फर्काउने कुरालाई बिसर्ने योग्य बनाइ दिएको थियो र कट्टेल सरले पैसा माग्नु छोडेका थिए तर आज कट्टेल सव छोरोको अवस्थालाई हेरेर आफूले दिएको पैसा सापटी माग्नु गएको जस्तो गरेर ईश्वरीको घर गए। ईश्वरी घरमै थियो। भेट पनि भयो र सबैकुरा थाहा पाएपछि ईश्वरीले “भोलि बाह्र बजेर आउनु तपाईं जति हुनसक्छ म मिलाउँछु।” भनेर भन्यो। भोलिपल्ट कट्टेल सर ईश्वरीको घर गए तर ईश्वरी घरमा थिएन। फेरि अर्को दिन पनि कट्टेल सर ईश्वरीका घरमा गए र ईश्वरी कुनै पाहुनासँग कुरा गरिरहेको भट्टियो तर पाहुनालाई बाहिरसम्म पुर्याउने निहुमा ईश्वरीले टाप कस्यो। यता ईश्वरीको बैठकमा आधा-पौन घण्टा पर्खेपछि कट्टेल सर दिक्दार भएर ईश्वरीप्रति एउटा निकृष्ट र निरूपाय भाव लिएर घर फर्के।

घर पुग्दा छोरोलाई अस्पताल लगिसकेको कुरा उनले थाहा पाए। उनी हतार-हतार अस्पताल गए। उनले देखे छोरो ज्वरोले ग्रस्त भएर निस्लोट भएर, लोलाएर लडेको रहेछ। छोरोले लट्ट आँखाले एकछिन उनलाई हेर्‍यो, त्यसपछि चिम्ल्यो र सायद निदायो। भोलिपल्ट ज्वरो उर्तिएपछि छोरोलाई लिएर कट्टेल सर घर फर्किए। झण्डै एक हप्तापछि छोरोको खाना रुचि हराएजस्तो भयो। ऊ ओछ्यानबाटै उठन नसक्ने भयो। अनुहारमा पहेलेपन अझ बढेको र जिउ झन कमजोर भएको अनुभव भयो। छिनछिनमा ऊ जुसुकक उठन खोज्छ, चिच्याउने र हातखुट्टा तन्काउने गर्छ। घरमा डाक्टरलाई बोलाइयो र भएको रूपियाँ जति त्यसैमा खर्च भयो। डाक्टरले लेखिदिएको औषधि ल्याउन कट्टेल सरसँग पैसा छैन।

यसैबखत कट्टेल सरको मनमा एउटा अमान्य विचार आउँछ। जेसुकै भएपनि एकपटक कुमारकहाँ जानुपर्‍यो। आखिर ऊसँग घटेको घटना आफ्नो पनि केही गल्ती हुनसक्छ र म निहुरिएकोमा कुमार खुशी भई मलाई सहयोग गर्ला। भन्ने कुरा सोचेर कट्टेल सर कुमारकहाँ गएछन्। कुमारको गेटमै एउटा १५-१६ वर्षको टिटो भेट भयो। र कट्टेल सरले त्यस केटालाई बासुदेव कट्टेल आएका छन्। भन्ने खबर कुमारसम्म पुर्याइदेऊ भन्यो र केटो भित्र गयो। दस पन्ध्र मिनेट पछि केटो बाहिर आयो र भन्यो - सर माथि व्यस्त होइसिन्छ रे अहिले बरु यो ...

हजुरलाई दिनु भन्नु भएको छ।” भन्दै सयको तीनवटा नोट कट्टेलको हातमा राखि दियो। कट्टेल सर एकछिन अक्क न मक्क परे र अर्को मन अपमानको आगो र शुन्यताले ढाकियो। त्यसपछि उनले ती नोट ठिटोको खल्लीमा घुसार्दै-‘के ठान्छस् गधा तैले मलाइ।’ भन्दै उनी बाटो लागे। सडकमा यताउता भौतारिँदै कट्टेल सर आत्महत्या गरू कि धेरै नफर्क जस्ता विचार गर्दागर्दै उनी चाहँदै सत्यालको ढोकामा उभिन पुगे सत्यालले छोरोको बिरामीबारे थाह पाएपछि ३५०/- रूपिया तुरुन्त दियो र अझ चाहियो भने फिक्री नगर म पर्सितिर तिम्रो घर आउँला भनेर विदा गर्यो। कट्टेल सर हतार-हतार औषधि किन्न औषधि पसल गए र श्रीमानको हातमा औषधि देखेर कट्टेल्ली अलि खुशी भई। छोरालाई तुरुन्त औषधि खुवाइयो। यस्तो १८-१९ दिनसम्म चल्थे। त्यसपछि चल्नेलायक केही रहेन। डाक्टर दुईपल्ट आइसकेको थियो। आप उन्नाइसौं दिनको दिन ऊ अन्तिम पटक कट्टेलसरको छोरोलाई जाँचन आएको थियो। आज छोरोलाई घ्याघ्यार हुन थालेको थियो, सास अनौटो किसिमले चलन थालेको थियो, डाक्टरले इन्जेक्सन दिएपछि ऊ केही छिनका लागि सुत्थे र एकछिन उठ्यो। उठनासाथ उसलाई भोमिटमाथि भोमिट हुन थाल्यो। पाइतालाहरू चिसो हुन थाले। आज कट्टेल सरले आफूलाई ज्यादै शक्तिहीन भएको महशुस गरे। आफ्नो छोरो समाप्त भइरहेको र आफूले केही पनि गर्न नसक्ने अवस्था खेप्नु जस्तो केही पनि गाह्रो छैन जस्तो उनलाई लागिरहयो। अन्त्यः उनीहरूका छोरोले टाउको ढल्काएर प्राण त्याग्यो।

श्रीमती कट्टेल्ली रूदाँ-रूदाँ नमर्नु नबाँचु भइन् भने कट्टेल सरलाई आफू पागल झैं कसलाई गोदुँ कि जस्तो अनुभव गर्न थाले। वरपरका सबै छिमेकीहरू आएछन् र सत्याल पनि आएछ। अब मलामी जाने लाश जलाउने जम्मै व्यवस्था सत्यालले गर्दै छ। कट्टेल सरका छोरा सधैंको लागि सुतेछ तर कट्टेल श्रीमान र श्रीमती अलिकति पनि निदाउन सकेका छैनन्।

धेरै दिन लाग्यो कट्टेल परिवारलाई छोराको पिडाबाट टाढा जान कट्टेल र कट्टेल्ली यदाकदा छोरालाई मनपर्ने कुरा र छोरालाई सम्झिरहन्थे। यस्तोमा कहिलकाहीं जेठो छोरोलाई पनि उनीहरू सम्झिन्थे। घरमा रंजु र मंजुले जागिर गर्न थालेका छन्। कहिलकाहीं आफू पो केही गरू भनेर कट्टेल सर यताउता धाइरहन्छन तर निराश भएर मात्र फर्कन्छन् आजकल कट्टेल सरलाई संचो

छैन। मुटु हल्ले जस्तो र प्रायः उकालो चढ्दा निकै बेरसम्म स्वाँ-स्वाँ भईरहन्छ। एकदिन उनी कतै बाहिरबाट घर आए र हातमुख धुन भनी धारामा गए र मुखमा पानीका फोहरा छयापन थाले। तर अचानक उनका आँखाहरू थुनिकै गर, छाती भरिका नसाहरू तन्केको र थाम्न नसक्ने गरी बेतोडसित दुखेको अनुभव भयो र हात धाराबाट फुस्कियो र उनी बेहोस भए। होस आउँदा कट्टेल सर अस्पतालमा थिए। र आफूलाई हृदय रोग लागेको थाह पाए छन्। अर्थात् कुनै ठूलो पीर गरे मृत्यु निश्चित थियो र पीर, दुःख र समस्याको कमी थिएन उनको जीवनमा।

अस्पतालबाट आज कट्टेल सर घर आएको केही दिन भइसक्यो। उनी समय विताउन डायरीमा केही लेख्दै छन्। अब उनको ओछ्यान उनका बुबा सुत्ने कोठामा लगाइएको थियो। अब आफू र बुबा दुवै एकै तहमा भएको अनुभव हुन थाल्यो। छोरीहरू र श्रीमतीले आफूलाई बुबा जस्तै उपेक्षा त गर्दैनन भनेर जाँचका लागि उनले छोरीहरूहरूलाई र स्वास्नीलाई विभिन्न आज्ञाहरू दिन्छन् तर जसरी होस आजसम्म सबैले उनको आज्ञालाई पालन गरेका छन्। तिनीहरू कट्टेल सरलाई कुनै भित्री चोट लाग्ला भन्ने डरले पनि अटेर गर्दैनन किनकी डाक्टरले कट्टेल सरलाई कुनै किसिमको चोट पुर्याउनु घातक हुनेछ भनेर भनेको छ। यदि यस्तो कुनै भावनात्मक चोटपटक उनलाई पर्यो भने दोश्रो पटक हार्ट अटैक हुने डर हुन्छ। त्यसैमा कट्टेल सरको आधा जिउ पक्षघातको कारणले चल्दैन। डाक्टरले कुनै-कुनै बेला हात खुट्टा चलाइराख्न भनेको छ तर यो गर्न गाह्रो छ। यस्तैमा एकदिन एउटा मान्छे आयो र भन्यो 'मेरो नाम दानबहारदुर हो र मलाई कर साहबले पठाउनु भएको हो।' 'किन ?' भनेर कट्टेल सरले सोधपछि त्यसले भन्छ - तपाईंको छोराको खबर छ रे।" अब छोराको खबर आफू लिन जान नसक्दा कट्टेल सरले छोरीहरूलाई कर साहबकहाँ पठाउँछ र छोरीहरू कर साहबकहाँ गएका छन्। यता श्रीमती कट्टेलनी ज्यादै खुशी छिन्। छोरी घर आउन खोज्दै छ कि भन्ने सोचेर तर कट्टेल सर अलि दोधारमा छन्। दूई चार कुरा कट्टेल सरको मनमा निकै खटकेका छन् यस्तो अन्तिम समयमा जस्तो कि:-

१. साबु मभन्दा पनि दुखी छे र उसको लागि कहिल्यै केही गर्न सकिएन।

२. अब यरिद मेरो छोरो आउँछ भने त्यसले फेरि त्यहाँदेखि थाल्नु पर्ने हुन्छ, जहाँबाट मैले थालेको थिएँ। जे पनि गर्ला अब त्यसले गर्ला मेरा युद्धहरू त्यसले लड्ला।
३. मेरो छोरो जुन पनि जीवन बाँच्ला आफ्नो जीवन भनेर कुन्नि कसको जीवन बाँच्ला ?
४. कहिलेकाहीं लाग्छ, मचाहिँ एउटा खेर गएको गोली हुन पुगें, जसले भड्रो पनि मात्र मान सकेन जीवन सफलताको दृष्टिले।

आज फेरि उनी कान्छो छोरोलाई सम्झदै छन् र उसका अन्तिम क्षणहरूलाई। एउटा पिता हुने नाताले छोरा छोरीलाई त्यसरी जोगाउन सकिन्न भने, पिताले आफैलाई हत्यारा ठान्नुपर्छ र उनी छोराको हत्यारा आफैलाई ठान्दैछन्। र आज फेरि छोरीहरू जाँदैछन्, छोरोको खबर लिन। किनकी अस्ति जाँदा करसाहेबसँग भेट भएन। आज अब के हुने हो भन्ने सोचमा कट्टेल सर परेका छन। उनलाई अब त केही नगर्दा पनि एउटा निरन्तर भिड्नु जस्तो लागिरहेको छ बाँच्नु, वा शायद बाँच्नु नै एउटा वास्तविक लडाई हो। उनलाई आफू त्यस्तो खेलाडी भएको अनुभव भइरहेको थियो कि चारेतिरबाट विपक्षी र विरोधीबाट लछारिएका, पछारिएका थिए, रगतपक्ष भएका थिए तर जीवनमा हार मान्न चाहेका थिएनन्।

#### ५.४.१ कथानकमा द्वन्द्व र यसको क्रिया:-

परस्पर विपरीत दुई विचार र वस्तुको टक्कर हुँदा द्वन्द्व उत्पन्न हुन्छ। द्वन्द्वबाट निकास वा निष्कर्ष निस्कने हुनाले द्वन्द्वलाई स्रोत र प्रक्रिया मानिन्छ। जीवनजगतभित्र सकारात्मक मात्र नभएर नकारात्मक पक्ष पनि हुन्छन्। उपन्यास जीवन जगतकै चित्रण भएकोले कथानकभित्र द्वन्द्व हुन्छ।

कथानक घटना र कार्यकारण सम्बन्धमा आबद्ध भएको शृङ्खला भएकोले यसमा द्वन्द्व र त्यसबाट उत्पन्न हुने क्रियाको सर्वाधिक महत्व रहन्छ। आन्तरिक र बाह्य द्वन्द्वबाट नै पात्रहरूले अगाडिका क्रियाकलाप प्रदर्शन गर्दछन् र कथानक गतिशील भई शृङ्खलित रूपमा अगाडि बढ्दछ। आन्तरिक द्वन्द्वमा मान्छेको चेतन मनभित्र हुने द्वन्द्व पर्दछ। जसलाई मनोद्वन्द्व पनि भनिन्छ। यस्तो द्वन्द्व चेतन मन र अचेतन मनका बीचमा हुने गर्छ। बाह्य द्वन्द्वमा मानिस



मानिसका बीच, मानिस र समाजका बीच तथा समाज र समाजका बीच तथा मानव र मानवेत्तर वस्तुका बीच भएका द्वन्द्वहरू पर्दछन्। द्वन्द्व र क्रियाले नै कथानकलाई नयाँनयाँ मोड दिन्छन्। जसको अभावमा कथानक रचना सम्भव छैन। (बराल र एटम, २०६६:२७)

कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा आन्तरिक र बाह्य दुवै प्रकृतिका द्वन्द छन।

उपन्यासको प्रमुख पात्र कट्टेल सरको अन्तर्मनमा मच्चिएर आन्तरिक द्वन्द प्रकट भएको छ। जब श्रीमती कट्टेलनीले कट्टेल सरको कमाइले घरमा नपुगेको झोक भन्छिन - ऊ हेर्नुस् त कुमारलाई जति जे भए पनि उसको क्या इज्जत छ, कत्रो रवाफ छ ? पैसा भनेको जसरी कमाए पनि हुन्छ, कमाएपछि जुन पैसाले पनि इज्जत बढाउँछ। कट्टेलनीको यस्तो जवाफले कट्टेल सरको मनमा द्वन्द मच्चिएको छ। उनी सोचन थाल्छन्। कुमारले स्मग्लीङ्ग गर्यो। उसको छोराछोरीलाई सुख पाए। म यस्तो गर्न सक्दिनँ किनकी म सत्यकर्ममा विश्वास राख्ने विचारको छु। कि म गल्ली मै छु ? र अब मेरो गल्ली फलफूल मेरा केटाकेटीले टिप्नु छ, भने म अन्यायी हो कि के ? भने, म पिताको रूपमा एउटा नालायक पिता बनेको छु, पतिको रूपमा एउटा बेसोमति, निकृष्ट भएको पति भएको छु र मान्छेको रूपमा एउटा दोधार तेधार चौधारमा परेको हास्यास्पद साङ्गो भएको छु क्यार। (पृष्ठ १५)

अर्को दिन क्याम्पसमा पिउनले क्याम्पस चिफले तपाईंलाई डाँक्नु भएको छ भन्दा। उनको मनमा सामान्य द्वन्द भएको छ। उनी सोचन थाल्छन्। बोलायो कुन्नी ? एकछिन आश पनि लाग्यो हुनसक्छ कुनै लाभदायक कुरा नै होस्। तर अक्सर गरेर यस्तो हुँदैन। अक्सर गरेर कुनै षडयन्त्र हुन्छ। क्याम्पस चीफ महाको छोटा छ। राम्रो कुरा कहिल्यै मुखबाट झार्दैन। अब के भन्नाला ? (पृष्ठ १९)

छोरी रंजुले एकदिन कुनै साथीले उपहार स्वरूप दिएको अमेरिक न सारी घरमा ल्याएको त कुनै दिन औँठी लगाएर आएकोमा श्रीमती कट्टेलले घरमा उत्पात मच्चाइन्। छोरी बिग्रीएको शंका गरी छोरीलाई गाली गरिन। यस्तो अवस्थामा कट्टेल सरको मनमा विभिन्न कुराले द्वन्द मच्चाउँछ।

रंजुलाई विभिन्न उपहार दिने व्यक्ति एउटै हो कि ..... ? नहुनु के छ आखिर अर्थात् बुझियो होला, म किन यस्तो ..... अर्थात् क्षमा रहोस् म पिता, केही पनि प्रष्ट र निश्चित र असन्दिग्ध नभएकोले अलि आत्तिकै छ सारा आफूलाई दिएका सन्तवना र आशा बाहेक पनि।

यदि एउटै प्रेमिले यतिका मायाका चिनोहरू प्रदान गरेको भए, रंजु भाग्यमानी हो, यो मैले अधिदेखि सोचेको हु, अवश्य।

तर ती चिनोहरू भिन्ना भिन्ने प्रेमीहरूले भिन्न भिन्न समय, ठाउँ र एकान्तमा उपहार दिएका भए?

रंजु के भैसकेकी होली ? (पृष्ठ ११५-११६)

कट्टेल सरको जेठो छोरो जब आठ वर्षको थियो। त्यतिखेर छोरो १ महिनादेखि स्कूल नगएको थाह उनले पाए र साँझपख किताब र व्याग समेत छोरोले हराएर घर आएको देखेपछि उनलाई साह्रै रिस उठ्छ र रिसको झोंकमा छोरोलाई कट्टेल सरले लात-लट्टी र हात जे पाए त्यसैले कुटे। तर पिटेको आधा घण्टा पछि उनलाई ज्यादै पछुतो भयो। त्यो बालकको कलिलोपनले उनलाई सताउन थाले। उनको मनमा आन्तरिक द्वन्द चल्यो।

स्कूल त्यो गएन भने पुर्याइनु पर्थ्यो उसलाई स्कूल पुर्याइदिनु पर्थ्यो स्कूलसम्म उसको आवश्यकता पुर्याइदिनु पर्थ्यो भने .... त्यसले किताब नकिनिदिएकोमा चुटाइ खान चाहेन होला, त्यसले लुगा एकजोर मात्र लाएर गएकोमा हँसाइ खप्न चाहेन होला भने .... कुन्नी के भनुँ के तर यस्तै यस्तै (पृष्ठ १३०-१३१)

कट्टेल सर आफू विरामी भएर बुबा सुत्ने कोठमा सुत्नुपर्ने हुँदा पनि उनको मनमा द्वन्द चल्यो

अब मेरै हैसियत बुबाभन्दा खास बढी किन ? यो मेरो प्रश्नप हो , आफूलाई। अब हामी दुवै एकै तहमा छौं। त्यतिकै नभए पनि प्रायः त्यतिकै उपेक्षित छु कि भन्ने दुविधामा म छु। अब म महशुश गर्दैछु। अब शायद पिता प्रतिको भावुकता र पुराना दिनहरू देख्न थालिदै छैन, दुश्य १, २, ३, गर्दै विभिन्न दृश्यहरू। अब म बदर भएर थाक्न आए जस्तो लाग्दछु एउटा स्वत्व समाप्त भएर उही, आफ्नो पिताकै दर्जामा उक्लेको कि ओर्लेको मान्छे। (पृष्ठ १३०-१३१)

कट्टेल सर बिरामी भएपरि जीवनको अन्तिम समयमा जेठो छोरो घर फर्केर आउने कुरा चल्दा पनि केही द्वन्द उनको मनमा चल्छ।

म एउटा घर भएको मानिस बनेर बाँच्न अझ सटीक हुन्छ, मनै सकिन।

साबु मभन्दा पनि दुखी छे र उसको लागि कहिल्यै केही गर्न सकिएन।

अब यदि मेरो छोरो आउँछ भने त्यसले फेरि यहाँदेखि थाल्नु पर्ने हुन्छ, जहाँबाट मैले थालेको थिएँ। मेरो छोरो जुन पनि जीवन बाँच्ला आफ्नो जीवन भनेर कुन्नी कसको जीवन बाँच्ला ?

(पृष्ठ २०६)

यसरी उपन्यासमा मनोद्वन्दको (आन्तरिक द्वन्द) को प्रयोग विभिन्न ठाउँमा भएको छ। बाह्य द्वन्द पनि फरक-फरक ठाउँमा भएका छन्।

बाह्य द्वन्द श्रीमती कट्टेल्ली र कट्टेल सर बीच आर्थिक अभावको कारण भएको देखिन्छ।

- “ मैले तिमीलाई हजारपल्ट भनेको छु, पहिले भाँडामा चामल हेर अनि अरुथोक किन, तिमीलाई लाग्दै लाग्दैन।” कट्टेल जडिगन्छ, अब जेसुकै गर। त्यो हिजो ब्याग स्याग किन्ने, चुरा लाउने, के मतलब थियो ?”

“हिजोचाहिँ केही भन्न भएन, अब आज चामल सिद्धियो त मैले ब्याग किनेको, चुरा लाएको फजुल खर्च भयो अबदेखि कहिल्यै केही किनेछु भने ..... बाँकी बनाई त सड़कमा कुनै सस्तो पाइएर किन्नु पर्यो भने पनि, घरमा चामलको टिन जाँच्च आउनुपर्ने।” कट्टेल्ली लामो बोलेर रुन थाली।”

- “तिमी जस्ती घमण्डी आइमाई मैले देखिकै छैन। न किने नकिन न त, कल्लाई घुर्की देखाउँछौं, हाँ कोही डराउँदैनन्, त्यस्ता बुर्कीले बुझ्यौ ? कट्टेललाई कट्टेल्लीको आँसुले झन रन्कायो र थप्न थाल्यो “बुढी भएर बुद्धि नभएकी, तिमी जबदेखि किन्दैनौ किन्दैनौ, तर अहिले त तिम्रो किनमेलले नै चामल किन्न पाइएन मूर्ख, बेकुप।” (पृष्ठ ३/४)

त्यस्तै कुमारको घरमा निम्तो पाएर कट्टेल कट्टेल्ली आफ्नो छोरोलाई लिएर उपस्थित भएका हुन्छन्। कुमारकी स्वास्नीलाई भान्सा श्रीमती कट्टेल्लीले सघाउन थाल्दा आफ्नो छोरोलाई उनीहरूको

ओछ्यानमा सुताएकी हुन्छिन् र छोरोले सुतेको अवस्थामा ओछ्यानमै दिसा गरिदिन्छ। अनि कुमारकी स्वास्नी रिसाउँदै कट्टेलीसँग बाइन पुग्छिन्। यहाँ सामान्य बाह्यद्वन्द भएको देखिन्छ।

यस्तो केटाकेटी नलिएर हिँडेको भए पनि हुन्थ्यो नि पार्टी सार्तीमा। हामीले त कहिल्यै लगेनौ कतै। आमा बुबाको बेइज्जतै गरिदिन्छन्, लगेर के गर्नु ? हुन त मेरा केटाकेटीले तपाईंको बच्चा जस्तो असभ्यता कहिल्यै गरेनन्।

यस्तो कुरा सुने कट्टेल त्यो डेढ वर्षको बालकलाई पिट्न थाल्छ। अनि कट्टेली सहन सकिदैन।

यो कस्तो तरिका हो ? त्यो बच्चालाई के को ज्ञान हुन्छ ? चाँहिदैन सभ्यता मेरो छोरो बेसोमती भए पनि होस्। जानेर होइन क्यार। यति मैले गरिदिएकी छु, कुन्नि तन्नै साटिदिनु पर्ने हो कि। भन्दै रिसाइन् कट्टेली

कट्टेल सरको बुबाको बिरामी बढ्दा उनी आफ्नो सुद्धि हराउँछन् र अनौठो कुराहरू गर्न थाल्छन्। यस्तै बिरामी बढेको अवस्थामा उनका बुबाले घरपट्टिको झ्यालको सिसा फुटाइ, घरपट्टिको बुहारी सुत्नेकोठामा पसी बुहारीको छेऊमा गएर सुत्ने गल्ती गर्दा घरपट्टी र श्रीमती सावित्री कट्टेल बीच चर्को बाह्य द्वन्द हुन्छ।

यस्तो छ भने छाडिदिनु घर क्या ? तपाईंहरूलाई पो डेरा भनको अर्काको घर, कुनै माया ममता हुँदैन, हाम्रो त हाड घोटी घोटी कमाएको पैसाले उठाएको घर हो जे गरे पनि सहन त सकिन्न, बुझ्नु भो ? भनेर घरपट्टीकी स्वास्नी कराउँदै थिइन्।

अब सावित्री भन्दै छिन - तपाईंहरूले त्यही एउटा धम्की दिन त जान्नुभएको छ नि। यही घरमा मर्न भनेर त बसेको पनि हैन हामी। डेरा नपाएर पो त। त्यसपछि तपाईंहरूले फिक्री नै लिनु पर्दैन। यस्तो घरमा बसेर छिटो आर्यघाटमा पुग्नु भन्दा त बरु रुखमुनि वा फुटपाथमै गुजारा गर्नु राम्रो।

“हो त्यसै गर्नुस् त्यसै, रुखमुनि बस्दा एक पैसा पनि पर्दैन बहाल बाँकी पनि लाग्दैन, आनन्द।” घरपट्टी अब आफै बोल्न थाल्यो। (पृष्ठ - ९३-९४)

यस्तो झगडा चर्किनु अघि घरपट्टिहरूले कट्टेलका बुबालाई समाते फुटेर डोरीले बाँधेर राखेको देखिन्छ र पछि घरपट्टिको छोरो बाहिरवाट घर फर्केपछि यस घटनाको बारेमा थाह पाएपछि कट्टेल सरका घरको सारा सामान बाहिर फालेर ठूलो द्वन्द मच्चाएको देखिन्छ। कट्टेल सरकी जेठी छोरी रंजुले R.S. कुदिएको औँठी हातमा लगाएकी देख्दा श्रीमति कट्टेल ज्यादै रिसाउँछिन् र छोरीलाई भुल्याई पनि दिन्छिन्। यहाँ पनि सामान्य बाह्य द्वन्द भएको देखिन्छ।

इज्जतै माटोमा मिलाइदिने भएपछि यस्ता राँडाराँडी छोराछोरीहरू जन्मनु नै किन, जन्मेर बाँच्नु नै किन ? कट्टेलनी बोल्दै थिइन्।

कट्टेल सरले “सोधे के भो ?”

“सोध्नु आफ्नी जेठी छोरीसित।” सावित्रीले भनी

- तँ भन, तँलाई पनि त इतिश्री था छ, घुसघुसे सधैंको यो त झन।” यसो भन्दा सावित्री मंजुतिर फर्केकी छे। (पृष्ठ - १०५-१०६)

त्यस्तै यस उपन्यासमा सबभन्दा ठूलो अचम्मको बाह्य द्वन्द कट्टेल सर र कुमार बीच भएको देखिन्छ। यस्तो कार्यमा कुमारलाई एकनाथले पनि सहयोग गरेको छ। कुमार, कट्टेल र एकनाथ टिल्ल भएर एउटा सुनसान सड़कमा हिँडिरहेका छन्। अचानक कुमारले कट्टेल सरको कठालो समायो र भन्न थाल्यो - “तैले मेरी स्वास्नी माथि आँखा गाड्ने ? कट्टेल सर छक्क परेर -‘हेर म प्रतिरक्षामा उभिएको हुँ - “यस्ता घृणित र असभ्य कुराहरू गरेर मसित बदला लिने कोशिश नगर।” भन्छन्।

“बदला अझ मै लिन्छु ?” कुमार निकै आवेशमा भरिएर बोल्यो।

कट्टेल सरले भने - के बदला, आफैलाई सोध न। तँ मसित डराउँछस् किनभने म बिकिसकेको छैन र एकदम सका छु। तिमीहरू जस्तो होइन।” (पृष्ठ - १६८-१६९)

अब त रन्थनिएर कुमारले गोजीवाट चक्कु पो झिक्नो जुन प्रशस्त नयाँ र चम्किलो थियो बिचरा कट्टेल सर जसोतसो कठालो छुट्ट्याएर भाग्न थाले।

यसरी यस उपन्यासमा आन्तरिक द्वन्द र बाह्य द्वन्द दुवै समान रूपमा देखाइएको छ। तर कता-कता मनाद्वन्दको बढी प्रयोग भएको देखिन्छ। र द्वन्द सामान्य विषयमा भएको छ। जे भएपनि द्वन्दको प्रयोग उपन्यासमा पाइने हुनाले द्वन्दको आधारमा उपन्यास त्यति कमजोर छैन।

### ५.४.२ कथानकमा कौतुहलता

कथानकमा कौतुहलताले अब के हुन्द भन्ने जिज्ञासा पाठकको मनमा उब्जाइदिन्छ। यदि बीचैमा कथानकका सारा रहस्य खोलिदिने हो भने कथानको प्रभाव मन्द हुन्छ, बाँकी पढ्ने कुनै अर्थ रहँदैन। (न्यौपाने, २०५०:४६) उपन्यासमा रहस्य उत्पन्न गराउन कौतुहलता कथानकमा नभई नहुने तत्व हो। पाश्चात्य साहित्यका चिन्तक अरस्तुले दुःखान्तको कथामा कौतुहलतालाई अनिवार्य गुणतत्व मानेका छन्। कौतुहलताबिनाका कथाले पाठक दर्शकको ध्यानलाई केन्द्रीकरण गर्न सक्दैन। परिणामतः पाठक दर्शकमा त्रास र करुणा उत्पन्न हुँदैन। (त्रिपाठी, २०५०:५०-५३)

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यास शृङ्खला बद्ध रूपमा लेखिएको छ। यस उपन्यासभित्र कतै कतै भएको घटना वा प्रसंगले अवश्य नै कौतुहला सृजना गरेको छ। कृतिपय छोरा प्रसङ्गको कौतुहला तुरून्त मेटिन्छ भने कतिपयको कौतुहलता मेटिँदैन। सबभन्दा त उपन्यासको अन्तिम परिच्छेदका केही संवादात्मक वाक्यहरूले कौतुहलताको सृजना गरेको छ।

- “तपाईं छोरोको खबर छ रे।”
- कुन छोरा ?
- त्यो त तपाईंलाई थाह होला।”
- मेरो हराएको छोरो सायद।”
- खै त्यो मलाई थाह छैन ?”
- छोरोको खबर भनेको छोराले पठाएको खबर कि छोरोबारे, छोरोबारेको समाचार ?”
- खै त्यो पनि म भन्न सकिदैनँ

माथिका कुराकानी कट्टेल सर र कुनै अपरिचित दानबहादुर भन्ने व्यक्तिबीच भएको हो। छोरोको खबर छ रे। भन्ने कुराले ठूलो कोतुहलता मच्चाउँछ। कट्टेल सरलाई र हामी पाठकलाई पनि किनकी उपन्यास समाप्त हुँदासम्म पनि उनका छोरोको कुनै खबर भएको उल्लेख गरिएको छैन। उपन्यासको समाप्ति नै कौतुहलपूर्ण छ। उपन्यासमा अरू लामा वा छोरा कौतुहलपूर्ण प्रसंगहरू पनि छन्। ती मध्ये केही यस प्रकार छन्:-

- ☞ कट्टेल सर जस्तो सोझो इमान्दार मान्छेले के वास्तवमा क्लासमा नपढाइकन राजनीतिको कुरा गरेका थिए ?
- ☞ कट्टेल सरको बुवालाई कुन रोग लागेको थियो ?
- ☞ कुनै बेला हिंसात्मक देखिने वा अर्काको कोठा, आछ्याउनमा गएर सुत्ने र आफै निको हुने खालको पनि कुनै रोग हुन्छ र ?
- ☞ कट्टेल सर, प्रधान सर, शर्मा र सत्याल सरलाई गोपाल जस्तो बदमास विद्यार्थीले रक्सी र केटी भएको भट्टीमा देखेपछि भोलिपल्ट क्याम्पसमा निकै ठूलो दुर्गति होला भन्ने कट्टेल सर र उनका साथीहरूले सोचेका छन् तर यसको के कस्तो प्रतिक्रिया भयो कि भएन भन्ने कुरा उपन्यासमा वर्णन गरिएको छैन।
- ☞ कट्टेल सरकी छोरीले विभिन्न किसिमका उपहारहरू कहाँबाट के वापत ल्याएकी होली ?
- ☞ रंजुको प्रेमी वा उसले उपहारहरू पाउने श्रोतलाई किन कतै खुलस्त पारिएको छैन ?
- ☞ कट्टेल सरको जेठो छोरो एक महिनाभरि कुनै दिन पनि स्कुल नगएर कहाँ जान्थ्यो होला ? र स्कुल किन गएन ?
- ☞ कट्टेल सरको जेठो छोरोले घर किन छोडेको होला ? के साँच्चै पाँच-छौ वर्ष अघि बुबाले कुटेको बदला लिनलाई नै हो र ?

- ☞ कट्टेल सरले एकदिन एउटा पत्र पाउँछन्। जसमा, तिम्रो .... स्वर्ग हुनु भयो। एक दिनभए पनि वार्नुपर्छ।” भन्ने लेखिएको हुन्छ। आखिर स्वर्ग हुने व्यक्तिको थिए ? त्यस व्यक्ति वा नातेदारको नाम किन उपन्यासकारले उल्लेख गरेका छैनन् ?
- ☞ कट्टेल सरलाई जागिरबाट किन निकालिएको होला ?
- ☞ के साँच्चै नै शर्माले नै कट्टेल सरको जागिर खोस्न लगाएको हो ?
- ☞ शर्मा जस्तो सज्जन मानिस के वास्तवमा भित्री कुनै अर्को काम पनि गर्थ्यो ? गर्थ्यो भने के काम गर्थ्यो ?
- ☞ कुमार जो कि कट्टेलसरको मित्र थियो, उसले अचानक कट्टेल सरमाथि चक्कु प्रहार किन गरेको होला ?
- ☞ कट्टेल सरकहाँ विहानै देखि ख्याल ठट्टा गरेर बसेका रोशन र उनकी श्रीमती खाना खाइओरी अचानक किन उदास भए ?
- ☞ उपन्यासको अन्त्यमा पनि कट्टेल सरको छोराको खबरलाई किन स्पष्ट गरिएको छैन ?

### ५.४.३ कथानकका आधारमा ‘कट्टेल सरको चोटपटक’

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासको मूल कथा कट्टेल सरसँग सम्बन्धित छ। सहायक पात्रका रूपमा पात्रकी पत्नी सावित्री कट्टेल, छोरी रंजु सहकर्मी सत्याल शर्मा र साथी कुमार मुख्य छन्। छोटो समयका लागि विश्वनाथ बाजे आए पनि उसको भूमिका उल्लेख छैन। कट्टेल सरलाई सहयोग गर्ने र अलि हेलमेल भएक साथीहरू सत्याल र कुमार हुन्। अर्को तर्फ शर्मा मिल्ने साथी भए पनि उसैको कारण कट्टेल सरको जागिर गएको आशंका गरिएको छ।

कट्टेल सरको आधी जीवनदेखि अर्थात् कट्टेल सर चार-पाँच छोराछोरीका पिता भएको वर्तमान देखि शुरू भएको कथानक बीच-बीचमा अतीतका केही वर्णन गर्दै पुनः वर्तमानमा पुगेको छ र कुनै कुनै प्रसंगले भविष्य पनि चिहान पुगेको छ। कथानकको पहिलो मोड कट्टेल सरको वर्तमानबाट भएको छ। दोश्रो अर्थात् शुरूआत मोड शिक्षक भईकन पनि आर्थिक विपन्नता



भोग्नुपर्ने दुर्गतिपूर्ण सामाजिक अवस्थाको चित्रणबाट भएको छ। शिक्षकको जागिरले कट्टेल सरले आफ्नो परिवारको मूलभूत आवययकता पनि पूरा गर्न सकेको छैनन्। बुबाको उपचार गर्न सकेका छैनन्। भने छोरोको किताब र लुगा पनि चाहिने जति पनि किन्न सकेका छैनन्। पैसाको अभावमा कट्टेल सर उनकी श्रीमतीबीच पनि अलि भनसुन भइरहन्छ। छोरीहरू राम्ररी पढ्न सक्दैनन्। यहाँसम्म की जेठो छोरोले घर छाडेर हिंडिदिन्छ।

कथानकमा तेश्रो मोडमा कट्टेल सर व्यवहारिक र विशेष प्रयत्न गर्न नसक्ने प्राध्यापक हुनाले र त्यस्तै कसैको सेवा खुसामद र भनसुन पदि नलाग्ने आत्माभिमानी पनि हुनाले उसले उन्नति गर्नु त कहाँ आफ्नो जागिर जोगाउन नसकेको अवस्थाको वर्णन गरिएको छ। हाम्रो देश नेपालमा जस्तोसुकै पढेलेखेका मानिस भएपनि यदि उन्नति गर्नु छ भने ठूला-बडाको चाकरी गर्नु आवश्यक छ न यहाँ इमान्दारीले काम चल्छ न परिश्रमले त्यसमा पनि कट्टेल सर पोलिटिकल साइन्सका शिक्षक र व्यक्तित्व पनि ठिकै यस्तो मानिसले उन्नति गर्न चाकरी नगरी त सम्भवै छैन। जागिर छुटेपछि उनले ज्यादै दुःख पाएका छन्। विरामी श्रीमती र सिकिस्त बरामी छोरोको उपचार गर्न सकेका छैनन्। यति हुँदा हुँदै पनि उनले हार मानेका छैनन। माइली छोरी मंजुका लागि वा आफ्नो जागिर खोज्ने प्रयत्न गरिरहेका छन् कट्टेल सर। तर, सबैतिरबाट निराशा प्राप्त भएको छ।

घर खर्च अब जेठी छोरी रंजुको कमाइबाट चलेको छ। उसको आचरणबाट पनि कसैलाई कुनै आपत्ति छैन किनकी घरमा आर्थिक अभावले व्यापकता ग्रहण गरेको थियो। यस्तो अवस्थामा श्रीमती सावित्री र कट्टेल सर पनि निमुखा भएका थिए।

कट्टेल सरले आफ्नो वा छोरी मंजुका लागि पनि जागिर खोज्न सकेनन्। अन्ततः एक दिन छोरो सिकिस्त विरामी भएर बित्यो। यस घटनाले कट्टेल सरलाई निकै चोट पुर्याएको छैन। बुबा भएर पुत्रको ज्यान बचाउन नसक्दा पितालाई हुने पीडो र शक्तिहिनतालाई उनले अनुभव गरेका छन्।

कथानकको चौथो तथा अन्तिम मोड भनेको कट्टेल सरले जीवनभरि पाएका चोटपटकको परिणाम पाउने अवस्था हो। कट्टेल सरले आर्थिक अभावका कारण विभिन्न चोट पाएका छन

जीवनमा । जेठो छारोल घर छोडन । श्रीमतीको चाहना पूरा गर्न नसक्न, बिरामी बुबाको उपचार गराउन नसक्नु, छोरीहरूको शिक्षा पूरा गराउन नसक्नु र अरूजस्तो भइदिन नसके पनि अरूले चाहेजस्तो होइदिन नसकेकोले जागिर गुमाउन र सबभन्दा ठूलो चोट सानो छोराको उपचार गराउन नसकेकोले त्यसको मृत्युलाई सहन गर्नु उनको लागि असहनिय भएको छ । यस्ता चोट-पटक खाँदाखाँदै उनलाई एकदिन हृदयरोगले समात्यो र उनी बिरामी भएर घरमा थला परेर बसे ।

दुल्लेलाई सिन्कोको सहारा भने झैं पक्षघात र हृदय रोगले पिडित भएका कट्टेल सरलाई एक जना व्यक्तिले तपाईंको छोराको खबर कर साहबसँग छ भनेर उज्यालो दिएको छ । तर उपन्यास कट्टेल सरले छोराको केही खबर पाए की पाएनन् ? भन्ने कौतुहलता छोडेर अन्त्य गरिएको छ ।

यस उपन्यासमा व्यङ्ग्यको पनि कतै-कतै प्रयोग भएको पाइन्छ । सामान्य खालको अभिव्यक्ति दिँदा पनि चोटिलो व्यङ्ग्य प्रहार गर्न उपन्यास सफल भएको छ यस्ता कही व्यङ्ग्यहरू हुन:-

‘स्मगलर हो कि होइन, कसलाई थाह हुन्छ ? कमाइसकेपछि जुन पैसाले पनि इज्जतै बढाउँछ ।

(पृष्ठ-१४)

अचेलका टिचर त झन सबभन्दा खतम छन् । तिनीहरू जति पतित र स्वाधी त ..... ।”

(पृष्ठ-४७)

यस्तो चलिरहन्छ यो दुनियाँमा । जल्ले पाउँछ, त्यसले अर्कालाई कचकच पारिदिन्छ । यसमा कुनै उठेक पनि छैन । मौका नपाउँजेल हामी सबै एक-अर्काप्रति प्रशस्त सहदयी र सहयोग बनिरहन्थ्यौँ मौका पाउनेहरूको धेरैजसो असल छुराबाजीको सिप नजानिदो गरी देखाउन पाइयोस् । (पृष्ठ-८५)

“घरपट्टीहरू प्रायः यस्तै हुन्छन् - अथवा खुब महान किसिमका भए भने छ महिनासम्म चाहिँ तेरै दिन बासूँला जस्तै आफन्त देखिन्छन् । त्यहाँपछि पाप्रा उपकाउँदै आफ्नो देखाउन थालिहाल्छन् । धाराबाट झगडा थाल्लान तर थाल्छन् ‘पक्कै ..... । (पृष्ठ-१००)

अनौटोसित उम्लेकी केटी छे। टुप्पोबाट पलाएकी तापनि मान्छेले त्यति टुप्पिनु त हुँदैन नि ?

(पृष्ठ-११०)

- 'डुबेर मोर मनुँ भने पनि टोलमै पानी छैन। (पृष्ठ-११९)

चाकडी गर्नेको मात्र फलिफाप हुने र परिश्रमी र इमान्दारले आपको महँगो शहरी जीवनयापन गर्न नसक्ने कुरा र निम्न मध्यम वर्गीय नेपाली समाजको सरल सहज भाषामा वर्णन गरिएको छ। मध्यम आकारको यो उपन्यास कथानकका दृष्टिकोणबाट सफल उपन्यास ठहरिन्छ।

## ५.५ चरित्रचित्रण

लेखकको कल्पना गरेको घटनालाई अगाडि बढाउँदै फलागसम्म पुर्याउने, घटनाको परिणाम भोग्ने, मानवीय/अमानवीय पात्र चरित्र हुन्। (बराल र एटम, २०६६:३०) उपन्यासभित्रको हर्ष/विषाद, जय/पराजयसँग सम्बन्धित विभिन्न घटनाहरूका कर्ता, भोक्ता वा द्रष्टालाई पात्र वा चरित्र भनिन्छ। उपन्यासकारले जुटाएका कच्चा सामग्री (घटना) हरू तिनै पात्रपात्रालाई सुम्पनुपर्छ जो सक्षम र स्वाभाविक छन्। उनीहरूको सामाजिक परिवेश, रहनसहन, स्तरअनुसार दिएको काम राम्ररी सम्पादित हुन्छ र स्वभाविक पनि लाग्छ। (न्यौपाने, २०५०:२०७) उपन्यासमा सामान्यतः मानवीय पात्रको प्रयोग गरिए पनि कहिलेकाहीँ मानवेतर पात्रको पनि प्रयोग हुन्छ। उपन्यासमा प्रयुक्त चरित्रका आ-आफ्नै विशेषता हुन्छन्। तिनै विशेषताको आधारमा चरित्रचित्रण गरिन्छ। आधुनिक उपन्यासमा चरित्रचित्रणको स्थान महत्वपूर्ण छ।

### ५.५.१ चरित्रहरूको वर्गीकरण

'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा धेरै चरित्र उपस्थित भएका छन्। ती मध्ये कतिपय चरित्रको नाम उल्लेख छ तर उनीहरू सहभागी भएको पाइँदैन। उपन्यासमा विभिन्न प्रवृत्तिका चरित्रको उपस्थिति छ। यस उपन्यासभित्र आएका चरित्रहरू हुन्, वासुदेव कट्टेल सावित्री कट्टेल बुबा, रंजु मंजु, सानो छोरो, कान्छी छोरी सत्याल शर्मा, प्रधान, रोशन, रोशनकी श्रीमती, घरपट्टी, घरपट्टीकी स्वास्नी, उनका छोरा र बुहारी, कुमार, कुमारकी स्वास्नी, क्याम्पस चीफ, पिउन, डीन, विद्यार्थीहरू, दुधवाला, कण्डक्टर, शर्माकी स्वास्नी, ठिटो, जुनियर शिक्षक,

काउली बेच्ने टिटो पाठक सर विश्वनाथ बाजे, करसाहब, दान बहादुर, डाक्टर एकनाथ, विश्वनाथ सर र उर्मिला देवी गोपाल, खसी दिन केटी, अड्डा धनी बढी, सुनीति, इनारहुने घरको बुढो, साबुन दलेर आएको छिमेकी, पानी लिन जाने आइमाइहरू, खली र पिना सुकाउने बुढी चिठी दिने टिटो, केशव सहायक क्याम्पस चीफ, भूतपूर्व विद्यार्थी मन्त्रीको नातेदार, श्यामनि उमाप्रसाद, रोशनको छोरा, ईश्वरी, कुमारको गेटमा उम्ने टिटो, एकजना वृद्ध, माग्ने केटो आदि। वाम टेकी आमा, ३० वर्ष नाघेकी आइमाई विन्दु, साहुजी।

#### ५.५.१.१ लिङ्गका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण:-

चरित्रहरूको प्राकृतिक जात छुट्टयाउने आधार लिङ्ग हो। बराल र एटम २०६६:३२) यस आधारमा चरित्रलाई पुरुष र स्त्री गरी दुई वर्गमा विभाजन गर्न सकिन्छ। 'कट्टेल सरको चोटपटक उपन्यासमा ३७ जना पुरुष १८ जना महिला तथा ३ जना लिंग पहचान हुन नसकेको चरित्र छन्। जसमध्ये कट्टेल सर, विश्वनाथ बाजे, कर साहब, सत्याल सर, प्रधानसर, शर्मा सर, पाठक सर, कट्टेल सरको बुबा, सानो छोरा प्रेम, रोशन, घरपट्टीको छोरा, क्याम्पस चीफ, सहायक क्याम्पस चिफ, पिउन डिन, दुधवाला, कण्डक्टर, काउली बेच्ने केटो, दानबहादुर, डाक्टर एकनाथ, श्यामनिधि, विश्वनाथ सर, गोपाल बुढो, साबुन दलेर आएका छिमेकी, केशव, भूतपूर्व विद्यार्थी, उमाप्रसाद, रोशनको छोरा, ईश्वर, माग्ने केटो पुरुष चरित्र हुन्।

त्यसैगरी स्त्रीलिंग चरित्रमा साबित्री कट्टेल, रंजु, मन्जु, कान्छी छोरी, रोशनकी श्रीमती, विन्दु, घरपट्टी स्वास्नी, घरपट्टीकी बुहारी, कुमारकी स्वास्नी, शर्माकी स्वास्नी, उर्मिला देवी रक्सी पस्कने केटी, अड्डा धनी बढी, सुनीति, पानी लिन जाने आइमाइहरू, मिट्टेकी आमा, ३० वर्ष नाघेकी आइमाई, विन्दु आइमाई चरित्र हुन्।

#### ५.५.१.२ कार्यका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण:-

उपन्यासको सबै पात्रको एउटै भूमिका हुँदैन। लामो, छोटो, मध्यम, महत्वपूर्ण, सामान्य आदि भूमिका निर्वाह गरेर उनीहरू रहेका हुन्छन्। यस आधारमा मुख्य, सहायक र गौण गरी तीन वर्गमा चरित्रलाई विभाजन गर्न सकिन्छ। प्रमुख पात्रको कार्यव्यापार उपन्यासमा धेरै हुन्छ। उसकै

केन्द्रीयतामा उपन्यासले गति लिन्छ। मूल कथावस्तुलाई अगाडि बढाउन सहायक भूमिका लिएर सहायक चरित्र आउँछन् भने कुनै प्रसंग वा छोटो समयको लागि मात्र देखा परेका चरित्रहरू सहायक चरित्र हुन्।

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासको प्रमुख पात्र वासुदेव कट्टेल सर हो। उनकै केन्द्रियतामा कथानक फिँजिएको छ। त्यस्तै सावित्री कट्टेल, रंजु, शर्मा, सत्याल र कुमार सहायक पात्र हुन्। अन्य चरित्र भने गौण रूपमा प्रस्तुत भएका छन्।

#### ५.५.१.३ प्रकृतिका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण:-

प्रकृतिका आधारमा अनुकूल र प्रतिकूल गरी पात्रहरूलाई दुई वर्गमा विभाजन गर्न सकिन्छ। सत् पात्रलाई अनुकूल पात्र भनिन्छ जसमा खल तत्व हुँदैन। प्रतिकूल पात्रमा खल तत्व हुन्छ। जसलाई सत् पात्रले, सकारात्मक र प्रतिकूल पात्रले नकारात्मक कार्य गर्दछन्। ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासमा धेरै पात्रहरू अनुकूल छन् र केही पात्रहरू प्रतिकूल छन्। कट्टेल सरसँग बढी हेलमेल भएको शर्मा अन्त्यमा गएर प्रतिकूल प्रवृत्तिको देखिन्छ भने केही म हिमचिम भएको सत्याल अनुकूल रूपमा उपस्थित भएका छन्। त्यस्तै कुमार जो कि कट्टेल सरको साथी नै थिए तर सानो कुरोमा कट्टेल सरमाथि चक्कु चलाउने बेइज्जत गर्ने कार्य गरेर, प्रेमले घर छाडेर प्रतिकूल पात्रको स्थान लिएका छन्। त्यस्तै क्याम्पस चीफ, विश्वनाथ बाजे, घरपट्टी र घरपट्टीका छोरा प्रतिकूल चरित्रका छन्। यी बाहेक अन्य चरित्र अनुकूल प्रवृत्तिका छन्।

#### ५.५.१.४ स्वभावका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण:-

गतिशील र गतिहीन गरी स्वभावका आधारमा दुई किसिमका पात्र हुन्छन्। प्रारम्भदेखि अन्त्यसम्म उस्तै रहने पात्र गतिहीन र स्थितिअनुसार बदलिने पात्र गतिशील हुन्। आदर्शवान् पात्र गतिहीन हुन्छन्। गतिशील पात्र भने समयानुसार चल्नाले उन्नति गर्दै जान्छन् भने गतिहीन चरित्रले सफलता हासिल गर्न कठिन हुन्छ। प्रकृतिको नियम पनि त्यस्तै छ समय अनुसार आफूलाई नबदल्ने प्राणी लोप भएर जान्छन्।

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासको प्रमुख पात्र कट्टेल सर गतिहीन चरित्र हो। आफूलाई बदल्न नपसकेकै कारण ऊ जीवनमा सफल हुन कठिन भएको त देखिन्छ नै साथै गहिरो भङ्खालोमा पर्न विवश हुन्छ। उसको जीवन अगावै अभावमा वितेको छ।

#### ५.५.१.५ आबद्धताका आधारमा चरित्रहरूको वर्गीकरण

विषय वा घटनासँग चरित्रको सम्बन्धको निकटताका आधारमा पनि चरित्रको वर्गीकरण गर्न सकिन्छ। आबद्धता भनेको बाँधिनु हो। कृतिको कथानको आधारमा बाँधिने पात्रलाई बद्ध पात्र र स्वतन्त्र हुने पात्रलाई मूक्त पात्र भनिन्छ। ‘कट्टेल सरको’ चोटपटक’ उपन्यासको प्रमुख पात्र कट्टेल सर, सहायक पात्रहरू सावित्री कट्टेल, शर्मा सर, सत्याल सर, रंजु, बुबा कुमार आदि बद्ध पात्र हुन भने अन्य पात्र मुक्त हुन्।

#### ५.५.२ प्रमुख चरित्रहरूको चित्रण

उपन्यासभित्र विभिन्न भूमिकामा साथ उपस्थित भएका चरित्रहरूको कार्यव्यापारका आधारमा केही प्रमुख चरित्रहरूको चित्रण यस प्रकार गरिन्छ।

#### ५.५.२.१ वासुदेव कट्टेल (कट्टेल सर)

कट्टेल सर उपन्यासको प्रमुख चरित्र हो। ऊ मध्यमवर्गीय शिक्षित र गतिहीन पुरुष हो। उपन्यासको कथानक कट्टेल सरको सेरोफेरोमा घुमेको छ। काठमाण्डौं बाहिर घर भएको ऊ काठमाडौंमा क्याम्पसका प्राध्यापक भएर जीवन यापन गर्दै छ। काठमाडौं ऊ आफ्नी श्रीमति ३ छोरी, एक छोरा र वृद्ध पिताका साथ डेरा भाडा लिएर बसिरहेको थियो। काठमाडौं जस्तो महँगो शहर र एकजनाको मात्र कमाई त्यसमाथि विरामी बुबा र छोरालाई खेप्न उसलाई ज्यादै हम्मे परेको छ। सधैं बिहान खाना खाएर क्याम्पस जानु र घर फर्कनु त्यसपछि घरका विभिन्न समस्यालाई सुन्नु लाई आफ्नो दिनचर्या बनाएको छ। ऊ अगावै अभावमा भएपनि ईमान्दार र आत्मस्वाभिमानी पात्रको रूपमा देखापरेको छ। ऊ कसैलाई धोका दिन चाँहँदैन वा कसैलाई भूलले पनि ठग्न चाँहँदैन र ठगिएको पनि हेर्न चाँहँदैन। त्यस्तोलाई पनि सस्तो भन्ने ? सस्तो महँगो भनेको त दुइ-चार पैसा तलमाथि पर्नलाई पो भन्छन्, यहाँ त त्यसले भाउ थाह नपाएको फाइदा

लिँदैछन्, त्यसले राखेको मोल भनेर हुन्छ ? यो त भएन - त्यसलाई भनिदेउँ ?

(पृष्ठ-५६)

कट्टेल सर कतै कतै काँतर स्वभावको पनि देखिएको छन्। उनी आफ्नो आर्थिक अभाव आउने समस्याबाट डराउँछन् र छोरीको विहे गर्न नसक्ने अवस्थामा छोरी आफैले कोर्ट म्यारेज गरोस् भन्ने उनको चाहनाले उनी उत्तरदायित्व वहन गर्न नचाहने पात्रको रूपमा देखा परेका छन्।

उही आश गर्न थालेको छु, मनाउन र करीब भाकल जस्तो गर्न थालेको छु - त्यो केटो जे पनि नाउँ र जातै पनि होस् त्यसले चुपचाप रंजुलाई भगाएर लगोस्, त्यसले, म अलिकति दारासारा किँटु एकाध छक भात नरूचाउँ र शक्ति र ग्लानियुक्त देखाउँ। अनि पछि खबर थाहा पाउँ कि तिनहीहरूले कोर्टमा विहे गरे। (पृष्ठ-११५)

तर जे जस्तो भए पनि उनी आफ्नो अभावै अभावको जीवनमा कहिल्यै थाकेनन्। छोराको दवाइ ल्याउने पैसा नहुँदासम्म स्वाभाभिमानको रक्षा गर्दै संघर्ष गरिरहे। समग्रमा उनी आर्थिक कारणबाट विपन्न हुनुका साथै व्यवहारिक र विशेष प्रयत्न गर्न नसक्ने प्राध्यापक हुनाले र त्यस्तै कसैको सेवा, खुसामद र भनसुनपछि नलाग्ने आत्माभिमानी पनि हुनाले उसले उन्नति गर्नु त कहाँ आफ्नो जागिर पनि जोगाउन नसकेका पात्रका रूपमा प्रस्तुत भएका छन्। तर उनी परिवारलाई आफूले सकेजतिको समय र सुविधा दिएर खुशी पार्न चाहन्छन्। प्रमुख पात्र भएको हुनाले ऊ बद्ध तथा मञ्चीय पात्र हो।

#### ५.५.२.२ सावित्री कट्टेल (श्रीमती कट्टेल्ली)

वासुदेव कट्टेलकी श्रीमती सावित्री कट्टेल थिइन। उनी यताकदा कारणवश रिसाउने भएपनि शुशिल र शान्त स्वभावकी थिइन। उनी पतिव्रता नारी थिइन। आर्थिक अभावको चरमसिमामा पुग्दा पनि उनले आफ्नो नारीत्व गुमाईनन् र पतिको आदर गरिरहिन, घरप्रतिको हरेक जीम्मेवारीलाई उनले निभाएको देखिन्छ। उनी घरखर्च पनि किफायत रूपमा चलाउने तरखरमा रहन्छिन। छोरी बिग्रीन थालेको देख्दा उनी ज्यादै चिन्तित भएको देखिएको छ। एउटा सजग आमै झैं छोरीलाई उनले शंकास्पद अवस्थामा केरकार गरेको देखिन्छ। जस्तै अभाव भएपनि समयसँग सम्झौता गरी

उनी जीवनमा अगाडि बढने र आशावादी व्यक्तिको रूपमा देखिन्छन्। किनकी श्रीमानले जस्तो डेरामा राखेपनि ऊ बस्न तयार र जस्तो खोनकुरा वा लगाउने साडी भएपनि ऊ सम्झौता गर्न तयार भएको देखिन्छ। यहाँसम्म की घरमा चामल थोरै भएको र दुधवालालाई पैसा दिन नपुग्दा कट्टेलनीले आफूले आफ्नो लागि किनेर ल्याएको ब्याग समेत फर्काएर दुधवालालाई पैसा तिरेको देखिन्छ। उनी यस उपन्यासमा सहायक चरित्र भएको हुनाले मञ्चीय तथा बद्ध चरित्रको रूपमा उपस्थित भएको छिन्।

#### ५.५.२.३ सत्याल

सत्याल सर कट्टेल सरको साथी हो। कट्टेल सरले पढाउने क्याम्पसमा सत्याल सर पनि प्राध्यापकको रूपमा कार्यरत छन्। कट्टेल सरको मिल्ने साथीका रूपमा पहिले शर्मा सर देखिन्छ भने दोस्रो स्थानमा सत्याल सर देखिन्छन्। सत्याल जहाँ पनि फिट हुने खालको मान्छे हो। सत्याल चाकडी चापलुसी गर्नलाई पनि आफ्नो ड्यूटी नै ठान्छ र कसैले सत्यालको छि छि गरेर घृणा गरे पनि ऊ आतिर्देन। आफ्नो वाञ्छनीय योग्यता भिरेर हरेक काम फन्ते गर्छ। सत्यालले दौडधुप गर्नका लागि मोटरबाइक किनेको हुन्छ। विभिन्न ठूलाबडा हाकिम कहाँ गएर आफ्नो आम्दानी हुने, ग्रेड बढाउने ट्रिक् लगाएर आउँछ। यसरी सत्याल कट्टेल सरभन्दा बढी कमाउन सफल भएको छ। सत्यालले सानादेखि ठूलासम्म समान रूपमा मान्छे राखेको छ। ऊदेखि सबै हाकिमहरू पनि डराउन गर्छन। आफ्नो पहुँचकै कारण सत्याल शर्मा सँगै अमेरिका भिजिटिङ्गमा जान सफल भएको छ। सत्याल सरले उपन्यासमा कट्टेल सरलाई सकेजतिको सहयोग शुरूदेखि अन्तयसम्म गरेका देखिन्छ। अन्त्यमा कट्टेल सरलाई छोरो मरेको अवस्थामा सान्त्वना दिने एकजना साथी मात्र सत्याल देखिएका छन्। उपन्यासमा यिनी वद्ध, मञ्चीय र अनुकूल चरित्रका रूपमा देखिएका छन्।

#### ५.५.२.४ शर्मा

शर्मा कट्टेल सरसँग बढी हेलमेल भएको साथीका रूपमा यस उपन्यासमा देखिएका छन्। शर्मा पनि कट्टेल सर पढाउने क्याम्पसमै पढाउने गर्छन्। उनकी श्रीमती आफूभन्दा कम उमेरको केटोसँग भागेकी थिइन्। त्यसैले शर्मा सर अहिले एकलै छन्। तर शर्मा त्यसपछि पनि रोमाण्टिक



भएर नै बाँच्ने गथ्यो। बुढेसकाल आउने अवस्थामा पनि ऊ केटीहरूको सुन्दरताको वर्णन गरेर मनोरञ्जन गथ्यो। शर्माको आर्थिक अवस्था पनि राम्रो थियो किनकी ऊसँग केही जग्गा जमीन थिए र भूतकालमा उसले सम्पन्न केटाकेटीलाई ट्युशन पढाएर टन्न कमाएको पनि थियो। कहिलकाहीं शर्मालाई दिक्क लाग्दा ऊ धुलिखेल, नगरकोट, ककनी, दामन वा शिवपुरीको डाँडामा कट्टेल सरलाई लिएर जान्थ्यो र घन्टोसम्म प्राकृतिक दृष्य अवलोकन गर्ने तथा हरियो घाँसमा आँखा चिम्लेर सुतिरहन्थ्यो।

अक्सर गरेर लागेको बखत शर्मा कट्टेललाई एउटै कुरा भन्थ्यो - 'कट्टेल म मर्दा तँ मलामी मात्रै जाने होइन, मलाई तैले काँधमा बोक्नु पनि पर्छ। नत्र साले म ती अर्थीबाटै उठेर तँलाई गोदन थालुँला।'

यस वाक्यबाट पनि बुझिन्छ कि दुवै मिल्ने साथी थिए तर उपन्यासको अन्त्यमा कट्टेल सरको जागिर शर्माकै कारणले खोसिएको हो भन्ने कुरा उल्लेख भएको देखिन्छ। यसबाट शर्मा मुखमा राम राम बगलीमा छुरा भन्ने व्यवहारको मान्छे हो भन्ने स्पष्ट भएको छ। ऊ बद्ध मञ्चीय र प्रतिकूल चरित्रको रूपमा देखा परेको छ।

#### ५.५.२.५ कुमार

यस उपन्यासको सहायक पात्रको रूपमा कुमार उपस्थित भएका छन्। कुमार पनि कट्टेल सरको साथी नै थिए। कट्टेल सर र कुमारको केही वर्ष अघि चिन जान भएपछि मित्रता भएको थियो। कुमार केही वर्ष अगाडि वरिष्ठ सहायकको नोकरी गथ्यो कुनै बैंकमा। अचानक ज्यादै उँचो मान्छे कुमार बनेको छ। कुन्नि भित्रभित्रै कुन काम गरेर उसले धेरै पैसा कमाएको छ र उसको बडो रवाफ छ। इज्जत छ। "कुमारले भित्रभित्र जे गर्यो, गर्यो अब गर्दैन। अब नगरको प्रतिष्ठालाई जोगाउने मध्ये एक हो। कुमारले कट्टेल सरलाई यदाकदा सहयोग गरेको देखिएपनि ऊ कट्टेल सरलाई भित्रमन देखि हेला गर्दा रहेछ। त्यसैले होला कुमारले आफ्नो घरमा पार्टी राख्दा कट्टेल सर र कट्टेलनीलाई काम सघाउनका लागि ढाकछोप गरी निमन्त्रणा दिएको देखिन्छ। उपन्यासको

अन्त्यतिर पनि कुमारले एकदिन कट्टेल सरलाई रक्सी खुवाइओरी अचानक किन हो किन कटालो समातेर चक्कु प्रहार गर्न खोज्छन्।

“तैल मेरो स्वास्नीमाथि आँखा गाड्ने ? (पृष्ठ-१६८)

‘भरो उन्नति देखरे डाहा गर्छौं।’ (पृष्ठ-१७०)

यस्ता आरोप विचरा कट्टेल सर माथि कुमारले लगाएका छन्। कुमार यस उपन्यासमा खलपात्रको रूपमा प्रस्तुत भएको छन्। र उनको भूमिका थोरै भएपनि शुरू मध्ये अन्त्यमा पनि उनको भूमिकाले महत्वपूर्ण ठाउँ लिएको छ। उनी मुक्त, मञ्चिय र प्रतिकूल चरित्र हुन्।

#### ५.५.२.६ रंजु

रंजु कट्टेल सरकी जेठी छोरी हुन्। उमेर १९ वर्षको छ। राम्री नै छिन्। आफ्नो पढाइका साथसाथै एक दुई वटा ट्यूशन पढाएर आर्थिक रूपमा घरलाई सहयोग पनि गर्छिन्। तर अचानक रंजुको व्यवहारमा फरक देखिन थाल्छ। रंजु बाहिर बढी निस्कने, बढी सजिने भएको देखिन्छ। कहिल अमेरिकन साडी त कहिले औंटी, घडी गगल्स आदि साथीले उपहार दिएको भनेर घरमा ल्याउन थाल्दा श्रीमती सावित्री कट्टेलबाट ऊमाथि शंका गरिएको छ। वास्तवमा ट्यूशनको पैसाले यति महँगो चिज किन्न सकिदैन थियो। अर्थात् उनी कतै नकतै प्रेममा पेरकी थिइन या त बिग्रेकी थिइन्। वा कुन स्रोतको पैसाले यति उपहार ल्याउन वा सिनेमा जाने बाहिरबाट खाना खाएर आउने गर्थिन। त्यो उपन्यासमा स्पष्ट गरिएको छैन, तर उनको क्रियाकलापले उनी चरित्रहिन केटीको रूपमा देखापर्छिन्। तर कट्टेल सरको विवशतामा अभावमा रंजुले आफ्नो जीवन बर्बाद गरेर भएपनि आर्थिक सहयोग गरेको देखिन्छ। जागिर छुट्टेको अवस्थामा रंजुले घरमा कट्टेल सरको ठुलो टेवा पुर्याएको देखिन्छ। यसरी रंजु यस उपन्यासको बद्ध र मञ्चीय पात्र हो।

#### ५.५.३ अन्य गौण चरित्रहरू

अत्यन्त सानो भूमिका पाएका, मूल घटना या विषयवस्तुसँग पूर्ण सम्बन्धित र अर्ध सम्बन्धित प्रसंगमा आएका पात्रलाई गौण पात्रको वर्गमा राख्न सकिन्छ। यस्ता गौण पात्रहरू मञ्चिय

र नैपथ्य दुवै रूपमा उपन्यासमा उपस्थित भएका हुन्छन्। 'कटल सरको चोटपटकमा' धेरै गौणपात्रहरूको उपस्थिति देखिन्छ। ती गौण पात्रहरू यसरी प्रस्तुत गरिएका छन् :-

| क्र. सं. | पात्रहरू           | लिंग    | कार्य भूमिका | प्रवृत्ति | स्वभाव | जीवन चेतना | आसन्नता | आवद्धता |
|----------|--------------------|---------|--------------|-----------|--------|------------|---------|---------|
| १        | बुवा               | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| २        | मंजु               | स्त्री  | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ३        | प्रेम              | पुरुष   | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ४        | सानो छोरा          | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ५        | कान्छी छोरी        | स्त्री  | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ६        | प्रधान सर          | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ७        | रोशन               | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ८        | रोशनकी श्रीमती     | स्त्री  | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ९        | घरपट्टि            | पुरुष   | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १०       | घरपट्टिकी स्वास्नी | स्त्री  | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| ११       | घरपट्टिको छोरा     | पुरुष   | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १२       | घरपट्टिको बुहारी   | स्त्री  | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १३       | कुमारकी स्वास्नी   | स्त्री  | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १४       | क्याम्पस चिफ       | पुरुष   | गौण          | प्रतिकूल  | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १५       | सहायक क्याम्पस चिफ | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १६       | डिन                | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | नेपथ्य  | मुक्त   |
| १७       | पिउन               | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १८       | विद्यार्थीहरू      | उभएलिंग | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| १९       | दुधवाला            | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| २०       | कण्डक्टर           | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| २१       | ामाकी स्वास्नी     | स्त्री  | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | नेपथ्य  | मुक्त   |
| २२       | ठिटो (भगाउने)      | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | नेपथ्य  | मुक्त   |
| २३       | जुनियर शिक्षक      | उभएलिंग | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | नेपथ्य  | मुक्त   |
| २४       | काउनी बेच्ने ठिटो  | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| २५       | पाठक सर            | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |
| २६       | विश्वनाथ सर        | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | नेपथ्य  | मुक्त   |
| २७       | विश्वनाथ बाजे      | पुरुष   | गौण          | अनुकूल    | गतिशिल | व्यक्तिगत  | मञ्चिय  | मुक्त   |

|    |                     |            |     |          |        |           |        |       |
|----|---------------------|------------|-----|----------|--------|-----------|--------|-------|
| २८ | कर साहब             | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| २९ | दान बहादुर          | पुलिंग     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३० | डाक्टर              | पुलिंग     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३१ | एकनाथ               | पुलिंग     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३२ | उर्मिला देवी        | स्त्रीलिंग | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ३३ | गोपाल               | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३४ | रक्सी दिने केटी     | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३५ | अड्डा धनी बुढी      | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ३६ | सुनीति              | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ३७ | इनार हुने बुढो      | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिहिन | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ३८ | छिमेकी              | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ३९ | पानी लिने आइमाई     | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४० | खली सुकाउने बुढी    | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४१ | चिट्ठी दिने ठिटी    | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४२ | केशव                | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ४३ | भूतपूर्व विद्यार्थी | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४४ | यामनिधि             | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ४५ | उमाप्रसाद           | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४६ | रोशनको छोरा         | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४७ | ईश्वरी              | पुरुष      | गौण | प्रतिकूल | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४८ | गेटमा उम्ने ठिटो    | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ४९ | एकजना वृद्ध         | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ५० | माम्ने ठिटो         | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ५१ | मिट्टेकी आमा        | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ५२ | विन्दु              | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | मञ्चिय | मुक्त |
| ५३ | ३० वर्षे आइमाई      | स्त्री     | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |
| ५४ | साहुजी              | पुरुष      | गौण | अनुकूल   | गतिशिल | व्यक्तिगत | नेपथ्य | मुक्त |

बुबाले पाँचवर्ष अगाडि कुटेको कुरोलाई लिएर घर छोड्ने प्रेमले कट्टेल सरलाई चोट पुर्याएकोले प्रतिकूल प्रवृत्तिको देखिन्छ। त्यस्तै घरपट्टि परिवारले बिरामी बुबाको अवस्था नहेरी घरबाट अनादर साथ कट्टेल सरलाई निकालेकोले र ईश्वरीले कट्टेल सरबाट लिएको पैसा २ वर्ष पश्चात कट्टेल सरका छोरो बिरामी भएको अवस्थामा पनि नदिएकोले ऊबाट पनि कट्टेल सरलाई ठूलो चोट पुगेको देखिन्छ। यसरी यिनीहरू पनि प्रतिकूल चरित्रका रूपमा देखिन्छ।

त्यस्तै कुमार कुनै बेला कट्टेल सरको सहयोग गर्ने त कुनै बेला अपमान र आक्रमण गर्ने भएको गतिशिल भएपनि प्रतिकूल प्रवृत्तिको देखिन्छ। उपन्यास बहुचरित्रयुक्त छ।

#### ५.६ संवाद

उपन्यासका पात्रहरूले घटनाका सन्दर्भमा परस्परमा व्यक्त गरेका प्रतिक्रियाहरू, उनीहरूबीचका छलफल र कुराकानीलाई संवाद भनिन्छ। पात्रहरूको चरित्रोद्घाटन गर्न, कथानकलाई गति दिन र यथोचित वातावरणको सृष्टि गर्न यसको प्रयोग गरिन्छ। संवाद पाठकका लागि सजिलो, स्वस्थ, हलचल, मच्चाउने र रोचक हुनुपर्दछ। संक्षिप्तता नै संवादको सार्थकताको हो नै पात्रका स्तर अनुकूलको संवाद यर्थाथको अनुकृति हो। 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा पनि वादको प्रयोग धेरै भएको छ। उपन्यासको प्रत्येक पेजमा संवादयुक्त वाक्य पाइन्छ। ती संवादले उपन्यासमा तार्किकता थपेर जीवन्तता दिएको छ, रहस्य थपेर कौतुहलमय बनाएको छ र अकल्पनीय कुरा गरेर चकित बनाएको छ।

उपन्यासको सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, अध्यात्मिक, दार्शनिक आदि विषयमा संवाद भएका छन्। रमाइला प्रसंगले उपन्यासमा रोचकता थपेको छ।

पात्रबीचको आपसी संवादले उपन्यासको घटनालाई गति प्रदान गरेको छ। उपन्यासमा पात्रको मनोविश्लेषण गर्न एकल, संवाद र पात्रको चरित्र उद्घाटन गर्न दोहोरो संवाद प्रयोग भएको छ। एउटा एकल संवाद हेरौं।

साबी, यही गर्न नसकेकोमा मलाई नामर्द भन्छे। साँच्चिकै एक किसिमको आँटिलोपन त चाहिँदो हो यसको लागि पनि ? सत्याल जाला। त्यो जसकहाँ पनि गएको होस् अहिले टाइम छैन

भन्ने सुन्ला । अर्को पटक जाला, भोली आउनुस् भन्ने सुन्ला, एवम रीत तर सत्याल छाड्दैन्, किमार्थ छाड्दैन् ।

(पृष्ठ-१२)

उसको छाती ढुक्क फूलेर आयो - के भन्न बोलायो कुन्नी ? एक छिन आशा लाग्यो, हुनसकछ कुनै लाभदायक कुरा नै होस् । तर अक्सर गरेर यस्तो हुँदैन् । अक्सर गरेर कुनै षडयन्त्र हुन्छ । क्याम्पस चिफ महाको छोटा छ । राम्रो कुरा मुखबाट कहिल्यै झार्दैन् । (पृष्ठ-१९)

अब यदि कुनै दिन चिया पनि सिद्धियो भने, भनुँला अबदेखि काडा खाने र चीनी रहनेछ भने भनुँला, नुन हालेर पकाउ । अँ यदि दुवैका दुवै रित्तिन पुगेका भए चाहिँ अल्लिक बेर लाग्ला जवाफ फेला पार्न (पृष्ठ-२०)

बरू मलाई आफ्नो वारेमा कत्ति थाहा छैन भने ..... यस्तो किन हुन्छ, यदि यस्तो हुन्छ भने फेरि, त्यस्तो किन हुन्छ, अझै त्योभन्दा, दुइटा एकदम पूर्व पश्चिम कुरा, आफूमा छ्यासमिस कसरी भै दिन्छन् ? (पृष्ठ-१०५)

माथ एक ठाउँमा मैले उल्लेख गरेका काल्पनिक नाउँ मध्ये, एउटा नाउँ वास्तविक होला ; तव त बेस ।

तर माथि भनिएका काल्पनिक नाउँहरूमा यदि सबै नाउँ वास्तविक भएर आइदिए भने ? नहुनु के छ आखिर अर्थात् ..... बुझियो होला म किन यस्तो ..... अर्थात् क्षमा रहोस्, म पिता केही पनि प्रष्ट र निश्चित र असान्दग्ध नभएकोले अलि अस्तिएको छु : (पृष्ठ-११५)

विभिन्न घटना, समस्या र शंकाले कट्टेल सरको मनय द्वन्द्व भएपछि एकल संवाद उनको मनमा आएको हो ।

सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित वार्तालाप दोहोरो संवादका रूपमा उन्यासमा आएकोले यसमा प्रयुक्त कपोकथन जीवन्त र व्यवहारिक लाग्दछ । लिंग, वर्ग र स्तरअनुसारका संवाद उपन्यासमा पाइन्छ । उपन्यास संवाद संवादले भरिएको छ ।

## ५.७ भाषाशैली

भाषा विचार विनिमयको माध्यम हो। साहित्य पनि विचारकै उपज हो जसलाई कलात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिन्छ। आफ्ना मनमा उब्जेका भावनालाई भाषाका माध्यमबाट मूर्तता दिने काम साहित्यकारले गर्छ। भाषा साहित्यको अनिवार्य तत्व हो। शैली प्रस्तुतिको तरिका हो। शैली व्यक्तिपिच्छे फरकफरक हुन सक्छ। यो एउटा वैयक्तिक गुण हो। (प्रधान, २०४०:८८) उपन्यास भाषाद्वारा मूर्त रूपमा प्रकट गरिने साहित्यिक आख्यान विधा हो र यो भाषाकै रूपमा शक्तिशाली बन्दछ। (बराल र एटम, २०६६:४५) जीवनजगतका यावत विषयलाई कलात्मक गद्यभाषाका माध्यमबाट सिर्जना गरिने विधा उपन्यास भएकोले उपन्यासको अनिवार्य तत्वको रूपमा भाषाशैलीलाई लिइन्छ। (न्यौपाने, २०५०:२१५-१२७) साहित्य कला हो भने साहित्यका कलाकार हो। साहित्यमा कति र कस्तो कला थप्ने भन्ने साहित्यकारको कुशलतामा भर पर्छ। कुशलता उसको प्रतिभा, व्युत्पत्ति र अभ्यासबाट खारिन्छ।

ध्रुवचन्द्र गौतम आख्यानकारका साथै कवि समेत हुनाले उपन्यासको भाषा पनि काव्यात्मक पाइन्छ। अनुप्रासीय वाक्यगठन, सम, विषम ध्वनि भएका शब्दको चयनबाट बनेको लयात्मकता भएको काव्यात्मक विशिष्टता उपन्यासमा यथेष्ट छ।

जस्तै:- 'आलु तामा कचौरामा, जुडे मामा तथैवच।' (पृष्ठ-१०५) उपन्यासका धेरै चरित्र शिक्षित र बौद्धिक भएकोले उनीहरूले बोल्ने भाषा पनि बौद्धिक भए पनि दुर्बोध्य छैन। कतिपय ठाउँमा अंग्रेजीका शब्द मिसिएका वाक्यहरू पाईन्छ। "ड यु थिंक दिस इज सो इजी ? (पृष्ठ-२५) मल्टिपल एक्सैस बाई वन चाकरी (पृष्ठ-११), त्यो मेरा स्टुडेन्ट होइन फर योर काइण्ड इन्फर्मेसन, उही पनि बिउटी भनेको बिउटी हो, देयर शुड नट बी एनी बोरियर टु एनज्वाय इट। (पृष्ठ-४२) त्यस्तै अंग्रेजी शब्दहरू र वाक्य (पृष्ठ-१०, ४३, ४५, ५०, ७९, ८५, ९३, १७९, १८८) मा पनि पाइन्छ। त्यस्तै उखान टुक्काको प्रयोगका कारण भाषामा लालित्य पापिएको छ। यद्यपि ज्यादै कममात्र उखान र टुक्काको प्रयोग भएको छ। रहरलाई तुरून्तै गुण्टा जस्तै कसिहाल्यो। (पृष्ठ-३) टिक्नु न टिक्नु पशुपति नाथकै हातमा (पृष्ठ-२०) थर्केर बसिरह्यो (पृष्ठ-२२) दुनियाँले खन्ता

(पृष्ठ-२४) तिमीहरू क्षणिकताका हनुमानहरू हौं (पृष्ठ-२५) लाजमा लडिबुडी खेलन थाली (पृष्ठ-२७) आदि।

केही ठाउँ बाहेक उपन्यासमा सरल भाषाको प्रयोग छ। यो त्यति निश्चित चाहिँ छैन, निश्चित प्रायः मात्र हो, यस कारण की घटनाहरू पनि दैनिक रूपमा घट्न सक्छन् जीवनमा, एउटा मान्छेको जीवनमा, एउटा टिचरको जीवनमा तर एकदम मिल्दा जुल्दा चाहिँ हुन्छन्। क्लासमा लेखाइ दिने नोटहरू जस्तै र परिणाम पनि झण्डै त्यस्तै त्यस्तै हुन्छन्, अर्थात् रिजल्ट परसेन्टेज होपलेस। (पृष्ठ-२)

मूल विषय कथावस्तु, घटना चरित्र आदि पूर्ण तयार भइसकेपछि तिनीहरूलाई रूप दिन उपन्यासकारले जुन तरिका अपनाउँछ त्यस्तो ढाँचालाई शैली भनिन्छ। उपन्यासको संरचनामा साहित्यिक र भाषिक शैली हुन्छ। विधागत उपकरणको प्रयोग र अभिव्यक्तिमा साहित्यिक शैली देखिन्छ भने भाषाको प्रयोग र त्यसको अभिव्यक्तिमा भाषिक शैली देखिन्छ।

‘कट्टेल सरको चोटपटक उपन्यासमा प्रयुक्त भाषिक शैली सरल छ। निपातको प्रयोग भने उल्लेख्य रूपमा भएको छ। सरल र संयुक्त वाक्यको प्रयोग अधिक भएको छ। अनि व्याकरणिय नियमको ठाउँठाउँमा उल्लङ्घन भएको छ। संवादयुक्त भाषामा कथ्य रूप भए त व्याकरणको पालना गरेकै ठहरिथ्यो तर वर्णन र विश्लेषण गरिएको ठाउँमा पनि कथ्य भाषाको प्रयोग भएको भेटिन्छ। जस्तै त्यसपछि मैले कैयौँ तलप खाइसके। (पृष्ठ-१८)। कथ्य रूप प्रयोग भएका केही शब्दहरू, तलप, स्वास्नी, बोक्सी, टिउटिउ, राँडो लाग्नु विस्तारो, खेम्ना, राजीनामा, नालयक आदि। तत्सम, तदभव र आगन्तुक तिनै स्रोतका शब्दहरू अनि अलङ्कारयुक्त वाक्य पनि उपन्यासमा पाइन्छ। उपमा अलङ्कारयुक्त वाक्य धेरै छन।” तिमीहय क्षणिकताका हनुमानहरू हौं। (पृष्ठ-२५), तर जब जुन हाहाकार घरमा कराउन थाल्ला, श्याल फाँटमा कराएझैं वा कि पिङ मच्चिए झैं। (पृष्ठ-१३६) तर वाह विश्वनाथ उनी आफ्नो बेहोरा र दिनचर्याहरूमा परिवर्तन नल्याएरै सारा अपमानहरूलाई ‘निलकण्ठ’ जस्तै निलिरहेका थिए। (पृष्ठ-१४३)। त्यस्तै पशुपतिनाथ, हनुमान



(पृष्ठ-२५) प्रार्थना शिव गणेश (पृष्ठ-१७२) पिण्ड पानी (पृष्ठ-१२७) भगवान (पृष्ठ-३४) जस्ता पौराणिक शब्दहरूको प्रयोग पनि उपन्यासमा गरिएको छ।

संयुक्त सरल र मिश्र तिनै प्रकारका वाक्य विध्यर्थक क्रियापदयुक्त वाक्य अनि करण, अकरण र कर्तु कर्म तथा भाववाच्युक्त वाक्य पनि उपन्यासमा प्रयुक्त छन्। प्रस्तुतिका हिसाबले हेर्दा उपन्यासको शैली वर्णनात्मक तथा चित्रात्मक छ वर्णन पनि सरल तरिकाले गरिएको हुन्छ। जस्तै:-  
प्रायः त्यो यस्ता खेलौना, साइकल र लुगा फोटोको माग गर्थ्यो, जुन त्यसले सम्पन्न सेठका छोराछोरीहरूले लिएको देखेको हुन्थ्यो र हाम्रो हैसियत नपर्ने। त्यो रु. ५० देखि २०० सम्मका खेलौना र अन्य चीजबीजहरू किनिदिन भन्थ्यो। अझ आमाचाहिंसित अड्डीनै लिने गर्थ्यो (पृष्ठ-१२७)

त्यसदिनको कुरा थियो। अब चाहिं हेपियोस् म कुरिरहेको छु त्यसलाई। त्यो समय दिएर बेपत्ता भएको छे, मर्निङ वाकमा। कहिले पूजामा हुन्छ। कुनै दिन सन्चो छैन भनेर पठाइदिन्छ। तैपनि मैले छाडेको छैन गेट (पृष्ठ-१६५)

कतिपय ठाउँमा अश्लीलबोध हुने भाषाशैलीको प्रयोग पनि भएको छ।

उता उपनिषद्माथि प्रवचन चलिरहेको थियो र यता कट्टेल महाशय कट्टेल्लीका सबभन्दा सरस भागहरूलाई आफ्ना हत्केलाहरूले तताउँदै थियो। (पृष्ठ-२)

साले आँखा लाउँछस्, स्टूडेन्टमाथि ? “यो वाक्य शर्मालाई प्रधानद्वारा बोलिएको थियो।” (पृष्ठ-४२)

कतिपय ठाउँमा गाली गर्दा प्रयोग हुने भाषाको प्रयोग भएको छ।

अब बढ्ता बोल्यौ भने मुख च्यातिदिन्छु चोथालो। (पृष्ठ-४)

हण्डे मोरो, सारै पातिएको गुण्डो छ। (पृष्ठ-१४२)

“इज्जतै माटोमा मिलाइदिने भएपछि, यस्ता राँडाराँडी छोराछोरीहरू जन्मनु नै किन, जन्मेर बाँच्नु नै किन ? (पृष्ठ-१०५)

कार्यलयहरूमा अनुशासित भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ। जस्तै

- 'सरले मलाई डाक्नु भएको हो ?
- हो, एकछिन बस्नुसु ।" (पृष्ठ-२१)

भाषा शैलीको विविध रूपको प्रयोग उपन्यासमा भएको छ। सामान्य बोलचालको भाषादेखि दरबारिया भाषासम्मको प्रयोग उपन्यासमा पाइन्छ। कथ्य रूपको अधिक प्रयोग लेख्य रूपमा पनि पाइन्छ। उखान र टुक्काको ज्यादै कम प्रयोग भएको छ भने अग्रंजी शब्दको प्रयोग व्यापक रूपमा पाइन्छ। कतिपय ठाउँमा का काव्यात्मक भाषा पनि पाइन्छ। भाषाशैलीको प्रयोगका दृष्टिले उपन्यास निर्बल छैन।

उपन्यासका प्रायजसो घटनाहरू वर्णनात्मक अनि चित्रात्मक छन्। कतिपय अवस्थामा कथानक वा घटनाको विकासमा अन्तरसम्बन्ध नरही स्वतन्त्र रहेका हुन्छन्। शृङ्खलहीन अवस्थामा पात्रको मूल कथावस्तुमा जोड्ने काम गरेको छ।

#### ५.८ 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा पर्यावरण

उपन्यासमा पात्रहरूको कार्यकलाप गर्ने वा घटनाहरू घटने समय र त्यसको मानसिक प्रभावलाई पर्यावरण भनिन्छ। उपन्यासको शृङ्खला निर्माण कार्यकारण सम्बन्धका आधारमा भएको हुन्छ। त्यस्ता कारणहरूबाट भएका कार्यहरूको निश्चित देश, काल र वातावरण हुन्छ। औपन्यासिक तथा वस्तुको स्वभाविकता र चरित्र चित्रणको सजीवतामाथि विश्वास गर्नका लागि त्यस अनुरूप देश, काल र परिस्थितिको प्रत्यक्षीकरण उपन्यासमा हुनु अपरिहार्य देखिन्छ।

'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा सम्पूर्ण नेपालको राजधानी काठमाण्डौं केन्द्रित देखिन्छ। अँ पर्सि विहिबार सर्वोच्चमा तारिख छ र एउटा अपील पनि दिनुपर्ने छ - के गर्नु राजधानी जस्तो सुविधा हामी कहाँ छैन। (पृष्ठ-१४०)

हिंडदा हिंडदै एउटा पोखरी देखा पर्यो (रानी पोखरीख कमल पोखरी, नाग पोखरी)। (पृष्ठ-१७)

नत्र आफै त उसलाई कहिल्यै पनि धुलीखेल नगरकोट, ककनी, दामन वा शिवपुरीको डाँडामा गएर हिमाल हेर्ने खपि रहेन। (पृष्ठ-४९)

एकदिन सानी छोरीले एउटा हरियो पासवुक भेट्याई, चल्ली बचत खाता नं. १२९१७, नाम रंजना कट्टेल, पुल्चोक इत्यादि। (पृष्ठ-१०७)

सबैलाई थाहा छ काठमाण्डौं शुक्रबार बेलुकी भट्टि पसल र शनिवार बिहान मासुपसलमा हुन बढ्छ। (पृष्ठ-१४४)

मलाई राम्ररी सम्झना छैन, काठमाण्डौं कुन चाहिं रेलिङ्ग वा खामोनिर आइपुग्नासाथ, एक्कासि जस्तै, कुमारले च्याप्प मेरो कटालो समायो। (पृष्ठ-१६८)

जब ऊ र म मित्रताको महान उदाहरण पेश गर्ने र देश दुनियाँमा क्रान्ति मच्चाउने सपना र प्रतिज्ञा झुण्डयाई काठमाण्डौं सडकहरूमा भौतारिने गथ्यो। (पृष्ठ-१७०)

उपन्यासमा स्थानको नाम प्रायः उल्लेख भएको पाइँदैन। कट्टेल सरको घर कहाँ हो। त्यस्तै उसको घर भएको ठाउँ कुन टोल हो ? विवाद भएको ठाउँ कुन हो ? उसले पठाउने क्याम्पस कुन एरियामा पर्छ ? भन्ने उपन्यासमा खुलेको छैन। त्यस्तै विश्वनाथ बाजे सुन्दरीजल जाने कुरा उल्लेख भएपनि उनी कहाँबाट आएका थिए भन्ने कुरा खुलेको छैन।

कट्टेल सरको छोरोलाई अनुमत आसाममा देखिएको कुरा उल्लेख छ। तर निश्चितता चाहिं छैन। खै दुई महिना अगि त आसाममा थियो ? (पृष्ठ-२०५)

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासमा भएका घटनाहरूको समय वा काल पञ्चायती व्यवस्थाको समय हो। त्यस समयमा बाक स्वतन्त्रता थिएन राजनीतिक विचार र बहसको समय थिएन। केवल सीमित व्यक्ति मेल भएका ठाउँमा वा कार्यालयमा शासक वा अन्य राजनीतिक दललाई गाली गर्ने र सन्तुष्ट हुने गर्दथे। खेलेर विरोध गर्ने सामर्थ्य थिएन। त्यो समय चाकडी चापलुसीको थियो। उक्त कुरालाई पुष्टि गर्ने सन्दर्भ उपन्यासभित्र बग्रेल्लती पाइन्छन्। यस उपन्यासमा चाकडी गर्नेको मात्र उन्नति भएको देखाइएको छ भने चाकडी जस्तो चिजले शिक्षा, आदान प्रदान गर्ने ठाउँ सम्मलाई छोडेको छैन। जस्तै:- यो सत्याल पनि लेक्चर नै हो। तर गज्जब छ। मान्छे राख्न जान्ने रहेछ। मदेखि माथिसम्म समान रूपमा मान्छे राख्दै हिँड्छ। (पृष्ठ-११)। सत्याल जाला त्यो जसकहाँ गएको होस् टाइम छैन भन्ने सुन्ला। अर्को पटक जाला, भोलि आउनुस् भन्ने

सुन्ला एवम् रीत। तर सत्याल छाडदैन किमार्थ छाडदैन। त्यक्तिको पेट्रोल खैर गईसकेपछि नभेटेर को फर्किन्छ र भेटे पछि कुनै पनि प्राप्ति किन नगर्नु जवकी दुनियाँ यसैमा टिकेकाके छ। (पृष्ठ-१२)

कार्यालयमा होस् वा क्याम्पसमा काम गर्ने मानिसहरू प्रायः राजनीतिक शक्तिबाट पुगेको हुन्थे। शर्मा र सत्यालको उन्नति हुनु वा उनीहरू भिजिटिङ्ग प्रोफेसर भएर अमेरिका जान पाउनु पनि उनीहरूको माथिसम्म भएको चाकडी र पहुँचको कारण हो भन्ने उल्लेख छ।

सत्याल चाकडीबाज छ, तर मभन्दा सफल छ जीवनमा, हाम्रो दुनियाँमा। (पृष्ठ-१२२)

उमा प्रसाद नाउँ। विशेषता के भने, सात सालमा प्रशस्त क्रान्तिकारी कामहरू गरेको थियो जसले गर्दा आजसम्म यस नधानी नहुने दुनियाँलाई धान्दै आउन सकेको थियो। तिनै क्रान्तिकारी बेलाको चिनजानहरूको बाली उसले आज काटन नपाएको भए कुन्नि उसको जीवित रहनु कति निश्चित हुँदो हो। (पृष्ठ-१७३)

उसको क्रान्तिकारी बेलाको परिचितहरू अव मन्त्री वा अरु पनि प्रभावशाली पदहरूमा बहाल भैसकेका थिए, ती मन्त्रीहरू उमा प्रसादका पुराना परिचित भएका हुनाले, भेटेको बखत सार्वजनिक रूपमा अँगालो हालिदिने गर्छन। दुई-चार घनिष्ट शब्दहरू बोलिदिन्छन्, जसले उसका ग्राहकहरूलाई एउटा राम्रो असर कि उमाप्रसाद त तगडा सोर्सवाला पुरुष रहेछ। (पृष्ठ-१७४)

क्याम्पसका प्राध्यापकहरू सबै चाकडीवस्त्र भएको देखाइएको छ भने अरु सरकारी कार्यालय बैंकमा काम गर्ने कुमार पात्रलाई पनि कालो चन्दा गरी रातारात धनी भएको चित्रण गरिएको छ।

‘स्मगलर हो’ कि होइन, कसलाई थाहा हुन्छ ? उ हुन त कुमारलाई जति जे भने पनि उसको क्या इज्जत छ कत्रो खाफ छ ? पैसा भनेको जसरी कमाए पनि हुन्छ - कमाइसके पछि जुन पेसाले पनि इज्जत बढाउँछ।” (पृष्ठ-१४)

हाम्रो समाजमा इमान्दारीपूर्वक थोरै कमाएर जीवन शान्तले यापन गर्नेलाई सबैले मूर्ख ठान्छन् र जहाँपनि यस्तो मान्छेको अपमान गरिन्छ। मध्यमवर्गलाई हेप्ने हाम्रा सामाजिक कसो छ राम्ररी चित्रण भएको देखिन्छ। कुमार जस्तो मिल्ने साथीले कट्टेल सरलाई आफ्नो घरमा हुने

पार्टीको खाना तयार पार्नेलाई श्रीमतीका साथ निम्त्याएको हुन्छ र भरे पार्टीमा आउन निमन्त्रण गर्दै न यस्तो अवस्थामा कट्टेल सरले आफूलाई एकदम निकृष्ट अनुभव गरेका छन्।

काँ र ? ठूला पार्टी र भरे रे। अरू ठूल्ठूला मान्छे पनि आउने रे। अनि यति मानिस विहान-बेलुकै बस्ने तर हामीलाई चाहिँ विहानलाई मात्रै बोलाएको रे। काम-साम गरिदिएर खाजा खाएर पठाउँछिन् रे भिउँटी मोरी।' कट्टेल्ली एकदम विद्रुपले बोली (पृष्ठ-६७)

शिक्षक भएर पनि रक्सी र केटीमा रम्ने मानिसहरू मनावृत्तिलाई राम्ररी चित्रण गर्न यो उपन्यास सफल छ।

प्रधान, शर्मा, म र सत्याल। कार्यक्रम त अब पो बनाउन थाले यिनीहरू। लाग्छ रात अब बर्वाद हुने भयो। सुस्तरी भनिदिउँ। यति राति, सबैजना प्रायः टिलनै छौँ - अब कुनै राम्री ठिटीको अड्डामा जोड खान जाने भन्दैछन्। (पृष्ठ-८४)

उपन्यासमा वर्णित सामाजिक घटना। आजभन्दा करीब २०-२५ वर्ष अगाडिका हुन्। तर आजपनि हाम्रो देशमा चाकडी चाप्लुसी गर्नेहरूको मात्र उन्नती हुने परिपाटी यथावतै छ। उपन्यासको प्रारम्भदेखिनै कट्टेल सरको जीवन दुःखद छ। उपन्यासको अन्त्यमा आइपुग्दा उनी झन महादुखमा पर्छन्। कट्टेल सरले बिनाकारण जागिर गुमाउनु परेकोले र जागिरका लागि अनेक व्यक्तिका धाउनु परेकोले उनी प्रति पाठकको मनमा साहनुभूति प्रकट भएपनि आक्रोश पोख्ने ठाउँ पनि कतै-कतै देखिन्छ। जस्तै:- समय अनुसार आफूलाई परिवर्तन गर्न नसकेको र सितैमा भेटियो भने रक्सी खान जाने, श्रीमतीलाई बिनाकारण गाली गर्नु आदि। शर्माका कारण उनको जागिर खोसिएको आशंका गरिएपनि यसको कुनै ठोस प्रमाण छैन। देशमा रहेको विकृति, विसंगति, बेधिति जस्ता नकारात्मक पक्षको विरोध गर्न उपन्यास असमर्थ देखिन्छ।

शर्मा, सत्याल र अरू चाकडी चाप्लुसी गर्ने लेक्चररहरूको सुविधा पद बढ्ने तर कसैको कुभलो नचिताउने कट्टेल सरको जागिर खोसिएकोले सोझा व्यक्ति परिबन्द वा छलकपट जसरी भएपनि झड्खालोमा पारिने अनि चतुर व्यक्तिले मनोमानी गर्ने प्रवृत्ति बढेको देखाउन उपन्यास समर्थ छ। नुनको सोझो गर्नेले जीवनभर कष्टपूर्ण जीवन बिताउनुपर्ने अनि जीवनका हरेक

क्षणहरूमा कुनै बेला आर्थिक अभावको चोट त कुनै बेला अपमानको चोटपटक खानु पर्छ भनी उपन्यासको शीर्षकलाई र उपन्यासको मूल मर्मलाई लक्षित गरी सामाजिक यथार्थप्रति झटारो हान्न उपन्यास समर्थ देखिन्छ।

### ५.९ जीवनदर्शन वा उद्देश्य

साहित्यलेखनको पछाडि कुनै न कुनै प्रयोजन रहेको हुन्छ। पूर्वीय र पाश्चात्य समालोचकहरूको शैक्षिक, धार्मिक नैतिक तथा आनन्द प्राप्तिलाई साहित्यको प्रयोजन मानेका छन्। साहित्यको आख्यानात्मक विधा उपन्यासमा लेखकले जीवनजगतप्रतिको दृष्टिकोण कलापूर्ण र भावपूर्ण प्रस्तुत गर्नुपर्छ। कथावस्तु, पात्रपात्राहरूको चित्रण आदिको क्रममा तिनीहरूप्रति उपन्यासकारले एक विशेष दृष्टिकोण अपनाइसकेको हुन्छ। यही दृष्टिकोण नै परिपुष्ट भएपछि जीवनदर्शनको रूपमा प्रकट हुन्छ। (न्यौपाने, २०५०:२२२)

दर्शन एउटा दृष्टि हो जो आदर्श, सार्वभौम, सर्वमानक हुन्छ। जीवनसँग सम्बन्धित समस्याको खोजी दर्शनमा गरिएको हुन्छ। जीवनदर्शनबाट ज्ञान, बुद्धि, विवेकको खोजी गरी जीवन सुन्दर बनाउने कोशिश गरिन्छ। संसारका हरेक क्रियाको पछाडि कारण हुन्छ। उपन्यास लेख पनि एउटा क्रिया हो। यसको पछाडि जीवनजगतलाई विविध कोणबाट प्रस्तुत गर्नुको कारण छ।

उपन्यासकारले उपन्यासमा सामाजिक विविधतालाई आर्थिक पक्षले पनि प्रभाव पार्छ भन्ने कुरा समेटेका छन् जुन अहिले पनि हाम्रो समाजमा जस्ताको त्यस्तै छ। कालो व्यापार गरेर होस् या चाकडी-चाप्लुसी गरेर हो धेरै पैसा कमाउनेलाई मात्र घर, परिवार, समाज साथीभाइ र यो संसारले आदर गर्छ। यदि पैसा छैन भने यो संसारमा आफ्नै छोराछोरी समेतले मान्यता दिँदैन भन्ने कुरा यस उपन्यासले छर्लङ्ग पारेको छ। अर्थात् हामीले आफ्नो उन्नति गर्नलाई हाम्रा वरिपरिका व्यक्तिले चाहेअनुसार भइदिनु पर्छ नत्र कट्टेल सर झैं जीवन कष्टकर हुनेछ भन्ने कुरा झल्काउन खोजेको छन् उपन्यासकारले। कलयुगी समयमा कलयुगी व्यक्ति आचरण लिएर मात्र बाँच्न सकिन्छ भन्ने शिक्षा दिन गौतमले 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यास सिर्जना गरेका हुन्।

## ५.१० 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा दृष्टिविन्दु

उपन्यासमा कथयिताले कथावाचनका लागि उभिन बस्नलाई रोजेको ठाउँ नै दृष्टिविन्दु हो। यसले कसले कथा भनेको छ र कसरी कथा भनिएको छ भन्ने कुरालाई बुझाउँछ। कतै कथयिताले आफु नै औपन्यासिक कथानकमा पसेर बोल्ने अनुमति पाएको हुन्छ भने कतै सानो ढोकाबाट देखिएका कुराहरू र कतै सम्पूर्णतः ओकल्ने छुट पाएको हुन्छ। यस आधारमा दृष्टिविन्दु बाह्य वा तृतीय पुरुष, आन्तरिक वा प्रथम पुरुष र सम्बोधित वा द्वितीय पुरुष गरी तीन प्रकारका हुन्छन्। (बराल र एटम, २०६६:३५)

'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा मूल रूपमा आन्तरिक वा प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग छ। कथयिताले चाहेका कुरा कट्टेलसरकै रूपमा आएका छन्। आन्तरिक वा प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दु पनि केन्द्रिय र परिधीय गरी छुट्याउन सकिन्छ। त्यस आधारमा हेर्दा उपन्यासको प्रमुख पात्र कट्टेल सरले आफ्ना कुराहरू निजी तवरले भनिरहेको हुनाले यस उपन्यासमा र केन्द्रिय प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग भएको छ। जस्तै:- म केवल खुट्टामा चप्पल हुलेर हिंडे। जुत्ता छाडिदिँँ यद्यपि मेरो जुत्ता न विक्री हुने खालको थियो न जडाउरी दिने खालकै अर्थात् म नभएको खण्डमा मेरो प्रतिक्षा सबभन्दा बढी मेरो जुत्ताहरूले नै गर्लान्। (पृष्ठ-१६)

मैले घाँटीमा दुङ्गा-सुङ्गा केही बाँधेर हाम फाल्नु पर्ने हुन त डोरीको समस्या त्यतिखेर पनि पर्दो हो तैपनि....। शायद म निकै आवेशमा हुँदो हुँ। अब रातको समयमा म, जो पोखरीभिन्न परे-मेरा भावनाहरूमा निर्घातसित परिवर्तन आयो। पोखरीको शितल पानीले म झल्यांसस भए झैं भएँ त्यो यस अर्थमा कि मर्न हिडेको मानिस एक प्रकारको विसुरमा हुँदोरहेछ। अब जस्तो किसिमको सृद्धि आयो, त्यसमा मेरो मर्ने इच्छा पटककै बाँकी थिएन। (पृष्ठ-१७)

कतिखेर मान्छे सम्झना लायक रहँदैन, सम्झना लायक यसकारण रहँदैन कि फुर्सद नहुने हुन्छ, फज्जुल लाग्ने हुन्छ, आम्दानी नहुने हुन्छ, आम्दानी यसकारण नहुने हुन्छ कि म धेरै आँटिलो छैन। आँटिलो यसकारण छैन कि पैसा छैन, पैसा यसकारण छैन कि आम्दानी छैन। (पृष्ठ-३९)

मैले यसो भन्नासाथ साबु त निश्चित थियो, साबुसितै अन्य ग्राहक पनि जो अगिदेखि हाप्रो कुरा सुनिरहेका थिए, अब आतंकित देखिए, र मसित एक प्रकारले घृणा गर्न थाले जस्ता पनि। (पृष्ठ-५५)

एक महिनापछि, एक दिन मलाई थाह भयो, जब म त्यसको फिस तिर्न भनेर गएँ, के भने, उक्त एक महिनाभरि त्यो एक दिन पनि स्कुल गएको रहेनछ, साँच्चिकै कुनै दिन पनि थाहा छ ? म त सुन्ना साथ रिस र निराशाको आवेगले रन्थनिए। (पृष्ठ-१२९)

यस उपन्यासमा आंशिक रूपमा कट्टेल सर पात्रलाई तृतीय पुरुषमा राखी लेखकले उनका बारेमा वर्णन गरेका छन्। जस्तै:-

कट्टेल सर स्वास्नीसित रोमाशं गर्दैछ। धेरै लामो समयपछि स्वास्नी तीन हप्ता विरामी परेर तङ्ग्रेकी थी र यस्तो मौका उसलाई उम्कन दिन मन लागेन। (पृष्ठ-१)

क्याम्पस चीफले डाक्यो रे। पिउनले भर्खरै आएर सूचना दिएको थियो। उसको छाती ढक्क फुलेर आयो। (पृष्ठ-१९)

ऊ अब साँच्चिकै थर्केछ। उसलाई चुरोट खाने तलतल लागेर आयो। (पृष्ठ-२२)

यस उपन्यासमा कतै सम्बोधित वा द्वितीय पुरुष दुष्टविन्दुको पनि प्रयोग भएको छ। मैले तिमीलाई हजारपल्ट भनेको छु, पहिले भाँडामा चामल हेर अनि अरूथोक किन, तिमीलाई लाग्दैन। (पृष्ठ-३)

बहस नाइ। उ गलत त थी। तर यहाँ अब उसलाई कल्ले बुझाओस्। होइन भने अक्सर गरेर यसै गरिन्छ। (पृष्ठ-५५)

माथि उद्धृत वापक्यमा प्रयुक्त तिमीलाई, कल्ले, हेरियोस्, हेरियोस् मेरो बहुलट्टी नम्बर १ को नमूना। म जुत्ता सफा गर्दै र पालिस लगाउँदै, जीवनका बिल्याँटाहरू देख्न थाले। (पृष्ठ-५१)

भनेर कथियताले द्वितीय पुरुषलाई सम्बोधन गरेको छ। उपन्यासमा यो सम्बोधन पाठकप्रति लक्षित छ।



## ५.११ निष्कर्ष

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यास आख्यानपुरुष ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यासयात्राको दोश्रो चरणको सफल कृति हो। यसमा समाज र जीवनका सम्पूर्ण विसङ्गत पक्षलाई समेटिएको छ। आख्यानले निम्न मध्यम वर्गीय नेपालीको जीवनको अवस्थालाई प्रष्ट पार्न खोजेको छ। आर्थिक दुरावस्थाले निम्न मध्यम वर्गीय मान्छेमा उत्पन्न हुने कठिनाइको चित्रण मार्मिक र जीवन्त ढंगले प्रस्तुत गरिएको छ। शिक्षक वर्गमा देखिने चाकड़ी, चाप्लुसली बिगबिगी भएको अवस्थामा कट्टेल सरको पात्रको जीवनको संघर्ष निरर्थक देखिन स्वभाविक देखिन्छ। अभाव छटपटी, मानसिक कुण्ठी, जालमेल, षडयन्त्र जस्ता पक्षहरू उपन्यासमा छर्लङ्ग देखिएका छन्। समाजमा अरुजस्तो भइदिन नसके पनि अरूले चाहेजस्तो होइदिन, गरीदिन नसक्नेहरूको फलिफाप हुन सक्दैन भन्ने भाव ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासले प्रकट गरेको छ।

## छैठौं परिच्छेद

ध्रुवचन्द्र गौतमका औपन्यासिक प्रवृत्तिका आधारमा 'कट्टेल सरको चोट-पटक' उपन्यासको विश्लेषण

६.१ पृष्ठभूमि:-

मान्छेको आ-आफ्नै किसिमका विचार, सिद्धान्त, मान्यता र प्रवृत्ति हुन्छन्। त्यसकारण यस धारा र प्रवृत्तिका आधारमा यति नै हुन् भनी किटान गर्न भने असजिलो छ। (न्यौपाने, ७:३२) कट्टेल सरको चोटपटक उपन्यासले अवलम्बन गरेका केही प्रवृत्तिको छोटो चर्चा यहाँ प्रस्तुत गरेको छ।

६.२ समसामायिक युगीन परिवेशको चित्रण

वि.सं. २०४६ भन्दा अगाडि भ्रष्टाचार, दुराचार, चाकड़ी, चाप्लुसी, नातावाद र कृपावाद व्याप्त थियो। यसको विरुद्ध बोल्ने कोही थिएनन्। अहिले सम्म पनि यो प्रवृत्ति यथावतै छ। उपन्यासमा तत्कालीन युगीन परिवेशको झल्को पाइने सन्दर्भ ठाउँ-ठाउँमा छैन।

उसले भनी - "स्मगलर हो कि होइन कसलाई थाह हुन्छ ? ऊ हेर्नु त कुमारलाई जति जे भने पनि उसको इज्जत छ, कत्रो खाफ छ। पैसा भनेका जसरी कमाए पनि हुन्छ, - कमाइसकेपछि जुन पैसाले पनि इज्जतै बढाउँछ।" (पृष्ठ-१४)

बाहिरी कसरी हो भने, कल्चरल इन्भिटेशन अर्थात् साँस्कृतिक निमन्त्रणामा, भित्री कसरी हो भने - गुलाम अलि खाँ कम्पनी।” सत्यालले चाकरी बुझाउने विशुद्ध भाष बोल्यो। (पृष्ठ-६९)

यो मेरो चौथो कि पाँचौ पटक थियो, त्यस सिल्लडको घर घाएको ऑफिस त अझै बढी पल्ट होला। भन्नलाई मेरो विद्यार्थी हो भूतपूर्व तर अब कहाँ ? के को विद्यार्थी त्यसले त मलाई शायद डाकेकै यही देखाउन हो कि हेर म कति ठूलो पोजिशनमा पुगेको छु। कुनै संस्थाको सचिव, अध्यक्ष केही हो। (पृष्ठ-१६३)

उमा प्रसाद नाउँ, विशेषता के भने, सात सालमा प्रशस्त क्रान्तिकारी कामहरू गरेको थियो। जसले गर्दा आजसम्म यस नथानी नहुने दुनियाँलाई धान्दै आउन सकेको थियो। तिनै क्रान्तिकारी बेलाका चिनजानहरूको बाली उसले आज काट्न नपाएको भए, कुन्नि उसको जीवित रहनु कति निश्चित हुँदो हो। (पृष्ठ-१७४)

### ६.३ सामाजिक यथार्थवादी जीवनदर्शन

साहित्यमा आदर्शवाद र स्वच्छन्दतावादको विरुद्धमा यथार्थवाद आएको हो। (जोशी, २०११:३०) साहित्यमा जीवनजगतलाई वस्तु यथार्थ र भाव यथार्थ गरी दुई रूपमा प्रस्तुत गरिएको हुन्छ। वस्तु यथार्थमा भाव पक्षलाई निषेध गरिएको हुन्छ। यथार्थको शब्दभित्र साहित्यमा निर्माण गर्नु यथार्थवादको धर्म हो। यथार्थवाद विभिन्न प्रकृतिको हुन्छन्। सामाजिक यथार्थवाद, ऐतिहासिक यथार्थवाद, अतियथार्थवाद आदि। जसमध्ये ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासले सामाजिक यथार्थवादलाई अङ्गालेको छ।

सामाजमा देखिएका कुरीति, शोषण र अन्य विसङ्गत तत्वहरूलाई औँल्याएर तिनको हुबहु वर्णन गर्ने लेखनपद्धतिलाई सामाजिक यथार्थवाद भनिन्छ। समाजमा घट्ने घटनाको यथार्थ चित्रण र हाम्रो सामाजिक रितिरीवाज चालचल, भेदभाव, थिचोमिचो, विकृति, विसङ्गतिको हबहु चित्रण गर्नु नै सामाजिक यथार्थवाद हो। (बराल र एटम २०६६:१०९)

‘स्मगलर हो कि होइन कसलाई थाह हुन्छ ? ऊ हेर्नु त, कुमारलाई जति जे भने पनि, उसको क्या इज्जत छ, कत्रो खाफ छ ? पैसा भनेको जसरी कमाए पनि हुन्छ - कमाइसकेपछि जुन पैसाले पनि इज्जतै बढाउँछ। (पृष्ठ-१४)

हाम्रो समाजमा पैसा हुनेलाई मात्र इज्जत गरिएको यथाथ्र यहाँ पोखिएको छ। चाह त्यो पैसा जसरी कमाइएको होस्। यस अनुच्छेदले हाम्रो सामाजिक दृष्टिकोणलाई यथार्थ रूपमा वर्णन गरिएको छ। त्यस्तै चाकरी चापलुसी गर्नेको मात्र उन्नति हुने यथार्थ पोखिएको छ।

सत्याल जहाँ पनि फिट हुने खालको मान्छे हो चाकड़ी र चाप्लुसी गर्नु पनि उसको ड्युटी नै हो।

सावी यही गर्न नसकेकोमा मलाई नामर्द भन्छे साँच्चै एक किसिमको आँटिलोपन त चाँहिदो हो, यसको लागि पनि। सत्याल जाला त्यो जसकहाँ पनि गएको होस् अहिले टाइम छैन भन्ने सुन्ला, अर्कोपटक जाला, भोलि आउनुस् भन्ने सुन्ला एवम् रीत तर सत्याल छाड्दैन। (पृष्ठ-१२)

मलाई तीन महिनाको तलव र सुचना दुवै दिएर नोकरीबाट बर्खास्त गरिएको थियो। आँखाको अगाडि अँध्यारो व्याप्त हुने कुरा कति गर्नु, मलाई त लाग्यो मेरो बाँकी उमेर वृद्ध जटायु जस्तै रगतपक्ष भएर झरेको छ, अन्तिम साँस फेरेको छ। दुवै पखेटा थुतिएको छ। (पृष्ठ-१४९)

निम्न मध्यम वर्गीय व्यक्तिको हाम्रो नेपाली समाजमा निम्न स्थान रहेको उसले जतिसुकै इमान्दारीपूर्वक काम गरेपनि त्यसको निन्दा नै गरिने तर चाकड़ी, चाप्लुसी गर्नेको र भ्रष्टाचार गरी धनी हुनेको खुब इज्जत गरिने हाम्रो सामाजिक परिपार्टी राम्रो होइन भन्ने संकेत उपन्यासमा पाइन्छ। जीवन-जगतलाई सुन्दर र आदर्श बनाउन साहित्यले ठूलो भूमिका खेलेको हुन्छ। हाम्रो जीवन र समाजमा रहेको धनी र गरीबको भेदभावलाई हटाई सुन्दर, स्वस्थ जीवन र समाजको निर्माण गर्न सबैले उत्तिकै रूपमा आफ्नो स्थानबाट भूमिका निर्वाह गर्नुपर्छ भन्ने यथार्थवादी जीवन दर्शन ‘कट्टेल सरको चोटपटक उपन्यासमा पाइन्छ।

## ६.४ विसङ्गतिवादी / अस्तित्वादी जीवनदर्शन

मान्छेले गरेको बौद्धिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्तिले गरेको भौतिक विकास र त्यही भौतिक विकासले गरेको मानवीय सभ्यताको विनाशबाट निराश भएको मानसिकतामा साहित्यमा विसङ्गतिवादको जन्म भएको हो। विसङ्गतको दुनियाँमा सङ्गतका खोजी गर्दै आजको मान्छे बाँचिरहेछ। तर पनि शून्यताबाहेक केही प्राप्त गर्न सक्दैन। (बराल र एटम, २०६६:१९६) मान्छेले जन्मसँगै मृत्यु लिएर आउँछ। यही नै निस्सारता र शून्यता हो। यही नै ईश्वरहीनता हो। तसर्थ नचाहेरै हामी जन्मन्छौं अनि नचाहेरै मर्छौं। (त्रिपाठी, २०५०:१०६) मान्छेले नचाहेको वा आशा कल्पना नगरेको वस्तुलाई जबर्जस्ती वरण गर्नुपरेको स्थिति र उसको बेसहारा, निरीहपन र निराशालाई विसङ्गति मान्यतामा साहित्यमा प्रस्तुत गरिन्छ।

‘कट्टेल सरको चोटपटक उपन्यासमा विसङ्गतिवादी र अस्तित्वादी दुवै जीवन दर्शन भेटिन्छ। मान्छेले गरेको बौद्धिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्तिले गरेको भौतिक विकास र त्यही भौतिक विकासले गरेको मानवीय सभ्यताको विनाशबाट निराश भएको मानसिकतामा साहित्यमा विसङ्गतिवादको जन्म भएको हो। विसङ्गतको दुनियाँमा सङ्गतको खोजी गर्दै आजको मान्छे बाँचिरहेछ। तर पनि शून्यताबाहेक केही प्राप्त गर्न सक्दैन। (बराल र एटम २०६६:१९६) मान्छेले जन्मसँगै मृत्यु लिएर आउँछ। यही नै निस्सारता र शून्यता हो। यही नै ईश्वरहीनता हो। तसर्थ नचाहेरै हामी जन्मन्छौं अनि नचाहेरै मर्छौं। (त्रिपाठी, २०५०:१०६) मान्छेले नचाहेको वा आशा कल्पना नगरेको वस्तुलाई जबर्जस्ती वरण गर्नुपरेको स्थिति र उसको बेसहारा, विवशता, निरीहपन, निराशालाई, विसङ्गति मान्यतामा साहित्यमा प्रस्तुत गरिन्छ।

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासमा विसङ्गतिवादी जीवनदर्शन धेरै भेटिन्छ। उपन्यासको प्रमुख पात्र कट्टेल सरको जीवन विसङ्गतियुक्त छ जुन उपन्यासको शीर्षकमा गएर टोक्किएको छ।

जति कोशिश गरेपनि कट्टेल सरले आफ्नो परिवारको सम्पूर्ण रूपमा हेरचाह गर्न सकेको छैनन्। त्यतिमात्र होइन पर्याप्त आमदानी नभएकोले जहिल पनि कट्टेल सर सबैसँग उधारो र ऋण लिएर काम चलाउन बाध्य छन् र पसलेसँग अझ उधारो माग्नु विन्ती गर्नु वा पसलेलाई देखेर

लुकेर भागनु वाध्य हुनु विसङ्गति पक्ष हो। आर्थिक अभावका कारण बिरामी छोराको उपचार गराउन नसक्नु छोरी विग्रीन थालेको सहनु पनि विसङ्गति पक्ष हो। यही विसङ्गत पक्ष नै उपन्यासको शीर्षकसँग समेत ठोक्किएको नमूना हो।

क्याम्पसको प्राध्यापक भएर पनि 'कट्टेल सर' पात्रलाई काठमाण्डौं जस्तो महँगो ठाउँमा जीवन निर्वाह गर्न निकै गाह्रो थियो। यहाँसम्म कि कुनै-कुनै दिन खाना छाक टार्ने चामल सकिएकोले उनीहरू बीच (कट्टेल सर र श्रीमती कट्टेलनी बीच) निकै झगडा पथ्र्यो। यो पनि विसङ्गतिको नमूना हो।

मैले हजार पल्ट भनेको छु, पहिले भाँडामा चामल हेर, अनि अरूथोक किन, तिमीलाई लाग्दै लाग्दैन, "कट्टेल जडिन्छ - ' अब जेसुकै गर। त्यो हिजो व्याग स्याग किन्ने, चुरा लाउने, के मतलब थियो ?" (पृष्ठ-३)

यहाँ कट्टेल सरले श्रीमतीले जाबो एउटा व्याग किन्दा झगडा गर्नु पनि विसङ्गतिको नमूना हो। त्यस्तै जिन्दगी देखि वाक्क लागेर पोखरीमा हाम फालेर आत्महत्या गर्न जानु पनि विसङ्गति पक्ष हो। रक्सी खाएर जीवनका पिर मर्का भुल्न सकिन्छ भन्ने सोच राखेर कट्टेल सर जस्ता व्यक्ति पनि भट्टीमा जानु, केटी भएको भट्टीमा आनन्द लिन जानु, छोरी विग्रीन थालेको थाह पाउँदा-पाउँदै पनि उसलाई गालि नगर्नु पनि यस उपन्यासको विसङ्गति ज्वलन्त नमूना हुन्।

विभिन्न समस्या झेलेर पनि कट्टेल सरले आफ्नो परिवारको भरणपोषण गर्न सकेका छैनन् उनले पाएको तलबले उनको आठ जनाको परिवारलाई राम्ररी खाने बस्ने व्यवस्था मिलाउन कट्टेल सरलाई धौ - धौ परेको छ। यस्तो अवस्थामा कट्टेल सरलाई बाहिरको समाजमा जे होस् तर घरमा पनि मेरो अस्तित्व छ कि छैन भनेर शंका लागिरहन्छ। उनी मुखले श्रीमती र छोराछोरीलाई विभिन्न सान्त्वना दिएर परिवारमा आफ्नो अस्तित्व बुबाको श्रीमानको रूपमा स्थापित गर्न खोजिरहनु अस्तित्ववादी नमूना हो। कट्टेल सरका बुबा सामान्य र स्वस्थ रहेको अवस्थामा कट्टेल सरले बुबाको सम्पूर्ण आज्ञा पालन गर्नु र सकी नसकी जसरी भएपनि वहाँका आवश्यकता पुरा

गरेर एक असल छोराको कर्तव्य निभाउनाले पनि आफूमा असल छोराको अस्तित्व रहने उनको सोचाइ पनि अस्तित्ववादीको नमूना हो।

## ६.५ निष्कर्ष

अमिधा, लक्षणा र त्यञ्जना तीनै अर्थमा सान्दर्भिक देखिने 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यास आख्यानपुरुष ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यासयात्राको दोस्रो चरणको सफल कृति हो। प्रमुख पात्र कट्टेल सरको जीवनका संघर्ष, विवशता र घटनाचक्रलाई जीवनका रूपमा प्रकाशित भएको उपन्यासमा नेपाली सामाजिक मध्यमवर्गीय यथार्थ चित्रण देखिन्छ। कथ्य भाषाको प्रशस्त प्रयोग भएको कोतुहलपूर्ण अभिव्यक्तिले राम्रै स्थान पाएको छ। रहस्यमय संवाद र क्लिष्ट भाषाको कम प्रयोगका कारण उपन्यास दुर्बाध्य छैन। उत्पाद्य कथास्रोत रहेको उपन्यासमा कल्पनाशक्तिको राम्रो प्रयोग भएको छ। समसामयिक परिवेशमा कल्पनाशक्तिको सफल प्रयोग गरी ओजपूर्ण उपन्यास पाठकलाई दिन सफल गौतमको 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यास विसङ्गतिवादी र दुखान्तक रहेको छ। बाह्य र आन्तरिक द्वन्द्व दुवै बराबरी रहेको उपन्यासमा चरित्र कट्टेल सरको जीवनमा अभावबाध उत्पन्न हुने द्वन्द्व मच्चिएको छ। बाह्य द्वन्द्व मानिस मानिसबीचमा भएको देखिन्छ र सामान्य विषयमा द्वन्द्व भएको हुनाले त्यसले ठूलो रूप पनि लिएको छैन। बहुपात्र उपन्यासमा धेरै पात्र अनुकूल प्रवृत्तिका छन्। मञ्चीय पत्र बढी भएको यस उपन्यासमा बद्ध पात्र कम छन्।

काठमाण्डौं केन्द्रित शहरिया मध्यमवर्गीय जीवनको कथानक बोकेको उपन्यासको भाषाशैली सरल छ। वाक्यमा लयात्मकता आलङ्कारिता पाइए पनि उखान र टुक्काको भने थोरै प्रयोग भएको छ। सरल र संयुक्त वाक्यको अधिक प्रयोगका कारण उपन्यासमा अलङ्कारयुक्त वाक्य धेरै छन्। वर्णनात्मक र चित्रात्मक रूपमा विषमको प्रस्तुतीकरण भएको उपन्यासमा अंग्रेजी शब्दको धेरै प्रयोग भएको छ, भने ठाउँ-ठाउँमा अश्लील वाक्य पनि छन्। उपन्यासमा उच्च वर्ग र मध्यम वर्गका व्यक्तिले गर्ने स्वच्छ तार्किकता थपेर जीवन्तता दिन संवादले महत्वपूर्ण भूमिका खेलेको छ। एकल र दोहोरो दुवै प्रकृतिका अनि चरित्रको लिङ्ग वर्ण र स्तरानुसारका संवाद प्रत्येक पेजमा भेटिन्छ। सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित संवादका कारण कथानकले जीवन्तता प्राप्त गरेको छ।

मूल रूपमा केन्द्रीय तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग भएको उपन्यासमा आंशिक रूपमा प्रथम पुरुष दृष्टिविन्दुको पनि प्रयोग भएको छ। उपन्यासको गौन पात्र रोशनको प्रस्तुती उपन्यासमा स्पष्ट नहुनुले उपन्यासको कमजोर पक्षलाई जनाउँछ किनकी रोशनलाई र उनकी श्रीमती छोरालाई कट्टेल सरकी श्रीमतीले राम्ररी खाना खुवाइओरी पठाउँदा पनि उनीहरू किन खुशी भएर विदा भएको देखाइएको छैन, त्यो स्पष्ट गरिएको छैन। त्यस्तै कट्टेल सरको जेठी छोराको खबर उपन्यासको अन्त्यसम्म नभएकोले उपन्यास दुखान्त हुन पुगेको छ।



# सातौं परिच्छेद

## उपसंहार र निष्कर्ष

### ७.१ उपसंहार

वि.सं. २००० मा भारतका रक्सौलमा जन्मिएका ध्रुवचन्द्र गौतमकी आमाको नाम दीपवती गौतम र बाबुको नाम गोविन्दप्रसाद गौतम हो। गाउँकै साधारण विद्यालयबाट प्रारम्भिक शिक्षा गौतमले विधा वारिधिसम्मको उपाधि हासिल गरेका छन्। तटस्थता: असफलता शीर्षकको कविता २०२० सालको रूपरेखा पत्रिकामा प्रकाशित गरी नेपाली साहित्यिक आकाशमा औपचारिक रूपमा उदाएका गौतम गद्य र पद्य दुवै क्रियाशील भए पनि गद्य विधामा उनी प्रख्यात छन् र आख्यानपुरुष उपाधिबाट विभूषित छन्। वि.सं. २००० मै रूपरेखा पत्रिकामा नै एक यात्रा अनुभूति शीर्षकको कथा प्रकाशन गरी गद्यविधामा छिरेका गौतमलाई यही विधाले नै चर्चित गरायो। आफ्ना कृतिमा अस्तित्ववादी र विसङ्गतिलाई नङ्ग्याउन उनका कृति सफल रहेका छन्। उनले प्रयोगका लागि प्रयोग नगरी प्रयोगलाई उपन्यासको अनिवार्य तत्वभित्र समावेश गरेको छन्।

वि.सं. २०२४ का प्रकाशित अन्त्यपछि देखि २०६८ मा प्रकाशित सातौं ऋतुसम्म आइपुग्दा उनका २६ वटा उपन्यास प्रकाशित भइसकेका छन्। लामो औपन्यासिक यात्रामा सिर्जित दुई दर्जन उपन्यासमा देखिएका प्रवृत्तिलाई केलाउँदा विसङ्गतिवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद, प्रयोगवाद जस्ता प्रवृत्ति भेटिन्छन्। पाश्चात्य साहित्यमा देखा परेका प्रवृत्तिलाई नजिकबाट नियालेर

ती प्रवृत्तिलाई नेपाली साहित्यमा भित्रयाउने श्रेय पनि गौतमलाई जान्छ। विसङ्गतिवादी साहित्यिक प्रवृत्ति नेपाली आख्यान विधामा २०२० सालतिर मौलाइसकेको थियो। त्यही मान्यतामा रहेर उपन्यास लेखन शुरू गरेका गौतम उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य परम्परामा यात्रारत छन्। प्रयोगवाद उनको प्रमुख औपन्यासिक प्रवृत्ति हो। प्रयोगवादमा जहिले पनि नवीनताको खोजी गरिन्छ। प्रयोगका कारण साहित्यको दुर्गतिभन्दा बढी प्रगति नै हुन्छ।

उपन्यासकार ध्रुवचन्द्र गौतमको प्रयोगवादी औपन्यासिक प्रवृत्ति वि.सं. २०३३ मा प्रकाशित डापीदेखि नै शुरू भइसकेको देखिन्छ। वि.सं. २०५७ मा बाढी उपन्यास उनले अनुभवन्यासको रूपमा प्रकाशन गरे। अनुभवन्यास लेखन नेपाली साहित्यमा कतै पनि थिएन। कतै पनि उल्लेख नभएको रूपको उपन्यास सिर्जना गर्नु उनको अभूतपूर्व उपलब्धि हो। त्यसैगरी वि.सं. २०५५ मा प्रकाशित फूलको आतङ्कमा उनको अर्को प्रयोग भेटिन्छ। १२६ वटा सूत्र दिएर प्रत्येक सूत्रमा कम्तीमा २ हरफदेखि बीमा २ पेजसम्मका सूत्रहरूको संयोजन गरी सूत्र उपन्यासको थालनी गरे। वर्तमान जीवनमा कृत्रिमताको सहारा लिएर बाँच्न विवश भई प्राकृतिक जीवनपद्धतिबाट विमुख हुँदै गइरहेको आजको मान्छेलाई प्रकृतिको सुन्दर एवम् कोमल वस्तु फूलले समेत आतङ्कित पारिरहेको छ भन्ने भावलाई सूत्रात्मक, कलात्मक र आकर्षक पाराले यस उपन्यासमा व्यक्त गरेका छन्।

बाढी उपन्यासको अर्को शृङ्खलाको रूपमा २०६२ सालमा घुर्मी उपन्यास प्रकाशन भएको पाइन्छ। चेतचन्द्र नाम गरेको पात्रको तीस वर्षे जीवनभोगाइका अनुभवलाई विषय बनाएर प्रस्तुत भएको उपन्यासको प्रमुख पात्र चेतचन्द्र स्वयम् ध्रुवचन्द्र गौतम हुन्। ध्रुवचन्द्रको न्वारानको नाम चेतचन्द्र हो। भोक्ता चेतचन्द्रलाई भोक्ताबाट खोसेर समाख्याता आफैं भोक्ता बन्दा पात्रभञ्जनपको गति देखा परेको छ। ध्रुवचन्द्रको स्मृतिको दौडसँगै भएको घटनाको परिवर्तनका कारण कथानकको विकासमा विशृङ्खलता पाइन्छ जसका कारण कथानकको विकास रैखीय ढाँचामा नभई लेखकीय ढाँचामा भएको छ। नेपाली औपन्यासिक, इतिहासमा मात्र होइन विश्वको औपन्यासिक इतिहासमै इतिहासमै अनुभवयासलेखनको इतिहास बाढी (२०५६) भन्दा अगाडि पुग्न सकिन्न भनी

आलोचकहरूले गौतमलाई विश्व साहित्यमै अनुभवन्यासको प्रवर्तन गर्ने साहित्यकारको सूचीमा देखेका छन्।

‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यास गौतमको एक महत्वपूर्ण कृति हो। उपन्यास गौतमको एक महत्वपूर्ण कृति हो। उपन्यासमा अस्तित्वाद र सङ्गतिवाद धेरै देखिएको छ। प्रायः सबै पात्रले विसङ्गत जीवन भोगेको र समाज र जीवनका सम्पूर्ण विसङ्गत पक्षको सही विश्लेषण भएको छ तर अस्तित्व खोज्ने कट्टेल सरको आजको महँगी जमानामा कुनै अस्तित्व नरहेको देखाइएको छ जुन कुराले हाम्रो मुटु नै छुन जान्छ। कर्मचारीतन्त्रमा देखिने कामचोर प्रवृत्ति, चाकडी र चाप्लुसी गर्ने उच्च ओहदाका व्यक्तिले आफ्नो खुशामद गराउने र चाप्लुसी गर्नेले मात्र प्रमोसन वा सुविधा पाउने, अभाव, छटपटी, मानसिक कुण्ठा, यौनशोषण, जालझेल जस्ता पक्ष उपन्यासमा चित्रित छन्। उपन्यास विधातात्विक आधारमा सफल देखिन्छ। उपन्यासका लागि चाहिने आवश्यक तत्व उपन्यासमा पाइन्छन्।

प्रवृत्तिका आधारमा पनि ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यास सफल देखिन्छ। वि.सं. २०४६ भन्दा अगाडि भ्रष्टाचार, दुराचार, चाकडी, चाप्लुसी, नातावाद र कृपावाद व्याप्त थियो। धनी मानिस झनझन धनी हुन र गरीबलाई शोषण गर्ने परम्परा थियो र हाल पनि थोरबहुत रहेको छ। जसको चित्रण सन्दर्भ उपन्यासमा ठाउँ-ठाउँमा गरिएको छ। समाजमा जसरी कमाए पनि धेरै पैसा हुनेको इज्जत, मान, सम्मान बढी हुने कुरा संकेत गरेकाले उपन्यासमा आलोचनात्मक यथार्थवादको अंश पाइन्छ। हाम्रो जीवन र समाजमा भएका विकृतिलाई हटाई सुन्दर, स्वस्थ जीवन र समाजको निर्माण गर्न सबैले उत्तिकै रूपमा आफ्नो स्थानबाट भूमिका निर्वाह गर्नुपर्छ भन्ने यथार्थवादी जीवनदर्शन ‘कट्टेल सरको चोटपटक’ उपन्यासमा पाइन्छ। त्यस्तै प्रकृतवादको पनि प्रयोग पाइन्छ भने मनोविज्ञानको पनि प्रयोग भेटिन्छ।

## ७.२ निष्कर्ष

ध्रुवचन्द्र गौतमको प्रस्तुत उपन्यासमा समाजमा भएको भेदभाव, अभाव, गरिबी, विवशता, विकृति, अस्तित्ववादी र विसङ्गतिमाथि उनको दृष्टि पर्न गएको छ। वाक्यमा लयात्मकता, आलङ्कारिता पाइए पनि उखान र टुक्काको भने थोरै प्रयोग भएको छ। उनी नेपाली साहित्य जगतमा आख्यान पुरूषको रूपमा पनि देखिएका छन्।

सहरिया परिवेशमा जीवन विताउँदा आइपर्ने समस्या, प्रगतिशिलता आदि कुरालाई पनि उपन्यासमा देखाइएका छन् भने समाजका विकृति र विसङ्गतिहरूलाई विरुत्साहित गरी स्वस्थ समाजको जालझेल गर्ने र झुठो सान देखाउने मानिस बीचमा सोझा साझाले पनि बाँच्न पाउनुपर्छ भन्ने चाहना राख्छन्। अस्तित्ववादी, विसङ्गतिवाद चिन्तन लिएर औपन्यासिक यात्रा थालेका गौतम विभिन्न नयाँ-नयाँ प्रविधि र प्रयोगका माध्यमबाट नेपाली उपन्यासलाई विश्व उपन्यास जगतसँग प्रतिस्पर्धा गर्न सक्षम उपन्यास दिन सफल रहेका छन्।

अन्तमा, ध्रुवचन्द्र गौतमको लामो औपन्यासिक यात्रामा सिर्जित दुई दर्जन उपन्यासमा देखिएका प्रवृत्तिलाई केलाउँदा विसंगतिवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद, प्रयोगवाद जस्ता प्रवृत्ति भेटिन्छन्। यसमध्ये 'कट्टेल सरको चोटपटक' उपन्यासमा विसङ्गतिवादी प्रवृत्ति धेरै पाइन्छ। नेपालको सरकारी क्षेत्र राजनीति र प्रशासनमा स्कुल, कलेज, शिक्षक आदि र वर्गमा चाकडी, चाप्लुसी, अनियमितता जस्ता कुराहरू छन्। यसलाई औल्याउने आँट खास कसैमा नरहेको तत्कालिन समयको प्रस्तुती गरिएको छ। यिनै विकृतिहरूलाई देखाउने काम यस उपन्यासमा भएको छ।

## सन्दर्भग्रन्थ सूची:-

१. डा. तारानाथ शर्मा (२०३९) नेपाली साहित्यको इतिहास, काठमाण्डौ : संकल्प प्रकाशन
२. ध्रुवचन्द्र गौतम (२०३७) 'कट्टेल सरको चोटपटक' पुलचौक, काठमाण्डौ : साझा प्रकाशन
३. कृष्णचन्द्र सिंह प्रधान (२०४३) 'नेपाली उपन्यास र उपन्यासकारहरू' काठमाण्डौ ललितपुर - साझा प्रकाशन
४. पौड्याल कृष्ण विलास:- (२०६४) 'नेपाली आख्यान र नाटक काठमाण्डौ' - नविन प्रकाशन
५. (२०६४) 'नेपाली कथा र उपन्यास' काठमाण्डौ :- आशिष बुक्स हाउस प्रा.लि.
६. ईश्वरीप्रसाद गैरे:- (२०६१) 'आधुनिक नेपाली कथा र उपन्यास' - कीर्तिपुर काठमाण्डौ : क्षितिज प्रकाशन
७. प्रा. भोजराज ढुङ्गेल र दुर्गाप्रसाद दाहाल:- (२०६६) 'नेपाली कथा र उपन्यास' - भोटाहिटी काठमाण्डौ : एम के पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रिब्युटर्स
८. उमा कुमारी घिमिरे:- (२०६६) 'एक शहर एक कोठा उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन' अप्रकाशित स्नाकोत्तर शोधपत्र जनकपुर रा.रा.ब. क्याम्पस
९. उपाध्याय केशवप्रसाद (२०४८) पूर्वोत्तर साहित्य सिद्धान्त, दो. स. काठमाण्डौ : साझा प्रकाशन।
१०. न्यौपाने श्रीधर (२०५७) अग्निदत्त + अग्निदत्त उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन अप्रकाशित स्नाकोत्तर शोधपत्र, पोखरा, पृथ्वीनारायण क्याम्पस।
११. न्यौपाने टड्कप्रसाद (२०५०) साहित्यको रूपरेखा दो.स. काठमाण्डौ : प्रकाशन।
१२. त्रिपाठी वासुदेव (२०५०) पाश्चात्य समालोचनाको सैद्धान्तिक परम्परा भाग -१ ते.स. काठमाण्डौ : प्रकाशन
१३. न्यौपाने डा. नेत्रप्रसाद, नारायण प्रसाद शर्मा, गैरे, नेपाली कथा र उपन्यास, आशिष बुक्स हाउस प्रा.लि. प्रकाशन

१४. पराजुली पुस्कर (२०६६) घुर्मी उपन्यासको कृतिपरक अध्ययन अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र नेपाली केन्द्रीय शिक्षण विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय।
१५. पोखरेल, बालकृष्ण र अन्य (२०४०) नेपाली बृहत शब्दकोष, काठमाण्डौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान।
१६. पौडेल, खुमनारायण (२०६०), आख्यानपुरुष ध्रुवचन्द्र गौतम, चितवन : चितवन वाङ्मय प्रतिष्ठान
१७. प्रधान, कृष्णचन्द्र सिंह ध्रुवचन्द्र गौतमको उपन्यासकारिता, गरिमा (पूर्णाङ्क २३४) पृष्ठ ३०-३५
१८. प्रधान, प्रतापचन्द्र (२०४०), नेपाली उपन्याय : परम्परा र पृष्ठभूमि, दार्जीलिङ् दीपा प्रकाशन
१९. बराल, ऋषिराज (२०६३), उपन्यासको सौन्दर्यशास्त्र दो.सं. ललितपुर : साझा प्रकाशन
२०. यादव, योगेन्द्रप्रसाद, भीमनारायण रेग्मी (२०५८), भाषा विज्ञान, काठमाण्डौं : न्यू हिरा बुक्स
२१. लुईटेल खगेन्द्रप्रसाद, नेपाली साहित्यमा ध्रुवचन्द्र गौतमको योगदान गरिमा, (पूर्णाङ्क २३४) पृ।
२२. लुईटेल लीला, ध्रुवचन्द्र गौतमको औपन्यासिक शिल्प गरिमा (पूर्णाङ्क २१०) पृष्ठ ८६-९१
२३. शर्मा मोहनराज, उपन्यासकार डा. ध्रुवचन्द्र गौतम समकालीन साहित्य (पूर्णाङ्क ४७)

परिशिष्ट -०१



ध्रुवचन्द्र गौतम